

नाम	:	राम लोचन ठाकुर
जन्म भूमि	:	ग्रा०+पो० : बाबूपाली (पाली मोहन), खजौली,
		मधुबनी-८४७२२८ (मिथिला)
तत्काल	:	चिराग अपार्टमेण्ट, फेज - २, त्रितल
		४, इटलगाचा रोड, कोलकाता - ७०० ०२८
मौलिक रचना	:	इतिहासहंता (काव्य, १९७७)
		बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१)
		मैथिली लोककथा (१९८३)
		माटि-पानिक गीत (काव्य, १९८५)
		देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (काव्य, १९८६)
		अपूर्वा (काव्य, १९९६)
		लाख प्रश्न अनुत्तरित (काव्य, २००३)
		स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण, २००४)
		आंखि मुनने : आंखि खोलने (संस्मरण, २००५)
अनुवाद	:	प्रतिध्वनि (काव्य, १९८२)
		जादूगर (नाटक, १९८२)
		फांस (नाटक, १९९७)
		जा सकै छी, किन्तु किए जाउ (काव्य, १९९९)
		('भाषा भारती सम्मान' सँ सम्मानित)
		रिहर्सल (नाटक, २००४)
		चारि पहर (नाटक, मंचित/अप्रकाशित)
		किसुनजी : विशुनजी (नाटक, मंचित/अप्रकाशित)
अनुवाद सहयोग	:	मैथिली कविता (१९९९)
संपादन	:	आजुक कविता (काव्य, १९८४)
संग-संपादन	:	कविपति विद्यापति मतिमान (२०००)
पत्र-पत्रिका	:	सुल्फा (हस्त लिखित पत्रिका)
		रंगमंच (नाट्य-मंच विषयक पत्रिका)
		अग्निपत्र (मैथिली युवालेखन संकलन)
		मैथिली दर्शन

आंखि मुनने आंखि खोलने

आंखि
मुनने
आंखि खोलने

आंखि मुनने : आंखि खोलने

रामलोचन ठाकुर

अरुणोदय प्रकाशन
बाबूपाली / कलकत्ता

प्रथम प्रकाश : यात्री स्मृति दिवस, १४१२ (५ नवम्बर, २००५)

मूल्य : एक सए टाका

मुद्रक :
जेनिथ इलेक्ट्रोग्राफिक्स
२, नीमू गोस्वामी लेन
कोलकाता - ७०० ००५
दूरभाष : २५४३-६५९१

AANKHI MUNANE : AANKHI KHOLANE

By Ram Lochan Thakur

Rs. 100/- only

आखर लेख

प्राय: तीन दशकक रचना। विभिन्न समय विभिन्न स्तंभक लेल लिखित तथा विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशित रचनाक संचयन थिक ई पोथी **आंखि मुनने : आंखि खोलने**। देसिल बयना, वैदेही, भारती-मंडन, मिथिला चेम्बरक सनेस, श्री मिथिला, कर्णामृत, अंतिका, रचना, गाम-घर, आदि समस्त पत्रिकाक प्रति हम आभारी छी जाहि मे ई रचना सभ प्रकाशित भेल अछि।

गतवर्ष मैथिली पत्रकारिता अपन शत-वर्षक यात्रा पूरा कएलक। एहि वर्ष आधुनिक मैथिली नाटक अपन शतवर्षक यात्रा पूर करए जा रहल अछि। मैथिलीक संवैधानिक स्वीकृतिक सेहो दोसर वर्ष पूर होमय जा रहल अछि। मैथिली पत्रकारिताक पथिकृत विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा ओ प० रामचन्द्र झा, आधुनिक नाटकक सूत्रधार प० जीवन झाक संगहि एहि यात्राक समस्त स्नेही-सहयोगी तथा संवैधानिक स्वीकृतिक पृष्ठभूमिक समस्त साधक-सेनानीक श्रद्धा स्मरणक संग 'नवतुरिए आबओ आगाँ'क उद्घोषक जनकवि यात्री स्मृति दिवसक अवसर पर प्रकाशित ई पोथी हुनकहि नामें समर्पित अछि।

—रामलोचन ठाकुर

रचना क्रम

क्रमांक	विषय	पृ०सं०
1.	लुइ एवं अन्यान्य पाद गण	07
2.	कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर	10
3.	कविपति विद्यापति	14
4.	मिथिला विभूति महाकवि डाक	19
5.	महाकवि गोविन्द दास	22
6.	जनकवि यात्री	27
7.	राजेश्वर बाबू	33
8.	प्रबोध बाबू	37
9.	राजा तेजल नगरिया	43
10.	भाइ दोषी	47
11.	एकटा चम्पाकली : एकटा विषधर	54
12.	पाठक जी	58
13.	आचार्य ब्रह्मानन्द सिंह झा	61
14.	कलकत्ता मैथिली रंगमंच आ श्रीकान्त मंडल	64
15.	प्रगतिवादी प्रयोगवादी रचनाधर्मिता आ सोमदेव	69
16.	परिचित विषय-वस्तुक कथा	74
17.	कलकत्ताक मैथिली नाट्यकार	77
18.	कलकत्ता मैथिली रंगमंचक महिला कलाकार	84
19.	समकालीन कथाक सौन्दर्य-बोध	87
20.	मैथिली लोक साहित्य : उत्पत्ति, उपयोगिता, अनुसंधान	92
21.	नाट्य-मंचक विकास मे पत्रिकाक योगदान	102
22.	भतरस लेल भाषा	114
23.	मिथिला नाटक आ मुन्शी रघुनन्दन दास	117
24.	दोषीक दोष	121

लुइ एवं अन्यान्य पाद गण

पाद गणक महिमा करिअ नित नैमित्तिक गान
जनिक प्रसादातेँ बनल मैथिलि हमर महान
मैथिलि हमर महान कण्ठ सँ काव्य धरा-धरि
चर्यापद जनु स्रोत गोमुखी पावन सुरसरि
कह लोचन कविराय तें मान्य मनीषी पाद
नत मस्तक मैथिल सदा तुअ पद पंकज पाद

मैथिलीक प्राचीन पोथी सभ जे आइधरि उपलब्ध भ सकल-ए ताइ मे 'चर्यापद' वा 'चर्यागीत' सभ सँ प्राचीन मानल जाइछ। एहि मे कुल पचास टा गीत छल जाइ मे २४, २५ आ ४८ म गीत पन्ना हेरा जेबाक कारणे प्राप्त नहि भ सकल। उपलब्ध संएतालिसटा गीतक रचयिता चौबीस गोट पाद लोकनि छथि, जं कान्ह ओ कान्हु पाद एके व्यक्ति होथि, कृष्णाचार्य पाद ओ कृष्णपाद अभिन्न होथि। जं भिन्न होथि त निश्चिते ई संख्या चौबीसक बदला छब्बिस होएत। पाद लोकनिक नाम ओ पद निम्न प्रकारें अइ :-

	नाम	कुल पाद
१.	लुइ पाद	२
२.	सरह पाद	४
३.	कुक्करी पाद	१
४.	बिरुव पाद	१
५.	गुण्डरी पाद	१
६.	चोटिल्ल पाद	१
७.	भुसुक (कु) पाद	८
८.	कान्हु पाद	५
९.	कान्ह पाद	१
१०.	कम्बलाम्बर पाद	१
११.	कृष्णाचार्य पाद	३
१२.	कृष्ण पाद	२
१३.	डोम्बी पाद	१
१४.	शान्ति पाद	१

१५. महीधर पाद १
१६. वीणा पाद १
१७. कृष्ण बज्र पाद १
१८. शवर पाद २
१९. आर्यदेव पाद १
२०. ढण-ढण पाद १
२१. दोरिक पाद १
२२. भादे पाद १
२३. तारक पाद १
२४. कोंकण पाद १
२५. जयनन्दी पाद १
२६. धाम पाद १

चर्या पदक रचनाकालक सम्बन्ध मे एखनोधरि निस्तुकी नहि भ पाओल-ए परन्च विभिन्न विद्वान लोकनि जे एहिपर खोज-शोध केलनिहें हुनका लोकनिक अनुसार दसम शताब्दीक लगभग एकर रचना भेल होएत। स्वभावतः रचनाकार लोकनिक काल सेहो ताइ सं निर्धारित होइए। एहि समस्त पाद लोकनि मे लुइ पाद सभ सं पहिने भेलाह से शोधकर्त्ता लोकनिक मत छनि।

एहि मे संग्रहित समस्त पद मे बौद्ध धर्म ओ दर्शनक स्पष्ट चित्र अइ। कहबाक प्रयोजन नहि जे सभ पाद लोकनि बौद्ध धर्मावलम्बी छलाह। परञ्च तंत्रक प्रभाव सेहो स्पष्ट परिलक्षित होइछ जे तत्कालीन मिथिला मे तंत्रक प्रभावक संगहि बौद्ध धर्म पर सेहो तंत्रक प्रभाव कें रेखांकित करैछ।

चर्यागीत पर एखनोधरि विवाद अहिए जे वास्तव मे एकर उत्तराधिकारी के थिक ? बंगाली लोकनि एकरा अपन आदि ग्रंथ मानैत छथि आ एहिपर बड़ बेसी कार्य भेलए। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्‌भट विद्वान लोकनि एहिपर बड़ बेसी श्रम केने छथि आ एहि ग्रंथ कें बंगला प्रमाणित करबाक आधार तर्क जुटओने छथि। एकर तुलना मे मैथिल विद्वान लोकनि लज्जास्पद भावें पछुआएल रहलाहए। आ निर्विवाद एकोटा स्तरीय प्रामाणिक पोथी आइधरि प्रकाशित नहि भ सकल-ए। परञ्च से होइतहुं एहि गीत सभक भाषा, वर्ण विन्यासओ शब्द शिल्प, विषय वस्तु तथा एकर दीर्घ परम्परा जे पदावली कालधरि अक्षुण रहल, एकरा मैथिलीक आदि ग्रंथ होएबाक अकाट्य प्रमाण थिक।

एहि पोथीक महत्ताए एकर रचनाकार लोकनिक महत्ताक परिचय थिक। जाइ समय मे संस्कृत भाषाक एक छत्र राज छलैक, भनहिं ई लोक भाषा कहियो ने रहल हो, विद्वानक भाषा छल, राजकीय भाषा छल, ताइ युग मे लोक भाषा मे काव्य रचनाक उहि वा चेतना साधारण बात किन्हुँ ने कहल जा सकैछ। तें एहि चेतनाक अग्रदूत लुइ पादं मैथिलीक लेल प्रातः स्मरणीय छथि, मैथिली साहित्य मे अमर छथि आ नव्य भारतीय भाषाक आदि पुरुष छथि। ई हिनके कृतित्व छनि जे हिनक परवर्ती अन्यान्य पाद लोकनि लोकभाषा मैथिली मे काव्य सिरजनक प्रेरणा पओलनि तथा आगा चलि कें विभिन्न भारतीय भाषाक रचनाकार लोकनि कें अपन मातृभाषा मे रचनाक प्रेरणा ओ दिशानिर्देश भेटलनि।

ताहि युग मे लोकभाषा मे रचना करब सहज नहि रहैक। रचनाकार के पर्याप्त व्यंग-बाधाक सामना करय पड़नि। हमरा लोकनि जनैत छी जे स्वयं कविपति विद्यापति के – जे हिनका लोकनि सं लगभग चारि पाँच सय बर्ख पश्चात भेलाहए-लोकभाषा मे रचना करबाक कारणे विद्वत मंडली द्वारा मखौल उड़ाओल जाइन। तेहना स्थिति मे पाद लोकनिक संग जे एहन बात नहि भेल होयत से मानैबला किन्नहुँ नहि। परञ्च एकक बाद एक पादक आविर्भाव आ तदुपरान्त अविच्छिन्न मैथिली साहित्यक परम्परा के देखैत हिनका लोकनिक आत्मबलक, लोक चेतना आ वास्तव बुद्धिक परिचय सहजहि प्राप्त होइए।

ओना त ई काज बहुत पहिनहि हेबाक चाहैत छलै, परञ्च से जे हेतु नहि भेलैक तें आइ एकर बड़ बेसी प्रयोजन छइ जे हिनका लोकनिक कृति के प्रकाशित क मैथिली पाठक कें सहज उपलब्ध कराओल जाइक। कुनू जातिक, ओकर भाषा संस्कृतिक विकासक लेल ई परम आवश्यक छइ जे ओकर जड़ि मजबूत होइक आ ताइ सं ओकर सम्पर्क अविच्छिन्न होइक। जड़ि सं कटल रहने वा बिनु जड़िक कुनू जाति, ओकर भाषा-संस्कृतिक दीर्घ जीवन संदिग्ध रहैत छैक – ताइ ठाम विकासक बाते की ? मैथिल जाति, ओकर भाषा-संस्कृतिक जड़ि माटि मे छैक, जीवंत आ सशक्त छैक ताइ मे संदेह नहि परञ्च अधुनातन ओ एहि सं कटल जकाँ अइ। सम्पर्कक कंथे की जखन कि ओ एहि सं नीक जकाँ परिचितो नहि अइ। तें हमरा लोकनि के आर बिलम्ब नहि क शीघ्र एकरा आर सशक्त करबा लेल लागि जेबाक अइ अन्यथा अस्तित्वो पर संकट आबि सकैछ – विकासक बाते की ?

(१९८२)



कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

ज्योतिरीश्वरीक ज्योति सँ ज्योतित अछि आकाश
मैथिलीक साहित्य कें साक्षी अछि इतिहास
साक्षी अछि इतिहास प्रथम एहि नाट्यकार सँ
सकल पूर्व भारतक प्रथम एहि गद्यकार सँ
कह लोचन कविराय ज्योति वर्णरत्नाकरक
रहत सदा अम्लान नाम कवि ज्योतिरीश्वरक

कविपति विद्यापति कें जं मैथिली भाषा-साहित्यक पिता मानल जाय त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर कें बिनु संकोचक जनकक स्थान पर प्रतिष्ठित कएल जा सकैए। दुर्भाग्यक बात जे एहन अप्रतीम पदक अधिकारी, मिथिला-विभूतिवर ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि कें बड़ बिलम्ब सं भेटल, आ आइयो धरि पूर्ण परिचय नहिञे प्राप्त भ सकल। एक दिस जं ई 'मिथिला-मैथिलीक' हेतु दुर्भाग्यक विषय थिक त दोसर दिस मैथिल जातिक निमित्त घोर लज्यास्पद एवं पतनोन्मुखी प्रवृतिक परिचायक। एहिठाम ई कहनाइ अनर्गल नहि हएत जे प्रतिबर्ख मैथिली मे दर्जनों 'विद्वान' पी०एचडी०, डि० लिट प्राप्त करैत छथि परञ्च किनको ध्यान एहि बा एहने कतेको विभूति - जनिक परिचय एखनो अज्ञात अइ, दिस नहि गेलनि। अथवा एना कही जे विद्वता नहि मात्र उपाधिक भूखल, मिथिला-मैथिलीक नहि मात्र अपन स्वार्थ पूर्ति लेल आकुल तथाकथित विद्वान लोकनि एहि मे अपन अमूल्य समय बेरबाद केनाइ उचित नहि बूझि-विद्यापति, जनिका पर बड़ बेसी काज भेलए - भनहि ओ सभ फालतूए किएक नहि हो - तिनका पर शोध केनाइ श्रेयस्कर बुझैत छथि, कारण विभिन्न पोथी सं दस-बीस लाइन नकल क लेने सहजहि पैघ पोथा तैयार भ जाइत छनि आ उपाधि लेल ताइ सं बेसी चाहबे की करी !

धूर्त समागम, पंचसायक तथा रंग-शेखरक रचियता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ परिचित रहितहुं मैथिली जगत मे अपरिचिते छलाह। १९४० मे जखन म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल राज लाइब्रेरी सं प्राप्त हिनक मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयासें हुनकहि आ बबुआजी मिश्रक सम्पादन मे एशिएटिक सोसाइटी सं भेल - तकर बादे अपन विभूति कें हमरा लोकनि चीन्हि सकलौं।

'धूर्त समागम'क अनुसार हिनक समय तेरहम शताब्दी छल तथा ई रामेश्वरक पौत्र ओ धीरेश्वरक पुत्र छलाह। स्व० ईशनाथ बाबूक अनुसार ई बाबू पाली (पाली मोहन) गामक छलाह। संभवतः ईशनाथ बाबूक एहि मान्यताक आधार सेहो उक्त पोथीए हो जाइ मे श्रीमत्पल्लि जन्मभूमिना...... 'क चर्च कवि शेखर स्वयं केने छथि। ओना नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर कविपति विद्यापतिक पितामहक पितियौत छलाह। वास्तविकता जे हो, परञ्च ईधरि सत्य जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कथे की - वर्ण रत्नाकरक एगो नीक संस्करणो आइधरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विद्वता कोनो एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अधिकार छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सम्बन्ध मे कहैत छथि -

अस्ति प्रत्यहमर्थिताग्रहण:
ल्कृप्तैक दीक्षा गुरु:
श्रीकण्ठार्च्चनतत्परो भुवि
चतुःषष्टेः कलांना निधिः।
संगीतागमसत्प्रमेय रचना
चातुर्य चूड़ामणिः
ख्यातः श्रीकविशेखरार्पितपदः
श्री ज्योतिरीशः कविः।।

एही पोथीक शेष ओ निम्न श्लोक सं कएने छथि -

यावच्चन्द्र कला किरीट ह्रदये
शैलात्मजा तिष्ठति
यावद् वक्षसि माधवस्य सकला
सानन्दमादिश्यति।
यावत् कामकला विवर्त चटुला
क्षौणीतले सर्व्वदा
तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना
तावत्पदे दीव्यताम् ।।

धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि -

तस्योदण्ड-भुजप्रताप दहन
ज्वाला निरस्तापदे
राज्ञः सर्वगुणानुवाद पदवी
विद्योतनाचार्य्यकः।
यो धीरेश्वर वंश मौलितिलको
दातावदातोशयम्,
तस्य श्री कविशेखरस्य कविता
सच्चित्तमालम्बते।।

तद्नेन सकल संगीत विशेष विद्योतनाभिनव भरतेन पुरमथन-पदारविन्द द्वन्द्व-वन्दारुकरपल्लवेन निखिल भाषोपभाषाशुभं-भावुक सरस्वती कण्ठाभरणेन अनवरतसोम रसास्वादकशायकण्ठ कन्दलीनरी नृत्यमान मीमांसा महोत्सवेन रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्र भवत: पवित्र कीर्ते धीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासन श्रेणीशिखर भ्रामत्पल्लि (श्रीमत्पल्लि - Nepal M.S.) जन्मभूमिना कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहल विरचितं धूर्त्त समागम नाम नाटकम्, प्रहसनअभिनेतुमादिष्टोऽस्मि।

एवं प्रकारे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तित्व आकृतित्वक परिचय हमरा लोकनि कें हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ।

वर्णरत्नाकर: मैथिलीक आदि गद्य-ग्रंथ हेबाक गौरव जाइ पोथी कें प्राप्त छैक से थिक वर्णरत्नाकर - कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति जे आइधरि हमरा लोकनि कें प्राप्त भ सकलए। ओना बहुतो विद्वान हिनक 'धूर्त्त समागम' कें सेहो मैथिलीक मानि एकरा मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छति, परञ्च एहि पर मतैक्य नहि भ सकलए।

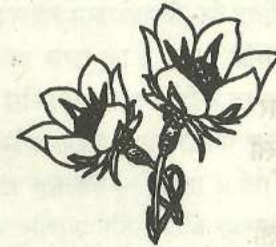
वर्ण-रत्नाकर मात्र मैथिलिएक आदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव्य भारतीय भाषाक आदि ग्रन्थ थिक कारण आइ धरि कुनू भाषा मे एहि सं पहिलुक वा एकर सम सामयिक गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकलए।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू एकरा 'वर्णन रत्नाकर' कहने छथि आ एही सं एकर महत्ता ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार एहि पोथीक उद्देश्य-भावी कवि ओ कत्थक लोकनिक निमित्त एकँटा पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ बनाएव छलनि, यथा, यदि नायकक वर्णन करबाक हो तं कोन-कोन विषयक उल्लेख करब उचित, यदि नायिकाक वर्णन करबाक हो तं की सभ निरूपण करब आवश्यक।

वर्ण-रत्नाकर सात कल्लोल मे विभाजित अइ। यथा - (१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) स्थान वर्णन (४) ऋतु वर्णन (५) प्रयानक वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७) श्मशान वर्णन। अइ सात कल्लोलक प्रधान वर्णनक संगहि कतेको अप्रधान वर्णन अइ। एवम् प्रकारें ई वर्णनक हेतु सरिपहुं रत्नाकरे थिक।

वर्ण-रत्नाकर पढ़ला सन्ता दू गोट बात स्पष्ट परिलक्षित होइए। पहिल त ई जे एकर भाषा शिल्प तथा विषय वस्तु एहि बातक अकाट्य प्रमाण थिक जे मैथिली भाषा साहित्यक शुभारम्भ एहि सं कम सं कम ५-६ सए बर्ख पहिनहि भेल होएत। दोसर ई जे कवि शेखरक अन्यान्यो मैथिली रचना अबस्से होएत जे आइधरि समुचित प्रयासक अभाव मे प्राप्त नहि भ सकलए। कहबाक प्रयोजन नहि जे इहो पोथीक प्रकाशनक लेल हमरा लोकनि बंगाली विद्वानक आभरी छी -जेना कि 'चर्यापद' आ 'विद्यापति पदावली'क निमित्त। इहो अचरजक विषय थिक जे जकर पूर्वज भारतीय दर्शन साहित्य-संस्कृतिक आकाश मे सूर्य-चन्द्रादि नक्षत्र सन आलोकित हो, से मैथिल जाति आइ भगजोगनी सं गेल-गुजरल हो। ओना हमर विश्वास अइ जे सूर्यक सन्तान भगजोगनी नहि भ सकैछ, ओहो ज्वलंत नक्षत्रे होइछ। खगता छैक ओकर अपन शक्ति के चिन्हबाक, अपन आत्माभिमान कें जगेबाक आ से भेने निश्चिते मिथिला-मैथिलीक पताका फेर विश्वाकाश मे फहराएत।

(१९८२)



कविपति विद्यापति

विद्यापति कविपति कहल कविवर गोविन्ददास
बाँकी किछु बहुतो कहल साक्षी अछि इतिहास
साक्षी अछि इतिहास लोक भाषा उत्थानक
प्रथम पुरूष विद्यापति नाम पश्चाते आनक
कह लोचन कविराय मातृभाषा हित परिचित
पावन पदावलिक सुरसरि सिरजल विद्यापति

आइ सं लगभग साढ़े छओ सए बर्ख पूर्व मधुबनी जिलाक बिसफी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर ओ पितामहक नाम जयदत्त ठाकुर रहनि। हिनका नेना में दुलार सं खेलन कहल जाइन, जकर कतेको ठाम चर्च अइ।

विद्यापति नेने सं संस्कारी छलाह आ कनिञे अवस्था मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त केलनि। काव्य रचनाक प्रवृत्ति सेहो हिनका नेनहि सं छल जे वयसक संगहि बढ़ैत आ सशक्त होइत गेल। हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल - जकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अइ। हिनक रचित पोथी जे आइधरि उपलब्ध भ सकल -ए निम्न अइ:

(१) कीर्तिलता
(२) भू-परिक्रमा
(३) कीर्ति पताका
(४) पुरुष परीक्षा
(५) शैव सर्वस्वसार
(६) गंगा वाक्यावली
(७) विभाग सार
(८) दान वाक्यावली
(९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
(१०) व्यालि भक्ति तरंगिणी
(११) विद्यापति पदावली
(१२) मणि मंजरी
(१३) गोरक्ष विजय

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहलए आ विद्यापति सेहो संस्कृतेक विद्वान छलाह एवं परम्परानुरुपे संस्कृत मे लिखनाइ आरम्भ केलनि। परञ्च जेना कि कवि युगद्रष्टा ओ स्रष्टा कहल गेलए - विद्यापति एकर प्रमाण छलाह। संस्कृत सं अबहट्ट आ अबहट्ट सं मैथिली मे रचना कए ओ कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक परम्परा कें आगू बढ़ौलनि। असल मे मैथिलीक रचना हुनक लोकप्रियता ओ लोक परिचितिक आधार भेल। हुनक कोमलकान्त पदावली शिक्षित-अशिक्षित दुनू श्रेणी मे समान रुपे प्रवेश कएलक आ आद्रित भेल। जनभाषा कें साहित्यक भाषाक मर्यादा दिऔनाइ आ साहित्य कें पंडित वर्ग सं जनसामान्य धरि ल गेनाइ हुनकेसन प्रतिभा सं संभव भेल जकर उदाहरण भारतीय बाडमय मे अप्रीतम अइ।

विद्यापति जाइ युग मे भेल छलाह ताइ युग मे देशपर दुर्दिनक मेघ मड़राइत छल। मुसलमानी आक्रमण सं छोट-पैघ कतेको राज-रजबाड़ा ध्वस्त भ चुकल छल आ तें मिथिलादेशक रक्षार्थ-एकर गौरव-शाली साहित्य-संस्कृतिक रक्षार्थ ओ लेखनी धयने छलाह। बाहरी शत्रु सं लड़ैक लेल तरूआरिक प्रयोजन छलैक आ तें कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकाक सिरजन ओ कयलनि। विभासागर द्वारा सम्पतिक उचित भाग कए आपसी सहयोगक आधार सशक्त केनाइ हुनक उद्देश्य छल कारण आपसी मतभेद शत्रुक प्रवेशपथ उन्मुक्त क सकैत छल। धर्म वर्तमानो काल धरि एहन तत्व मानल जाइए जकरा नाम पर जातीय-एकता ओ संगठन सहजतर होइत छैक आ बाहरी आक्रमण सं देश के रक्षा लेल ई संगठन आवश्यक छलैक - तें हेतुञे हुनका भक्ति रसक गीत लिखय पड़लनि।

कविपति विद्यापति महान समाजशास्त्री, ओ दार्शनिक छलाह, महान राजनीतिज्ञ संधि-विग्रहिक, युगद्रष्टा आ स्रष्टा आ तें महान कवि छलाह। ओना बेर पड़ने ओ तरुआरियो पकड़ने छथि, सन्धि वार्तालय लोदीक दरबार तक पहुँछल छथि - परञ्च सभ होइतहु ओ मूलत: कवि छलाह आ लेखनीए हुनक हथियार छल। एकर जाइ ठाम जेहन प्रयोग अपेक्षित बुझलनि - तहिना प्रयोग केलनि। मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह। हुनक पश्चात् ओ हुनके सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा मे काव्य रचना आरम्भ कएलनि। ब्रजभाषा मे सूर, अवधी मे तुलसीदास आ राजस्थानी मे मीरासन प्रतिभाक पथ निर्देशक सरिपहुँ विद्यापतिए भेलाह।

कविपति विद्यापति कें वीर कवि, भक्त कवि, शृंगारिक कवि आदि आख्या देल जाइछ आ सरिपहुँ अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किन्तु ओ मात्र

वीरकवि वा भक्तकवि वा शृंगारिक कवि नहि अपितु एके संग सभ छलाह जे विद्यापतिए सन प्रतिभा सं संभव छल। परञ्च सभ रहितहुँ मूलतः ओ महान प्रगतिशील कवि छलाह जे मात्र लोकभाषा मे रचनाएटा नहि केलनि अपितु लोकक बात लिखलनि। सर्वसाधारणक व्यथा-कथा, ओकर इच्छा-आकांक्षा कें ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि। एकदिस सामाजिक दुखदैन्यक सजीव चित्रण कए जं लोकक ध्यान एहि दिस आकृष्ट कएलनि त संगहि एहि सं मुक्तिक निमित्त दिशा संकेत सेहो कएलनि। 'केहन केलहुँ भोला गरिबक दीन, एकटा जे लोटा छनि बेटा छनि तीन' एवं 'नित उठि गौरा शिव सं मनावथि, करू ने कठा दस खेत' मे जं पहिल गरीबीक चित्रण अइ त दोसर श्रमक महत्ताक परिचायक। एहिना 'पिया मोर बालक हम तरुणी' मे सामाजिक कुरीति, अनमेल विवाह पर तिखगर व्यंग कएल गेलए। अपन एहीसभ विशेषताक कारणे कविपतिक गीत सभ ओतेक लोकप्रिय भेल जे एतेक दिन बीतलाक पश्चातो अपन लोकप्रियता कें मात्र अक्षुण नहि रखने अइ, अपितु ताइ मे पूर्ण वृद्धि करबा मे पूर्ण-रूपेण सफल रहलए। सात-सात सए बर्ख धरि लोककंठ मे अविकल प्रवाहित होइवला काव्य विश्वसाहित्य मे भरिसक एकर अतिरिक्त आन नहि भेटि सकैछ। ओतबे नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अतिक्रमण करैत बंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलैक आ सभ ठामक लोक एकरा अपन मानलनि। ई कविपतिक लेखनीक जादू छल जे पदावलीक परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत मे चलि पड़ल जकर शेष कड़ीक रूप मे रबीन्द्र नाथ ठाकुर विरचित भानुसिंहरे पदावली थिक। ई हिनके मधुर गीतक प्रभाव छल जे मैथिली सं अनभिज्ञ होइतहुँ कवि लोकनि मैथिली मे काव्य-रचनाक प्रयास केलनि आ मूलरूप सं भिन्न होएबाक कारणे ब्रजबुलीक नामे पदावली साहित्यक विशेष भाषाक रूप मे परिचिति पअलोक।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक कृष्ण आ उगना अलौकिक नहि लौकिक छथि -लोकप्रतिनिधि छथि। राधाकृष्णक प्रेमलीलाक आधार मानवीय थिक जाइ मे सत्य शिव आ सुन्दरक सन्निवेश अइ। विद्यापति निर्विवाद सौन्दर्योपाशक छलाह। कारण सुन्दरताए सत्य थिक आ सत्ये शिव थिक। तहिना विद्यापतिक उगना साधारण चाकर थिक, सेवक थिक आ सेवा धर्म मानवक सबसं पैघ धर्म थिक - इश्वरीय थिक - तें उगना कें विद्यापति महादेव बना दैत छथि। एकरा उदारवादी वा वास्तवतावादी भनहिं जे कोनो दृष्टिकोणक नामे अविहित कएल जाय परञ्च ई थिक कविपतिक दृष्टि हुनक अपन मौलिक दृष्टि। ओना धार्मिक दृष्टिकोण रखनिहार समालोचकगण

उगना कें देवाधिदेव महादेव मानैछ जे विद्यापतिक भक्ति भाव सं प्रभावित भए हुनक सान्निध्य लेल चाकर बनि आएल छल। जं एहूँ दृष्टिए देखल जाए त भारतीय साधक श्रेणी मे विद्यापतिक स्थान सबसं उपर अइ। रामकृष्ण परमहंस कें कालीक दर्शन मात्र भेल छलनि त ओ अवतारी मानल जाइत छथि, ताहिठाम महादेव जनिक चाकर होथि तनिकर कथे की ? ओ सरिपहुँ अतुलनीय छथि। किंवदन्ती अइ जे देहावसान काल मे स्वयं गंगा चारि कोस अगुआ कें अपन प्रिय सन्तान के कोरा मे उठा लेलनि। विश्वसाहित्य मे विद्यापतिक जोरी - से जे कोनो क्षेत्र मे भरिसके प्राप्त होएत।

कविपतिक रचना एकदिस जं हुनका सर्वसाधारण सं राजदरबारधरि आदर सम्मान देलकनि त दोसर दिस पंडित वर्ग द्वारा उपालंभ -उपहास सेहो। नव कविशेखर अभिनव जयदेव, कविकोकिल विद्यापति आदि उपाधि सं जे हिनका विभूषित कएल जाइछ ताइ मे सत्यतः कविपतिएटा एहन अइ जे हिनक प्रतिभाक सही मूल्यांकनक आधार पर देल गेल अछि हिनक परवर्ती कवि गोविन्ददास द्वारा। कविकोकिल त हिनक उपहास मात्र लेल तत्कालीन पंडित द्वारा कहल जाइन आ तहिना अभिनव जयदेव हिनक प्रतिभा कें छोट क अंकबाक षड़यंत्र थिक। ई निर्विवाद जे गीत गोविन्दक रचनाकार जयदेवक परम्परा कें आगू बढ़बैत एवं सही आ सशक्त धरातल दैत ई राधाकृष्णक गीत लिखलनि परञ्च ई ओतबे धरि सीमित नहि रहलाह। पहिनहि कहि चुकल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल आ ई निसन्देह जयदेव सँ बहुत आगाँ बाढ़ि चुकल छथि। राजदरबार मे रहितहुँ ई दरबारी नहि बनि एकलाह सदा लोक कवि रहलाह। ई दरबार सं प्रभावित नहि भेलाह अपितु दरबार हिनका सं प्रभावित भेल।

किछु दिन पूर्व मैथिली साहित्य मे एहन चर्च उठल छल जे साहित्य महिसक पीठ पर नहि जा सकैछ। परंच विद्यापतिक साहित्य महिसक पीठ पर खेत-खरिहान मे, गोसाउनिक सीरा लग, घर आङ्गन मे सर्वत्र-समान रूपें व्याप्त देखल जा सकैछ। जनभाषा मे जनगणक बात लिखबाक कारणें पंडित वर्गक उपहासक उत्तर स्वरूप कविपति कहने छलाह -

बाल चन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तें तइसन जाम्पओ अबहट्ठा

ई पंक्तिये कविपतिक आत्मबल ओ आत्माभिमानक परिचायक थिक ।

आइ कविपति विद्यापति मैथिलीक अपरनाम छथि, मैथिली संस्कृतिक अभिन्न अंग छथि। मिथिला मे कोनो शुभ कार्य हो हिनक गीतक बिनु नहि होइछ। केओ एहन मिथिला वासी स्त्री-पुरुष नहि होएताह जनिका हिनक गीतक दू आखर कंठस्थ नहि होए।

कविपतिक देहावसान लगभग १४५० मे भेल जाइ सम्बन्ध मे हिनक पंक्ति विख्यात अइ

विद्यापतिक देह अवसान
कार्तिक धवल त्रयोदशि जान।

(१९८२)



मिथिला विभूति महाकवि डाक

डाक वचन अमृत बनल बसल लोक मन प्राण
आङन घर खरिहान धरि पढुआ अपढ़ समान
पढुआ अपढ़ समान महाकवि डाकक आदर
जे कोनहु हो काज डाक वचनेक समादर
कह लोचन कविराय अनमोल रत्न मिथिलाक
रहत सदा इतिहास मे अमर नाम कवि डाक

मिथिलाक माटि जेहने उपजाउ अइ तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष कैं एकरे बल पर मिथिला कहियो तीन लोक मे विख्यात छल। एहिठाम एक सँ एक विभूतिक जन्म भेल अइ जे सरिपहुँ दोसर देशक हेतु इर्ष्याक विषय रहल। तैं आश्चर्य नञि जे कतेको विभूति कैं कालक्रमे बिसरा देल गेलए आ महाकवि डाक सेहो एहने विभूति मे सँ छथि। ओना इहो निर्विवाद जे जे कोनो जाति अपन विभूति कैं बिसरि जाइए ओकर अधः पतन अनिवार्य छैक आ वर्तमान मिथिला एकर ज्वलंत प्रमाण थिक।

ओना त महाकवि डाकक सम्बन्ध आइधरि कोनो प्रामाणिक शोध नहि भ सकलए परञ्च हिनक अपनहि रचना जे युगो सँ एक कंठ सँ दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहलए, हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्व नीक परिचय उपस्थित करैछ।

हिनक जन्मस्थान तथा समयक सम्बन्ध एखनो धरि निस्तुकी नहि भ पाओलए परञ्च कहल जाइछ जे वर्ण सँ ई यादव छलाह। एहि तथ्यक पूर्ति हिनक अपनहुँ पद सँ होइछ—जँ ओकरा हिनक सही रचना मानि लेल जाय-जेनाकि –कहि गेल डाक गोआर। एकर सत्यताक आधार इहो थिक जे वर्णवादी कुसंस्कार ग्रस्थ समाज ब्राह्मण-कर्णकायस्थ सँ इतर वर्णक एहि प्रतिभा के नञि स्वीकारि सकल आ इहो एगो कारण थिक जे एहन विराट प्रतिभा सम्पन्न विभूति के बिसरा देल गेल।

कारण भनहि जे हो परञ्च एतवाधरि सत्य जे एहन प्रतिभा मात्र मिथिलेटा मे नहि अन्यत्रो दुर्लभ प्राय अछि। महाकवि डाक मे बहुमुखी प्रतिभा छलनि। हुनक साहित्य प्रतिभाक ज्वलंत प्रमाण अइ हुनक ग्रंथ 'डाक बचनामृत' जे सरिपहुँ अमृत तुल्य थिक। ओना तैं ई पोथी सेहो अप्राप्य सन अइ आ तथाकथित मैथिलीक पोथी प्रकाशन संस्था जे लाखो टाका खर्च क कैं आलतू-फालतू पोथी छपैए—तकरा सभ

के एहन पोथी छपवाक प्रयोजने ने बुझाइ छइ, परञ्च मिथिलाक विशाल जनकंठ एखनो एकरा जोगओने धरि अबस्से अइ आ भविष्यो मे रहत से विश्वास अनायासे होइए।

महाकवि डाक मात्र कविए टा नहि छलाह, कृषि विज्ञान मे हिनक अतुलनीय पहुँच छलनि।

हिनक पद —

'थोड़ के जोतिह, अधिक महियबिह,
ऊँच क बन्हिह आरि।
जँ खेत तैयो ने उपजह,
डाक कैं पढ़िह गारि।।'

एखनो किसानक लेल पथ प्रदर्शनक काज करैछ। ई पद मात्र हिनक कृषि सम्बन्धी ज्ञानहिक नहि, अपितु अपना पर अटूट विश्वासक सेहो प्रमाण थिक।

एहिना —

'कुसि अमवस्या, चोठीचान,
आबहुँ बैसह घर किसान।
भारे बिया, बोझे धान,
आब कि रोपबह धान किसान।

धनरोपनीक उचित समयक सम्बन्ध मे प्रमाणिक मानल जाइछ आ प्राय: किसान लोकनि एकर पुनरावृति करैत सूनल जाइ छथि।

'साओन पछवा, भादव पुरिबा,
आसिन बह इशान।
कार्तिक कंता सिकियो ने डोलय,
कत'क रखबह धान।'
जँ पुरबा पुरबैया पाबए,
सुखले नदिया नाव बहाबए।

हिनक ज्योतिष ज्ञान गणनान अप्रतीम उदाहरण अइ।

महाकवि डाकक पद सभ जाइ ठाम सहज बोधगम्य अइ ताइ ठाम किछु पद सभ दृष्ट कूटक पर्याय मे सेहो अबैए, जेना कि कबीर दासक उनट बाँसी। एहि तरहक एक पद अइ-बड़दा मूते खेत दहाय, खसे खेत त बड़त पड़ाय।' कबीर दासक संग आरो समता छलनि हिनका मे। जेना कि कहल जाइए—ई पढ़ल-लिखल

नञि छलाह—कबीरदासक मसी कलम छुओनही सन। सत्य जे हो परंच ई त मानै पड़त जे पूर्वकाल मे सभक लेल पढ़बा-लिखबाक सुविधा नञि छलैक। परंच कबीरदास सँ फराक हिनक अधिकांश कविता सहज अइ, जनगणन इच्छा आकांक्षा दर्पण अइ। महाकवि डाक सरिपहुँ लोक कवि छलाह—भक्त कवि नहि शृंगारिक नहि एहन जे महाज्ञानी-पंडित छलाह डाक तनिक मृत्युक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे पोखरि मे डूबि अकाले कालक गाल मे चल गेलाह। ओना प्रतिभाक प्राय: अकाले मृत्यु होइत रहलैकए परंच एहू सम्बन्ध मे महाकवि अनजान छलाह से नञि। ओ स्पष्ट कहै छथि—ई जुनि बुझी डाक निर्बुद्धि, नाशक काल विनाशक बुद्धि।

आइ समय आबि गेलए जे हमरा लोकनि अपन एहन विभूति कैं ताकी जियाबी आ अपन जातीय मर्यादा के बढ़ावी।

(१९८२)



महाकवि गोविन्द दास

दासभाव भक्तिक सहज विभव विरल गोविन्द
पदावली सुरसरिक जे चिर नूतन अरविन्द
चिर-नूतन अरविन्द शिष्य-कविपतिक सनातन
गंध-रूप-रस-रंग नवल नित प्रेम पुरातन
कह लोचन कविराय विलक्षण विरल अर्थ विन्यास
अलंकार अनुपम छटा कविवर गोविन्द दास

मिथिला-विभूति महाकवि गोविन्द दासक जन्म मधुबनी जिलाक लोहना गाम मे कविपति विद्यापतिक देहावसानक लगभग सओ बर्ख पश्चात् भेल छल। हिनक पिताक नाम कृष्णदास झा छलनि। हिनक छोट भाइ रामदास झा सेहो विराट पंडित ओ नाट्यकार छलाह, जिनक लिखल 'आनन्द विजय नाटिका' उपलब्ध अइ।

कविपति विद्यापतिक पश्चात् विद्यापतिक (पदावली) परम्परा मे सभ सँ पैघ आ सशक्त कवि निर्विवाद रूपेँ गोविन्द दास केँ छोड़ि आन नहि छथि। हिनक लिखल पदक संख्या हजारक लगभग अइ। अपेक्षित शोध-खोजक अभाव मे हिनक अन्यान्य रचनाक पता आइधरि नहि चलि सकल-ए।

हिनक पद मुख्यत: राधा-कृष्ण विषयक रहितहुँ कविपति विद्यापतिए जकाँ शिव-शक्ति तथा अन्यान्य देवी-देवता सँ सेहो सम्पर्कित अइ। भक्ति-शृंङ्गार-सौन्दर्यक त्रिवेणी ई अपन काव्यक माध्यमे बहओने छथि। अपन पदक सम्बन्ध मे स्वयं एक ठाम लिखैत छथि—रसना-रोचन श्रवण विलास/रचइ रुचिर पद गोविन्द दास।।

विभिन्न पोथी तथा हिनक रचनाक आधार पर प्रमाणित होइए जे ई मात्र कविए नहि विराट पंडित, विविध कला मर्मज्ञ, महान दार्शनिक तथा समाज विज्ञानी छलाह। इएह सर्वप्रथम विद्यापति केँ 'कविपति' कहि सम्मानित कएल—

कविपति विद्यापति मतिमाने।

जाक गीत जगचीत चोरायल

गोविन्द गोरि-सरस-रस-गाने।।

महाकविक महानताक परिचायक एहि गीतक शेष पद थिक जाइ मे ओ अपना केँ मतिमन्द कहैत छथि, जे साहित्यक विशाल सुखद संभारक अछैतो

(विद्यापतिक) स्वयं पद चरना करय चाहैछ, जेना कि बामन (बौन) चान धरय चाहैत हो।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्ध मे एखनो धरि हमरा लोकनि के पूर्ण जानकारी नहि अइ कारण अपेक्षित शोध खोज नहि भेलए। हमरा लोकनिक लेल एहि सँ पैघ लाजक बात आन कि भ सकैछ, जे आइ धरि हिनक समस्त पदक संकलनो नहि प्रकाशित भ सकल-ए। १९३२ मे मथुरानाथ दीक्षित महाशय 'गोविन्द गीतावली' नामे किछु पद प्रकाशित अबस्स केलनि परञ्च 'मैथिली कैरेक्टर' सँ अपरिचित हेबाक कारणे शब्दक अर्थ नहि बूझि ओकरा बदलि अनर्थ क देलनि जे पश्चात् गोविन्द दास केँ बंगालक कवि कहनिहार बंगाली गवेषक लोकनि के खंडन-मंडन करबा मे बड़ सहजता भेलनि। १९३८ मे रमानाथ झा 'शृंगार भजन' नामे किछु पद प्रकाशित केलनि परञ्च इहो हिरबा छूवि संतुष्ट भ गेलाह। परिश्रम कए ने त पद संग्रह क सकलाह आने गोविन्द दास केँ मैथिल हेबाक अकाट्य तर्क प्रस्तुत क सकलाह। मात्र पंजीक सहारा लय हुनका मैथिल बना देलनि।

मैथिल जातिक ई विशेषता रहलैक-ए जेओ अपन विभूति केँ, अपन वस्तु केँ नहि चीन्हैए। जहिना हनुमान जी केँ केओ मन पाड़ि देनि—का चुप साधि रहेउ बलवाना ? त हुनका अपन बलक भान होनि, तहिना हमरो लोकनि केँ जखन केओ देखा दैए, परिचय करा दैए—तखने अपन विभूति केँ चीन्हैत छी। कविपति विद्यापतिक सम्बन्ध सैह भेल अइ, महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्धहुँ मे तहिना भेल अइ। गोविन्द दास जे मैथिल छलाह—ई बात सर्वप्रथम प्रकाश मे अनलनि नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशय। १३३१ साल मे 'मासिक बसुमती' पत्रिकाक कार्तिक संख्या, १३३५ साल मे साहित्य-परिषत् पत्रिकाक ३५म भाग मे १३३६ सालक जेठ-अषाढ़ मासक प्रवासी मे १९३० ई० जुलाइ मासक Modern Review मे एहि सम्बन्ध मे हुनक प्रबन्ध प्रकाशित भेल। एकर पश्चाते १३३२ साल मे सिंउरी मे जे बंगीय साहित्य सम्मेलन भेल ताइ मे नगेन्द्र बाबूक विरोध मे सतीश चन्द्र राय महाशय पत्र लिखि पठओलनि। हुनक कहनाम छलनि जे गोविन्द दास मैथिल नहि, बंगाली छलाह। आ एही ठाम सँ महाकवि केँ बंगाली बनेबाक प्रयास क्रमश: जोरगर होइत गेल। बंगाली चेतना आ एकता लग मैथिल चेतना नितुआन पड़ि गेल। महाकवि गोविन्द दास झा गोविन्द कविराज बनि गेलाह।

विद्यापति पदावलीए सन गोविन्ददासक पदक सभसँ नीक आ विस्तृत संकलन प्रकाशन बिमान बिहारी मजुमदार महाशय द्वारा भेल अइ। एहि मे बिमान बाबू अपन

पूर्वबर्ती तथा समकालीन बंगाली विद्वानक सहयोगें तर्क दय गोविन्द दास कैं बंगाली कवि प्रमाणित करैत छथि। परञ्च जाइठाम ओ रमानाथ झाक तथा दीक्षित महाशयक तर्क कैं बड़ सहजताक संग काटि दैत छथि ताइठाम हुनक अपन जुटाओल तर्क सेहो ताही सहजताक संग काटल जा सकैछ। उदाहरण स्वरूप सुकुमार सेन महाशय महाकविक पंक्ति—रसिक-शिरोमणि नागर-नागरी—लीला स्फुरव कि मोय'क चर्च करैत कहैत छथि जे ई ने कि वैष्णव छोड़ि दोसर सँ लिखब असंभव। जँ सुकुमार बाबूक कथन सत्य त कि प्रमाणित होइछ जे महाकवि वैष्णव छलाह—आ तैं ओ मैथिल नहि छलाह ? पोथी मे आगा कहल गेल-ए जे विद्यापति जे राधा-कृष्णक लीला गीत रचलनि से मिथिलावासी स्वीकार नहि करय चाहैत छथि। त कि एकर माने भेल जे विद्यापति सेहो मैथिल नहि छलाह? परञ्च हर्षक विषय जे सुकुमार बाबू सँ बहुत पैघ विद्वान सूनीति बाबू सेहो विद्यापति कैं मैथिल मानि चुकल छथि आ आब त भरिसक कोनो बंगाली विद्वान कैं मोह नहि रहि गेल छनि। सुकुमार बाबूक दोसर तर्क छनि जे १६५४-५७ मे नकल कएल सजनीकान्त दासक एगो पोथी मे बहुतो पद भेटलैक जाइ मे सँ पाँच टा पद कतौ मुद्रित नहि छैक। गोविन्द दास जे १७म शताब्दी मे मिथिला मे बैसि कैं कविता रचलनि त एहि पोथी मे हुनक पद रहनाइ असंभव। हुनक इहो तर्क निराधार छनि कारण पहिने त सजनीकान्त दासक नकलक वर्ष संदिग्ध छैक आ दोसर गोविन्द दास जे १६५० धरि विख्यात कवि नहि भ गेल छलाह तकरे कि प्रमाण ? सतरहम् शताब्दीक अर्थ १६९९ किन्हु ने भ सकैछ, विद्यापति पद बंगाल मे तते प्रचलित आ प्रिय छलैक जे मैथिलीक नव सँ नव कविक गीत जे पदावली-परम्पराक छल—तकरा बंगाल धरि पहुँचबा मे कनियो समय नहि लगैत छलैक—एहि मे अचरज की?

दोसर तर्क देल गेल अइ जे गोविन्द दास श्री वसन्त नामक कोनो बंगाली कविक चर्च अपन कविता मे केने छथि, तहिना केने छथि श्री बल्लभ कविक चर्च। श्री वसन्तक नामे ५१टा पद पदकल्परू मे पाओल जाइछ तथा श्री वल्लभक नामे २५ टा पद। जे हेतु गोविन्द दास एहि दुनू बंगाली कविक उल्लेख अपन गीत मे केलनि तैं ओ बंगाली छलाह। जँ नामोल्लेख मात्रे सँ केओ कोनो जातिक हो, तैयो गोविन्द दास बंगाली नहि भ क मैथिलीक भ सकैत छथि कारण ओ पूर्ण निष्ठा आ सम्मानक संग विद्यापतिक स्मरण केने छथि।

एवम् प्रकारे अनेको तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका कोनो बंगालक राजदरबार सँ जोड़ल गेलए परञ्च हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिलाक विद्वान

समस्त 'भारत' मे पसरल रहलाहए आ विभिन्न रजबाड़ा मे सम्मानित पद पर आसीन होइत आबि रहलाह-ए। एगो तर्क इहो देल गेल-ए जे जँ ओ मिथिलाक रहितथि त कि हुनक एकोगो पोथो मिथिला मे सुरक्षिति नहि रहैत ? मिथिला मे जे हुनक पोथी सुरक्षित नहि अइ से बिनु पूर्ण खोजक कहले केना जा सकैछ ? दोसर विद्यापतियोक नीक सँ नीक पोथी तैं मिथिला सँ बाहरे पाओल गेल-ए। 'व्यालि भक्ति तरंगिनी' बंगलादेश मे प्राप्त भेलैक। तैं कि विद्यापति मैथिल नहि छलाह ?

हिनका लोकनिक अन्तिम तर्क छनि किछु शब्द कैं ल क जे वर्तमान मिथिला मे प्रचलित नहि अइ। जँ एकरे आधार मानि लेल जाइ त फेर विद्यापतिक चर्च करय पड़त। 'लखय' शब्द तथा 'पारय' प्रचलित नहि छैक तैं कि विद्यापति के सेहो मैथिल नहि मानल जायत ? जँ शब्दे कैं आधार मानल जाय त निश्चिते तकर प्रतिशत बहार कैल जैबाक चाही आ एहि तरहें मैथिली वा बंगला भाषा जकर वेशी प्रतिशत शब्द गोविन्द दासक पद मे हो तकरे महाकवि पर अधिकार द देल जाइक त निश्चिते हमरा लोकनि के आपत्ति नहि हैत। ओना एहिठाम ई कहब आवश्यक जे पोथी बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित हेबाक कारणे ओकर शब्द मे पूर्ण परिवर्तन क देल गेल छैक, तथापि वर्तमानोक जे रूप छैक से किन्हुँ बंगला नहि मैथिलीक बेसी लग छैक। प्रस्तुत अइ उदाहरण स्वरूप एगो पद :—

रति रस-अवश अलस अति पूर्णित
शूतलि निभृत-निकुञ्जे।
मधु-लोभे भ्रमर भ्रमरिगण झंकृत
विकशित फल फूल पुञ्जे।।
विनोदिनी माधव-कोर।
तमाले बेढ़ल जनु कनक लताविलि
दुहु रूप अति उजोर।।
भुजे-भुजे छन्द बन्द करि सुन्दरि
श्यामर कोक घुमाय।।
रति-रसे अलसि दुहु तनु ढर-ढर
प्रिय सखि चामर डोलाय।।
सुवासित वारि झारि भरि राखल
मन्दिरे दुहु जन पास
मन्दिर निकट पद-तले शूतलि
अनुचरि गोविन्द दास।।

एहि गीत मे 'घुमाय' एगो शब्द अइ जे वर्तमान मैथिली मे प्रचिलित नहि। जँ मात्र एकरा आधार पर एहि गीत कैं बंगला मानल जाय त 'कोर' शब्द बंगला मे नहि छैक, (कोल छैक) 'भरि'क बदला 'भर्ती करे राखा' होइ छैक, ढर-ढर नहि छैक, दुहु नहि छैक, उजोर नहि छैक (आलो होइ छैक) करिक बदला 'करे' होइ छैक एवम् प्रकारे जँ सभ तरहें मानियो लेल जाय जे महाकवि गोविन्द दासक जन्म बंगाल मे भेल छलनि, भरि जीवन बंगाले मे रहलाह एक शब्द मे ज ओ बंगाली छलाह तैयो ई त किन्हु प्रमाणित नहि भ सकैछ जे बंगलाक कवि छलाह। गोविन्द दास जँ कवि छलाह त निर्विवाद ओ मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक उत्तराधिकारी छलाह। ओना स्वयं मजुमदार महोदय सेहो मैथिल गोविन्द दासक अस्तित्व के स्वीकारिते छथि तथा हुनक नामे निछाउरवत दू गोट पद शेष मे प्रकाशित कएनहि छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह तकर प्रवल आधार इहो अइ जे मात्र मैथिलीए साहित्यक तेहन विशिष्ट परम्परा छलैक, मैथिलीए साहित्य ओतेक विकशित छल जाइ मे पाद लोकनि सँ ल क कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर महाकवि डाक, कविपति विद्यापति सन युगपुरुष भ गेल छलाह। बंगला साहित्यक एहन कोनो परम्परा नहि छलैक आ तैं हठात् पहिले-पहिल एहन महाकविक प्रादुर्भाव असम्भव बुझना जाइछ।

निष्कर्षत: महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह ताइ मे सन्देह नहि तथापि बंगाली विद्वान लोकनि पूर्वाग्रह मुक्त भ जँ हिनका सम्बन्ध शोध-खोज करितिथि त प्रशंसनीय होइत ने कि निराधार 'अपन' कंहि प्रचारित क देनाइ। ओनहुना साहित्यक रसिकक लेल सम्पूर्ण विश्वक साहित्य अपने होइत छैक तैं विश्वक समस्त साहित्यकार कैं अपन बुझनाइ उदात्त भावनाक परिचायक थिक मुदा पूर्वाग्रह मे परि मात्र अपनहि टा बुझनाइ संकीर्णताक परिचायक।

(१९८२)



जनकवि यात्री

नवतुरिए आबओ आगाँ!!
उएह करत रूढ़िभंजन, आगू मुहैं बढ़त उएह.......
हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोनैं,
घिचिआइ नहि टाङ पाछाँ........
ढेकी नहि कूटी अपनहि अमरत्व टाक........

नवतुरियाक प्रति ई सहज सीमाहीन सिनेह, ई अटूट आस्था, विश्वास तरौनीक वैद्यनाथ मिश्र कैं भारतीय वाङमयक 'बाबा'क प्रिय प्रतिष्ठित पद पर प्रतिष्ठापित क देलक। मैथिलीक यात्रीजीक ई सम्मान निश्चित रूपैं मैथिलजनक हेतु गौरवक विषय थिक आ स्वाभाविक कारणे हिनक अवसान एकटा जातीय शोक जाहि सँ आइयो हमरा लोकनि उबरि नहि पाओलए। एहना स्थिति मे अपन स्मृति कैं जगा बाबाक विराट व्यक्तित्वक झाँखी, जे दीर्घ अवधिक आङन मे पसरल-छिड़िआएल अछि तकरा समेटि सिलसिलेवार ढंग सँ सजा कैं प्रस्तुत करब, कतबा दूर धरि पार लागत, के जानय!

बाबा सँ पहिल भेट कहिया भेल—मन नहि अछि। ओना भेल धरि एहि महानगर कलकत्ता मे। १९७७ मे हमर पहिल कविता संकलन 'इतिहासहंता' प्रकाशित भेल छल। बाबा कलकत्ते मे छलाह। स्वाभाविक छैक जे पोथीक विमोचन उएह करथि। जखन अपन ई विचार हुनका लग व्यक्त कएल तैं ओ सहजहि स्वीकार क लेलनि। हमर बासा लेक गार्डेन्स मे छल आ बाबा 'जनसंसार'क कार्यालय (चौरंगी) मे रहैत छलाह। सोचल जे एक दिन पहिनहि हुनका बासा पर ल जाइ। ओ राजी भेलाह। साँझ मे टहलि बूलि एलहुँ। ओ पैजामा-कुर्त्ता पहिरने छलाह। उपर सँ आर एगो पैजामा-कुर्त्ता चढ़ओलनि। टोपी पहिरलनि आ झोड़ा लटका विदा भेलाह। बासा पहुँचि ओ चौकी पर बैसलाह। कात मे झोड़ा रखैत घर कैं नीक जकाँ निरीक्षण करैत बजलाह—बड़ सुन्नर पोर्टेबुल घर छौ। आ बिहुँसि देलनि। हँसी तैं हमरालोकनि कैं लागल। ओना हम बेसी चिन्तित रही ई सोचि जे दम्माक रोगी बाबा कैं एहि टिनही घर मे जकर ऊँचाई हाथक पहुँच सँ उपर नहि रहैक, कतेक कष्ट हेतनि, दिसम्बरक जाड़। ओना एगो एकजनिया सीरक हमरा अवस्से छल जे हुनका ओढ़ै लेल देलियनि, परंच तैयो ओ भरिराति खौंखी करैत आ खखार फेकैत बितऔलनि। ने अपने सुतलाह आ ने हमरालोकनि सूति पाओल (बाबाक जमाय रत्नेश चौधरी

हमरे संग रहैत छलाह)। अनुमान कएल जे भरिसक एही दुआरे ओ ककरो बासापर नहि रहि जन संसारक एकान्तवास मे रहैत छथि। अन्यथा हुनका सन जीवट आ सांसारिक लोक, जकर परिवार एते विशाल आ चतरल-पसरल हो, तकरा लेल ई एकान्तवास ने तँ काम्य आ ने सुखद भ सकैछ। ई भिन्न बात जे ओ अपन सुविधा-असुविधा कैं व्यक्त नहि करैत छलाह। लोक कैं तकर भान होमय नहि दैत छलाह। एक दिन जखन घुरि-फिरि हुनका घर धरि पहुँचाबै लेल गेलहुँ तँ घर लग जा ओ थकमका गेलाह। पुछला पर बजला जे एगो केक कीनबाक छनि। हम आ प्रायः कुणाल रही। कीनि आनि देबनि से बात हुनका स्वीकार नहि। अपनो संग गेलाह आ जेबी सँ पाइ बहार क केकक दाम आठ आना वा एक टाका देलथिन। ई केक—जे धीयापुताक जलखै मे थोड़ पड़तैक—हुनक रातुक आहार छलनि। एही आहार पर सतावन बर्खक दम्माक रोगी यात्रीजी भरि दिन कलकत्ताक बाटे-बाटे बौआइत छलाह। कालेज स्ट्रीटक पुरनका पोथीक दोकान सभ छनैत छलाह। बंगलाक अखबार सभ कीनि झोड़ा भरैत छलाह आ राति मे मोटका काचक बलैं पढ़ैत छलाह। एक बेर हठात् पुछलनि जे अन्नदाशंकर रायक कोनो कविता पोथी प्रकाशित भेलैए। नाम प्रायः मोन नहि छलनि। कहलियनि जे ओ तँ धीयापुताक लेल छैक—हइ रे बाबू हइ। परंच हुनका उएह पोथी लेबाक छलनि आ लेबो केलनि। हमरा बुझल छल जे बाबा कैं बंगलाक समकालीन कविता नीक जकाँ पढ़ल छनि। जीवनानन्द दास, सुभाष मुखोपाध्याय, विष्णु दे सँ समर सेन धरि। एकर प्रमाण हमरा 'इतिहासहंता'क विमोचनक अवसर पर भेटल छल। एकर निस्तुकी पश्चात भेल। बाबा कैं मूलरूपैं बंगला मे लिखबाक इच्छे प्रायः हुनका विभिन्न तरहक कविता कैं देखबा-परखबाक कारण रहल हो।

चेतना समितिक विद्यापति-स्मृति पर्व मे भाग लेबाक लेल पटना गेल रही। ४ नवम्बर कैं भाइसाहेब (राजामोहन झा), अग्निपुष्प, विनोदजी, अरुणजी, सभ केओ छलाह, मुदा सुकान्त नहि। पता लागल जे बाबाक स्थिति नीक नहि रहबाक कारणे ओ रातिए दरभंगा चल गेल। बाबा तीन दिन सँ कौमा मे छलाह आ ओ नीक भ उठताह तकर आशा लोक छोड़ि चुकल छल। एहना स्थिति मे ओ विदा लेथि--एहने भावना-कामना प्रायः लोकक छलैक। आश्चर्य! मृत्यु सेहो कहियो काल काम्य भ जाइछ। परंच ५क प्रातः काल जखन हुनक देहावसानक समाचार भेटल तँ मर्माहत भेलहुँ—मात्र कहि देब बड़ हल्लुक सन लगैछ। सत्य कही तँ तखनुक स्थितिक वर्णन करबाक लेल उपयुक्त शब्द हमरा लग नहि अछि। जानितो जे बाबा

घड़ी पल घड़ीक पाहुन छथि, ओ नहि छथि, बाबा चल गेला, से बात जेना मानैक लेल मन तैयारे नहि। परंच सत्य तँ सत्ये थिक। बाबा चल गेला आ जेना कि शोकसभा मे भाइसाहेब कहलनि—हमरालोकनि अभिभावकविहीन भ गेलहुँ। नव कविताक प्रतिष्ठाता होएबाक कारणे ओ मात्र हमरे लोकनिक नहि अपितु हुनकोलोकनिक, जे लोकनि हुनक प्रत्यक्ष सम्पर्क सँ बंचित छथि, अभिभावक छलाह।

बाबा हमरालोकनिक अभिभावक छलाह, आ अभिभावकविहीन भ जेबाक व्यथा केहन होइत छैक से लिखबाक प्रयोजन नहि। परंच हमर जे अनुभव अछि, ओ अभिभावक थोड़, मित्र बेसी छलाह। हुनका संग घंटो बाट-घाट बौआइत, धर्मतल्ला मैदान मे बैसि बतिआइत, रस्ता कातक कोनो चाहक दोकान लग ठाढ़ चाह पीबैत ओ शतप्रतिशत मित्र लगैत छलाह। हँसी-ठठ्ठा करैत काल ओ वयसीमाक व्यवधान नहि मानैत छलाह। हुनक ठहाकाक मादे तँ कहल जा सकैछ 'तोहर सरिस एक तोहैं माधव'। हुनका संग एक घंटा बिताएब कतेको पोथी पढ़ब सँ बेसी महत्वपूर्ण छल। पैघ सँ पैघ प्रश्नक उत्तर, समस्याक समाधान ओ बड़ सहजताक संग क दैत छलाह आ गप्पेक क्रम मे उचित-अनुचित दिस संकेत सेहो। अड्डाबाजी कैं ओ उपयोगी मानैत छलाह। विचारक आदान-प्रदान, एक दोसरक भावना सँ परिचितिक हेतु अड्डा नीक बात थिक। प्रायः सभ शहर मे साहित्यकार लोकनिक अड्डा कोनो कॉफी हाउस, वा चाहक दोकान पर जमैत अछि। बंगला साहित्य मे कॉफी हाउसक अड्डाक बड़ महत्वपूर्ण स्थान छैक। हमरालोकनिक छोट-छीन अड्डा 'शेली कैफ' मे जमैत छल से ओ जनैत छलाह।

बाबा अभिभावक रूप मे जखन हमरा भेटलाह तखन प्रायः गंभीर किंवा तमसायल। 'इतिहासहंताक, विशेष संस्करणक मूल्य चारि टाका देखि बिगड़ि गेलाह- एकर कम सँ कम पन्द्रह टाका दाम हेबाक चाही। हम एक सय प्रति दिल्ली ल जेबाक सोचने छलहुँ। बाबा तमसाथि तँ चुप रहनाइए उचित बुझी। ओना हुनक तामस रहैत छलनि बड़ थोड़ काल। बेसीकाल तँ हुनक निश्छल, शिशु-सुलभ हँसीए देखने छी। एक बेर एगो करिया झोड़ा कीनने रही। बाबा कैं सेहो साइड बैग छलनि—अपना बगेबाइन सन। कहलनि—'तोहर झोड़ा तँ बड़ नीक छौ। ई हमरा सँ बदलि ले।' हुनक शिशु-शुलभ आचरण सरिपहुँ अभिभूत करैबला छल। झोड़ा ठामहि बदलि गेल। एहि झोड़ाक कागत-पत्र ओहि मे, ओहि झोड़ाक एहि मे। हमर झोड़ा हुनका कान्हपर आ हमरा कान्ह पर हुनकर झोड़ा। वस्तुतः बाबा मे अभिभावक, बन्धु आ शिशु, तीनू रूप गुणक अद्भुत समन्वय समाहार हमरा भेटल अछि।

हम एहि सन्दर्भ मे अपना कें भाग्यशाली बुझैत छी जे अपना समयक प्रायः मनीषीक स्नेह-सम्पर्क हमरा भेटल अछि। एहि लेल निश्चिते हम महानगर कलकत्ताक मैथिली प्रेमी लोकनिक आभारी छी। जनिका लोकनिक प्रयासे हुनका लोकनिक आगमन एहि महानगर मे होइत रहल अछि। एहि मनीषी लोकनिमे किरणजी आ यात्रीजीक हम विशेष रूपें ऋणी छी। एहि दुनू गोटे मे बहुतो पार्थक्य रहितो एगो अदभुत साम्यक अनुभूति हमरा भेल अछि। दुनू गोटेक सत्य मनुक्ख छल। दुनू गोटे शोषितक पक्षधर, श्रमशक्तिक आराधक, क्रान्तिक अग्रदूत, परिवर्त्तन-पुजारी छलाह। परंच किरणजी कें अपन भाषा-भूमिक प्रति जे स्नेह-लगाव यात्रीजी मे तकर अभाव। विशेष कें हिन्दी मे गेलाक पश्चात। अस्सी दशकक उत्तरार्ध सँ ई बात आर बेसी देखार भेल। ई तँ एक संयोगे कही जे १९३६ मे मातृभूमि कें अन्तिम प्रणाम निवेदित क अपन परिजन-पुरजन कें छोड़ि, पहिलुक परिचय तोड़ि आनठाम चल गेनिहार हमरालोकनिक यात्रीजीक शेष समय माँ मिथिलाक कोरा मे ओकर स्नेह-साहचर्य मे बीतल। वस्तुतः यात्रीजी भनहि मिथिला-मैथिली कें बिसरि देलनि किंवा बिसरबाक भान केने होथि मिथिला-मैथिली हुनका कहियो ने बिसरलक। बिसरबो केना करैत ?

किरणजी कलकत्ता कोनो आयोजन मे आमंत्रित भेला पर अबैत छलाह। यात्रीजीक प्रिय प्रवास छल कलकत्ता। जड़काला मे प्रतिवर्ष ओ अबिते छलाह। भ सकैछ दिल्ली-पटनाक जाड़ असह्य बूझि पड़ैत छल होनि। पूर्व मे मदन चटर्जी स्ट्रीट मे मिथिलांचलक किछु श्रमिक (रिक्साचालक) लोकनिक संग रहैत छलाह। मकानक विपरीत एगो चाहक दोकान छलै जाहि मे हमरालोकनि बैसैत रही आ ओकर नाम हँसी-हँसी मे छेदिआइन पड़ि गेलैक। पश्चात् ओ 'जनसंसार'क आफिस मे रहय लागल छलाह जकर कर्त्ता प्रगतिशील लेखक संघक गीतेश शर्मा छथि। दू एक दिन लेल कोनो सिनेहीक परिवारक संग सेहो बिता लैत छलाह। जनसंसारक कार्यालय मे बाबा कें घेरने हिन्दी साहित्यकारक भीड़ लागल रहैत छल। ओना हमरा जनैत एहि भीड़ मे साहित्यकार सँ बेसी चाटुकारक संख्या रहैत छल। कते दिन एहन भेल जे गोड़ लगनाइ पराभव। ओना बाबाक नजरि पड़िते ओ संकेत सँ बगल मे बैसबाक इशारा करितथि। घंटा आध घंटाक बाद सभ कें विदा करितथि आ फेर हमरा लोकनि बाहर अबितहुँ। कहियो काल थाकल-ठेहिआएल रहने घरे मे बातचीत क घंटा दू घंटा बाद विदा लितौं। बाबाक संग बाट पर बोएनाइयोक आनन्द फराके। हुनक भेष-भूषा अद्भूते रहैत छलनि। प्रायः कोकटीक कुर्त्ता आ पैजामा। दाढ़ी-केश

बढ़ल। कहियो-काल दाढ़ी तँ बेश पैघ परंच माथ साफ। कहियो काल केश दाढ़ी-मोंछ सब साफ। कहियो काल टोपी आ गरदनि मे तौनी। कान्ह सँ लटकल झोड़ा। हिनकर ई विचित्र भेष बटोही सभ आँखि निराड़ि कें देखैत आ आनन्दो लैत। एक खेप धर्मतला मैदान मे कुणाल बाबाक मारिते रास फोटो खिचलक। फोटो खिचनाइ जेना ओकरा हॉबी छलैक आ ताइ लेल कैक बेर डाँटो सुनय पड़ल छैक। परंच उएह फोटो जखन बाबा कें देखै लेल देलकनि तँ ओ बजलाह—'एह, लगइए जेना मियाँजी हज क क आबि रहल होथि।' आ फेर ठहाका। अनका पर तँ बहुतो हँसैत अछि। बड़ सहज छैक। परंच अपना पर एना खुलि क उएह हँसि सकैत छलाह जकर ई एक छोट उदाहरण थिक।

बाबा सँ गप्प करैक लेल हुनक 'मूड' कें जानब आवश्यक छल। हुनक व्यवहार हुनक 'मूड' पर निर्भर छल। अनटेटल बात हुनका पसिन्न नहि। केहनो लाटसाहेब होथि बाबा कें तकर परवाहि नहिं। एक बेर महाजाति सदन मे अखिल भारतीय मिथिला संघ विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन केने छल। कवि सम्मेलनक अध्यक्षता बाबा क रहल छलाह। संयोगसँ बाबाक संग मंच पर बैसबाक ई हमर पहिल अवसर छल। एगो महानुभाव कविता पढ़ैत छलाह। कविता बेस पैघ। बाबा पाछाँ सँ कविजीक कमीज खीचैत कहलथिन—''भ गेल, बैसि जाउ।' फेर हमर हाथ पकड़ि कहलनि—'तौं उठ। नीक कविता पढ़िहें।' हम ओहि समय एक अर्थे नबसिखुए रही। आन्दोलन/रंगमंच सँ बेसी जुड़ल रही। स्थितिक अनुमान सहजहिं कएल जा सकैछ। एहिना एक खेप कर्णामृत'क सम्पादक कर्णजीक डेरा पर बैसल रही। बैसार निश्चिते बाबाक लेल छल। बड़ीकाल धरि गप-शप भेलै। हुनका सँ कतेको प्रश्न पूछल गेल आ ओ सहज भावें उत्तर दैत गेलाह। ओ फेर हठात् चुप्पी। कनेकालक पश्चात् आदेशक स्वर मे बजलाह—'आब अहाँ सब चुप्प रहै जाउ। हम रामलोचन सँ कविता सूनब।' आ गोड़ साते-आठे कविता सुना हम विराम लेल। धीया-पुता जकाँ हमरा संग बाबा घड़ा जोड़ी केने........। एकबेर एगो हिन्दीक आयोजन छलैक। विशिष्ट अतिथि मे बाबाक नाम छपल, परंच बाबा अनुपस्थित। आयोजकलोकनि कहाँदन हुनक सहमति लेने छलाह। लोक पठाओल गेलै, किन्तु बाबा नहि एलथिन। पश्चात् ज्ञात भेल जे ओ पाँच सै टाकाक माङ केने छलथिन। पाइबला संस्था छैक। अन्ट-शन्ट मे पाइ खर्च करैछ तँ बाबा कें किएक नै देतनि। आ नञि देतनि तँ ओ नञि जेताह।

बाबा देश-काल-परिवेशक प्रति जतबे साकांक्ष छलाह, अपन खान-पान, परिधानक प्रति प्रायः ततबे उदासीन। कपड़ा मैल अछि, फाटल अछि तकरो चिन्ता

नहि। खेनाइ भेटि गेल बड़ बढ़ियाँ, नहि भेटल तँ चाह-बिस्कुटो सँ काज चलि सकैछ। ओना माछ बड़ प्रिय छलनि आ हुनक माछ खेनाइ देखिते बनैत। हम जहन डेरापर ल गेलियनि तँ पुछलियनि जे राति मे की खेबै। स्वपाकी रही। पुछलनि जे घरमे तरकारी की सभ अछि। मटर, गाजर, आलू, कोबी, पलांकी साग आदि छल। कहलनि जे कने-कने सब तरकारी काटि सवा सेर पानि मे मद्धिम आँच पर छोड़ि दिऐ आ जखन् पावभरि रहैक त उतारि दिऐक। तहिना केलौं आ ओ बेस रूचि सँ खेलनि।

बाबाक विशेषता छलनि जे ओ पोथी खूब कीनैत छलाह। उपहारो मारिते रास भेटैत छलनि। परंच तकरा ओ उघैत नहि रहथि। पढ़ि लेलौं आ ओतै छोड़ि विदा भ गेलौं। हुनक स्मृतिस्वरूप कएक टा पोथी हमरो लग पड़ल अछि आ जानि ने कतेको गोटे लग होएत। आइ बाबा नहि छथि। शेष अछि हुनक महान मृत्युञ्जयी कृति आ विशाल स्मृति। आब जड़कला मे हुनक आगमनक प्रतीक्षा नहि रहत। आब तँ हुनक साहित्य-सम्भार, किछु छवि, किछु बात—स्मृति शेष।

(१९९९)



राजेश्वर बाबू

राजेश्वर बाबूक स्मरण होइतहिं स्मरण भ जाइछ पटना, मैथिली साहित्य संस्थान, मिथिला भारती—आर कतेरास बात। यदा-कदा लोकक मुँहे सुनैत छी जे फलाँ एगो संस्था छलाह; संस्था माने जकर एगो लक्ष्य रहैत छैक, जाइ मे अनेको लोकक समावेश रहैत अइ, अनेक शक्तिक संगठन रहैत अइ। सरिपहुँ, राजेश्वर बाबू अपना मे एगो संस्था छलाह। लक्ष्य मिथिला-मैथिलीक विकास। जे हेतु कोनो संस्था मे अनेक लोक रहैए, तँ अनेक मतो हैव अस्वाभाविक नइ। आर तँ राजेश्वर बाबूक जीनगी भरिक क्रिया-कलापक अध्ययन अवलोकन सँ जँ कोनो पार्थक्य परिलक्षित हो त अचरजक गप्प नइ मानक चाही। परंच ई धरि मानइ पड़त जे हुनक लक्ष्य सदा-सर्वदा एक छलनि आ एहि दिशि ओ अविराम स्वनिर्मित पथ पर अग्रसर होइत रहलाह, अशेष शक्तिक संग। जौं थोड़ मे कहीं त कहय पड़त जे ओ सूच्चा मैथिल छलाह, एगो साधारण लोक छलाह। जे हेतु साधारण लोक छलाह तँ साधारण लोकक समस्त गुण-दोष हुनका मे सन्निहित छलनि। ओ महान छलाह। श्रद्धेय छलाह।

राजेश्वर बाबू सँ हमरा प्रथम परिचय भेल हुनक लेखनी द्वारा आ बाद मे दू खेप कलकत्ता आ एक खेप पटना मे। हुनका देखि कैं केयो कल्पनाओ ने क सकैत छल जे ओ एतेक पैघ विद्वान, कर्मठ साधक होयताह। परंच से ओ छलाह तकर प्रमाणस्वरूप हुनक पोथी सभ अइ।

पटना मे हुनका सम्बन्ध मे जे उल्लेखनीय बातक उपलब्धि हमरा भेल से ई जे हुनक विरोधियों हुनक कर्मठता, लगनशीलता आ मैथिलीक प्रति अनन्य भक्तिक प्रशंसा करैत छल आ ई बात हमरा मन मे हुनका प्रति आर अधिक आदर-श्रद्धा उत्पन्न कयलक। जतै-कतौ चर्च होइक, केओ ने केओ कहितथि—हुनकर त चर्चे ने हो, पटना मे वैह त एगो लोक छथि।' ओना सत्य कही त कलकत्ता मे हुनका सँ गप्पक क्रम हमरा काफी बोरियतक अनुभव भेल छल। कारण ओ बजैत छलाह त लगातार आ बेसी अपन काजक बारे मे। एहि क्रम मे ओ इहो बिसरि जाइत छलाह जे कतौ आनो ठाम जेबाक छनि, समय देने छथिन, लोक प्रतीक्षा मे होयतनि। हम हुनका आत्म प्रशंसी बुझि लेने रही आ तैं विरक्तिक अनुभव स्वाभाविके। परंच ओ जे किछु बाजल छलाह से फूसि नइ बाजल छलाह से धरि निर्विवाद। समरसेट मौंम एकठाम लिखै छथि—मनुक्खक ई प्रवृतिये होइ छइ जे ओ अपना बारे मे कहय चाहत, तें हम अपने बारे मे कहब।' आ राजेश्वर बाबूओ त मनुक्खे छलाह, एगो साधारण मनुक्ख, जे कि हम पहिनहिं कहि आयल छी।

राजेश्वर बाबू जेहने तमसाह छलाह तेहने सहमिल्लू। सहमिल्लू तेहन जे लोक सँ जेना तेना सहयोग लय पैघ सँ पैघ काजक संपादन ओ सहजहिं क लैत छलाह। गप्प करैत काल होयत जेना कते दिनक पुरान परिचित होथि, कते लगक व्यक्ति। असल मे ई वस्तु लिखबाक नइ, अनुभव करबाक थिक आ जनिका एकर अनुभव हेतनि से जनिते होयताह। तमसाह एहन जे अनटोटल बात बर्दाश्त नइ, तैं घरो मे आयल अतिथि के बहार क देब हुनका लेल पैघ बात नइ छल। आ एहि तरहक घटना जे घटल छैक से बहुतो के ज्ञाते होयतनि। महाकवि गालिब कहै छथि-

कोई आगह नहीं बातिने हम दिगर से
है हरेक फर्द जहाँ से बर्के न खान्दा

ताइ ठाम एहि छोट-छीन सन भेंट, थोड़-बहुत गप्प-शप्प सँ हम हुनक व्यक्तित्व सँ कते दूर धरि परिचित भ सकब ? तखन हमर विश्वास अइ जे कोनो लेखकक कृतित्व पर ओकर व्यक्तित्वक प्रत्यक्ष वा परोक्ष प्रभाव परिते टा छैक आ जँ कोनो लेखक सायास अपन लेखन के व्यक्तित्वक प्रभाव सँ सम्पूर्ण रूपैं मुक्त राखै चाहथि त निश्चिते ओकर लेखन हल्लुक आ सतही भइयेटा जेतैक। तैं राजेश्वर बाबू पर किछु लिखबाक आधार हम हुनक लेखन कैं मानैत छी।

राजेश्वर बाबू गोर बीसे पोथीक रचना केने छथि, जे कि प्रकाशित अइ। मैथिलीक अतिरिक्त तीन गोट पोथी हिन्दी मे सेहो छनि। ओना निश्चित रूपें ई नइ कहल जा सकैछ, कारण हमरा लोकनिक दुर्भाग्य जे कतौ कोनोठाम एहन व्यवस्था नइ अइ जतय समस्त प्रकाशित पोथी उपलब्ध भ सकै। पोथी त कात जाओ, ओकर सूचियो नइ भेटत। परंच जतेक उपलब्ध अइ, पढ़ने छी आ वैह टा सम्बल।

राजेश्वर बाबू कथा, उपन्यास, नाटक निबंधादि विभिन्न विधा पर लिखने छथि। एहि सभ पोथी मे सँ मैथिली साहित्यिक आदिकाल' आ अवहट्ट : उद्भव ओ विकास' पूर्णरूपेण शोधग्रंथ थिक जकर चर्च हम बाद मे करब। सर्वप्रथम हम राजेश्वर बाबूक नाट्य-कृति पर कही। विगत सतरह-अठारह वर्ख सँ नाट्य-मंचक संग रहबाक कारणेँ मंच विषयक किछु अनुभवक संगहि मैथिली मे नाटकक अभाव आ खासक मंचोपयोगी नाटक त आङुर पर गनल आ ताहू मे जे अइ तकर निनानबे प्रतिशत कलकत्ता सँ प्रकाशित, उपलब्धि हम कएल। एहि क्रम मे हिनक 'शास्त्रार्थ', 'महाकवि विद्यापति' आ 'कन्दर्पीघाट' नाटक पढ़बाक अवसर भेल। नाटक मंचोपयोगी (आधुनिक मंचक सन्दर्भ मे) नइ अइ, स्वाभाविके थिक। जे नाट्यकार मंच सँ सम्पर्कित नइ छथि तनिका सँ मंचोपयोगी नाटकक आशाओ ने कैल जा सकैछ। यैह कारण थिक जे नाटकक पोथी जेहो अइ, मंचक उपयुक्त नइ आ तैं हमरा लोकनि कैं बेसीकाल अनुवाद पर आश्रित होमय पड़ैछ। आ जहाँतक मंचक प्रश्न अइ, इहो

ककरो सँ नुकाएल नहिञे अइ। असल मे मैथिली मे अभाव कोन क्षेत्र मे नइ अइ से कहब कठीन। से जे हो, ई त भेल एक पक्षक गप्प। दोसर पक्ष भेल पोथीक कथ्य जकर की प्रथम स्थान छैक। एहि सन्दर्भ मे राजेश्वर बाबूक दृष्टि परिष्कार छलनि। हिनक दृष्टि सतत मिथिलाक गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा दिशि लागल छलनि आ ओकर पुनरुद्धार लेल मन सतत आकुल रहैत छलनि। संस्कृति याने रहन-सहन, आचार-विचार, खैब-पीब, पहिरब-ओढ़ब आदिक समाहारें त थिक। आ एकरा सभक नियामकक रूप मे देखल जाइए धर्मक अस्तित्व। प्रात:काल उठबा सँ ल क फेर राति मे सुतबा धरि, जन्म सँ मृत्यु पर्यन्त मानवक समस्त काज-कलाप धर्म सँ सम्पर्कित-नियंत्रित होइए। कहबाक तात्पर्य जे धर्म आ संस्कृति अभिन्न थिक। आ हिनक रचनाक आधार सतत इएह छल। तैं नाटक हो वा अन्य कृति, जेना धर्मव्याध कथा वा जटा-जटिन वा श्यामा-चकेवा, सभक आधार धर्म-संस्कृति अइ।

हमरा विचारें राजेश्वर बाबू मूलत: शोध-कर्ता छलाह आ तैं हिनक सभ कृति मे सर्वाधिक महत्व ओहि कृतिक अइ जकरें कि विषय शोध रहलए। एहि तरहक पोथी मे मैथिली साहित्यक आदिकाल आ अवहट्ट : उद्भव आ विकास महत्वपूर्ण त अहिए। हम त एकरा मैथिली साहित्यक जिज्ञासु लेल सभ सँ उपयोगी आ अनमोल निधि मानैत छी। एहि पोथी के पढ़ला सन्ता हिनक विद्वता, कर्मठतांक दिग्दर्शन होइए। एगो साधारण पढ़ल-लिखल लोक सँ एहि तरहक शोधग्रंथक प्रणयन सरिपहुँ कल्पनातीत बुझना जाइछ। परंच राजेश्वरबाबू अपन परीश्रमक बल पर, अध्ययन-मनन, विषय-बोध ओ विश्लेशण मे बेजोर छलाह। अवहट्ट : उद्भव आ विकास पर गत बर्ख साहित्य अकादमी पुरस्कार घोषणा केलकए। ओना एहि पर पुरष्कार त पहिनहिं भेटैक चाही, कारण ई पोथी 'डिजर्भ' करैए, परन्च विडम्बना एहन जे हुनका नइ रहलाक बाद भेल। ई कथा भिन्न जे एक मौन साधक कैं तकर कोनो आशा अभिलाषा नइ छल होयतनि, परन्च हमरा लोकनिक विवेक कहन ? से जे हो मुदा हम ई अवश्ये कहब जे राजेश्वर बाबू जे आन-आन पोथी नइ लिखि मात्र इएह दू गोट पोथी लिखने रहितथि तैयो मैथिलीक शोध-साहित्य मे हिनक स्थान अप्रतीम रहैत आ आब त सहजहिं रहबे करत, एकरा कोनो 'दुज्जन हास' नइ मलिनि क सकैए। परन्च राजेश्वर बाबू कैं त अमर बनबाक लिलसा छलनि नइ। ओ त एगो फराके माटिक बनल छलाह, महान जिद्दी। हँ, सरिपहुँ एहन जिद्दी नइ देखल, आ तैं ओ एतेरास पोथी लिखि, प्रकाशित कय मैथिली साहित्यक भंडार के भरि गेलाह। कथा मे अभाव अइ ? त कथे लिखि प्रकाशित करा हाथ मे धरा देता। उपन्यास ? बड़ बेस, ओहो लिअ'। जेना हुनका अभाव शब्द सँ चिढ़ होइन, महान शत्रुता होइन आ ओ तकरा फुटली आँखि देखै नइ चाहैत छलाह।

पत्रकारिताक क्षेत्र मे जे दयनीय स्थिति अइ मैथिली मे से सभ जनिते छी। जे दू गोट पत्रिका मासिक वा पाक्षिक बहराइए तकर श्रेय कलकत्ताक किछु संस्था किछु आनठामक संस्था वा व्यक्ति विशेषक। सभ कैं अपन खर्च मे कटौती करय पड़ैत छनि आ हम त अपनहुँ तकर भुक्तभोगी छीहे। जे कोनो पत्र आर्थिक सक्त आधार पर अछियो त ताइठामक चक्रचालि अलगे। ई भिन्न बात जे ओ आवरण पर मैथिलीक प्रतिनिधित्व क लैत हो, जेना कि कहबी छैक—अपने मने हम राजा। परञ्च एहनो स्थिति मे राजेश्वर बाबू 'मिथिला भारती' सन शोध पत्रिका बहार कय अपन क्षमताक परिचय द चुकल छथि। हमरा लग मिथिला भारतीक तीन गोट अंक अइ, पता ने आरो बहार भेल हो वा नइ, परञ्च एकरा देखि पढ़ि कैं कोनो मैथिली प्रेमीक करेज सूपसन भ जेतैक से हमरा विश्वास अइ। जेहने नाम, तेहने रचनाक संकलन संपादन। राजेश्वर बाबूक दृष्टि आ क्षमताक प्रमाणस्वरूप एकरा देखल जा सकैछ। संगहि जे कोनो भाषाक शोध पत्रक पांती मे एकरा सगौरब राखल जा सकैछ। के कहत जे मैथिली मे नीक पत्रिका नइ अइ ?

कहबी छैक जे मुइनहिं गुन आ कि पड़यनहिं गुन। से की कोनो झूठ थिकैक! आइ राजेश्वर बाबू नइ छथि त हुनकर गुण मन पड़ैए, मुदा हुनक वर्तमान मे कि हमरा लोकनि उचित सम्मान द सकलियनि ? हमरा लोकनिक सङ विडम्बना रहलए जे अपन लाल कैं अपनहि नइ चिन्है छी। या त केओ दोसरक चिन्हओला पर किंवा ओकर परोक्ष भेलाक बाद ओकरा सँ परिचित होइ छी। से बुद्ध, जैन, विद्यापति, भोला लाल दास, राजकमल चौधरी वा राजेश्वर झा केओ भ सकै छथि।

नीति छैक जे विगत पर पश्चाताप कय लाभे की ? भोरक हेरायल जँ साँझतक घुरि आबय त हेरायल नइ कहाओत। तैं आबो हमरा लोकनि जँ जागि जाइ त बहुत काज भ सकैए। राजेश्वर बाबूक प्रति सब सँ पैघ श्रद्धांजलि होयत हुनक सपना कैं साकार केनाइ—मैथिली साहित्यक भण्डार के भरनाइ, मिथिलाक गौरवशाली सांस्कृति परम्परा के विश्वक समक्ष रखनाइ, मैथिल-मिथिला-मैथिलीक हेरायल परिचय कैं पुनः स्थापित केनाइ। भूत जँ गौरवशाली छल त भविष्य आरो बेसी गौरवशाली भ सकैछ जँ वर्त्तमानक उपयोग बुद्धिमत्तापूर्वक कयल जाय। जे दीप प्रकाश दैत हो, ताइ मे तेल कमने तेल देब आवश्यक, मात्र टेमी उसकेने काज नइ चलत। दीप त अपन धर्म अबस्से निमाहत अन्त तक जरैत प्रकाश बिलहबे करत, परंच समय सँ पूर्वे मिझेबाक सम्भावना तैं रहबे करत। राजेश्वर बाबू मैथिली साहित्य-आङनक ओहने दीप छलाह जे असमये मिझा गेलाह। आब त स्मृतिटा अवशेष अइ।



(१९७८)

प्रबोध बाबू

४ सितम्बर १९६६। सियालदहक नेताजी इंस्टिच्यूट हॉल। मैथिली रंगमंचक पहिल नाटक। कलकत्ताक मंच पर हमर पहिल पदार्पण। दोसर दृश्य मे पहिल बेर अल्पकालिक उपस्थिति। मंच सँ निष्क्रान्त होइत छी त देखैत छी ''विंग'' मे प्रबोध बाबू ठाढ़—''बहुत सुन्दर भ रहल अछि। आवाज कनेक तेज करू, पाछा मे नीक जकाँ नहि सुनाइ पड़ैछ। कने आगू बढ़ि जाइ......।'' आश्वस्त भेलौं। प्रबोध बाबूक दूटा शब्द—बहुत सुन्दर—हमर साहस आ उत्साह के जेना द्विगुणित क देने हो। ओना हमरो सँ बेस आश्वस्त-उत्साहित जेना उएह बुझि पड़ला। प्रतिष्ठाता मे सँ जे छला रंगमंचक। नाम रहनु वा नहि। हमरो नाम त नहिञे छल सदस्यक खाता मे। किन्तु वास्तविकता त इएह थिक जे संघक विभाजन कलाकेन्द्रक विभाजनक कारण छलैक आ अखिल भारतीय मिथिला संघक सदस्य, समर्थक लोकनि कलाकेन्द्र सँ पृथक भ मैथिली रंगमंचक गठन कएलनि, जकर ओ नेता छलाह। अपन सार्विक सफलताक लेल ई नाटक कलकत्ता रंगमंचक इतिहास मे मीलक पाथर प्रमाणित भेल। संयोग एहन जे नायक-नायिका (चन्द्रकला)क संगहि नाट्यकारोक ई प्रथमे नाटक छलनि। तहिना नव छली आरती सन्याल जे मैथिली मंचपर अपन एकमात्र उपस्थिति रहितौं अविस्मरणीय अभिनयक हेतु सदा-सर्वदा स्मरण कएल जेती। बाबू साहेब चौधरी, शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, शिशिर दास, विलीन दास, सुनील दास, मोहन चौधरी, जोगेन्द्र झा, वीणा राय, वीणा सेन सन प्रतिष्ठित कलाकारक संग नवकलाकारक अभिनव समन्वय-सामंजस्य एहि नाटक मे देखल गेल छल।

उत्साहित ओहो छला आ उत्साहित हमहूँ छलौं। परंच ओ जतए मंचक सार्विक सफलता सँ आनन्दित-उत्साहित छला, हम व्यक्तिगत सफलता सँ। पूर्वहि कहि आयल छी जे कलकत्ताक मंचपर ई हमर पहिल अभिनय छल। आरंभिक रिहलसल मे हमर 'साइनेस'' चेहराक ''स्टिफनेस'' प्राय: चर्चाक विषय होइत छल आ कएक गोटे त हमरा एकदमे ''अनफिट'' घोषित क चुकल छलाह। नायकक भूमिका मे अभिनय करबाक आकांक्षीक अभाव थोड़बे रहैत छैक। परंच निर्देशक प्रवीर मुखर्जी—कोनो चेंज होबे ना............रामलोचन कोरबे............भालो कोरबे.....।'' भालो—अर्थात् नीक अभिनय हमर अबस्से भेल जे प्रबोध बाबू सेहो कहलनि आ भविष्यक हेतु नायकक भूमिका हमरा लेल सुरक्षित भ गेल। यद्यपि प्रबोध बाबूक कथन सत्य सँ बेसी उत्साहबर्द्धक छल जेना ओ आनो कलाकार लोकनि के उत्साहित करैत रहैत छलाह। वस्तुत: ओ हॉलक विभिन्न भाग मे जा-जा

देखैत-सुनैत छला आ "विंग" मे आबि एक-एक कलाकार के सलाह दैत छला, प्रेरित-प्रोत्साहित करैत छला—जे बात हमरा बहुत बाद मे ज्ञात भेल। हुनक ई बात-व्यवहार निश्चिते नाट्य-मंचक प्रति हुनक अगाध आस्था-विश्वास, अपरिसीम स्नेह-सद्भावक परिणाम छल। प्रबोध बाबू छला मैथिली आन्दोलनक नेता। संभव थिक जे केवल भाषण सुनैक लेल लोक जुटायब आ तकरा घंटो बान्हि के राखब सहज-संभव नहि। नाटक लोक रंजनेक नहि, लोक शिक्षाक सेहो सभ सँ सहज-सरल आ समर्थ माध्यम थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे कलकत्ता नाट्य-मंचक इएह पृष्ठभूमिओ रहल-ए। एहू परिप्रेक्ष्य मे प्रबोध बाबूक भूमिका अविस्मरणीय। मंचोपयोगी नाटकक अभाव देखि ओ बंगला, हिन्दी, फ्रेंच सँ अनुवाद केलनि जकर सफलता पूर्वक मंचन भेल। जे हेतु कोनो विधाक विकास केवल अनुवादेक बलपर संभव नहि, ओ मौलिक रचना दिस अगुएला आ प्रस्तुत भेल "हाथीक दाँत"। कलकत्ता रंगमंचक विमर्श सँ स्पष्ट अछि जे अनुवाद हो वा मौलिक रचना—सूत्रधार धरि प्रबोधे बाबू थिकाह।

कलकत्ता मैथिली आन्दोलन के बहुत किछु देलक मुदा मैथिलक अपन कोनो निश्चित ठेकाना-पता नहि द सकल। तें कोनो बैसार हो वा नाटकक रिहलसल—स्थान लेल औनी-पथारी। हमरा लोकनि प्रबोध बाबूक लेक गार्डेन्सक मकान मे रिहलसल करैत छलौं। ४ मई १९७५ के गंगेश गुंजनक "आइ भोर" महेन्द्र मलंगियाक "नसबन्दी" आ "लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत" सेहो एहिठाम अभिनीत भेल जे मैथिली नाट्य-मंचक इतिहास मे एगो नवारंभ छल आ चेम्बर ड्रामाक रूप मे ख्यात भेल। "मैथिली रंगमंच"क कतेको अभिनव प्रयास मे एकटा इहो छल जे मंचित होइबला नाटक प्रकाशित कैल जाइत छल आ टीकसक संग देल जाइत छल। एक टाकाक टीकस कीननिहार मात्र नाटक देखि सकैत छला किन्तू दू टाका बा बेसीक टीकस कीननिहार के एक प्रति पोथी मुफ्त देल जाइत छलनि। परिणामतः पोथी मिथिलाक गाम-गाम धरि बड़ सहजताक संग पहुँचि जाइत छल आ मंचितो होइत छल। नाट्यान्दोलनक एहि अध्यायक पृष्ठभूमि मे सेहो प्रबोध बाबूक प्रेरणा-प्रयास के अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ।

आइ सँ प्रायः सतावन वर्ष पूर्व एक युवक मिथिलाक पूर्वांचल सहरसा जिलाक सहमौरा गाम सँ कलकत्ता आयल छल। सम्पूर्ण मैथिल भाव-स्वभाव, भेष-भूषा। उद्देश्य—उच्चशिक्षा। संग मे बिहार विश्वविद्यालयक संस्कृत स्नातकक प्रमाणपत्र। साहित्यालंकार आ साहित्यरत्नक प्रमाणपत्र विशेष संयोजन। इएह युवक १९५० मे कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ हिन्दी मे एम०ए० करैछ, स्वर्ण-पदक प्राप्त करैछ आ फेर लागि जाइछ अध्यापन मे। चारूचन्द्र कालेज, जयपुरिया कालेज

आ अन्त मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिन्दीक विभागाध्यक्षक पद के सुशोभित करैछ। अध्यापनक समानान्तर चलैत रहैछ अध्ययन। कम्पेरेटिभ फिलोलोजी, पालि आ परसियन मे एम०ए०। "हिन्दी खड़ी बोली और मानक मैथिली : तुलनात्मक अध्ययन" पर मैथिली मे मगध विश्वविद्यालय सँ तथा "वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मे रस सिद्धान्त" पर हिन्दी मे कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ डी०लिट०क उपाधि। कलकत्ते विश्वविद्यालय मे हिन्दीक संगहि पालि, परसियन आ कम्पेरेटिभ फिलोलोजीक अल्पकालिक अध्यापन। विशाल संख्यक कृती छात्र-छात्राक आदरणीय यशस्वी अध्यापक १९९० मे सेवा निवृत होइत छथि। रहि जाइछ एगो विरल-विलक्षण दृष्टान्त, एगो अविस्मरणीय नामह्रप्रो० प्रबोध नारायण सिंह। जानि ने हिनका संग आ तकर पहिने वा पश्चात् कतेक मैथिल एहि महानगरक जन-अरण्य मे आबि आलोपित भ गेला!

१९४२ क स्वाधीनता सेनानी, विदेशी शासकक हेतु "मोस्ट वाण्टेड टेरोरिस्ट" जकरा लेल "शूट-एट-साइट"क आदेश निर्गत भेल छल, स्वाभाविके कलकत्ताक क्रान्तिभूमि ओकरा लेल तीर्थस्थान प्रमाणित भेल। शिक्षा साहित्य-आन्दोलनक अभिनव संगम। बंग संतानक भाषा-भूमि-प्रेम-पयोधिक उष्ण संस्पर्श एहि क्रान्तिधर्मी-मैथिलीक देह-मन मे एक नव चेतनाक संचार कएलक। चिन्तनक सही दिशा ओ नव आयाम देलक। भारत स्वाधीन भ गेल छल, परंच मिथिला! स्वाधीन भारतक मानचित्र पर ओकर नामोनिशान नहि। भारतक संविधान मे मैथिलीक स्थान नहि। अकल्पनीय-असहनीय स्थिति। एकर अनतिविलम्ब अवसानक अनिवार्यताक उपलब्धि-आकुलता प्रबोध बाबू के मिथिला संघक प्रतिष्ठाता-नेता बना देलक। मैथिली आन्दोलनक पताका उठौने कलकत्ता सँ मिथिलाक विभिन गामक यात्रा चलैत रहल अनवरत। संग छलथिन बाबू साहेब चौधरी, देवनारायण झा, शुकदेव ठाकुर, मौजे पाठक, वैद्यनाथ झा........वेश पैघ पांति। गनगनाइत रहल गगनभेदी नाराह्रहमरा चाही मिथिला राज्य, मिथिला राज्यक निर्माण हो, मैथिली राजभाषा हो, शिक्षाक माध्यम मैथिली हो, साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक स्थान हो, संविधानक आठम अनुच्छेद मे मैथिलीक नाम हो.......। अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन, कलकत्ता मे मैथिलीक प्रतिनिधि भाग लेथि, हुनका नेहरूजीक समक्ष अपन वक्तव्य उपस्थापित करबाक अवसर भेटनिह्रव्यवस्था भेल। पन्निकर कमीशन लग मिथिला राज्यक लेल स्मारपत्र देल गेल। साहित्य अकादेमी, संविधान मे मैथिलीक लेल कतेको पत्राचार, स्मारपत्र, सभा-समावेश। १९७२ मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे "इला"क थिसिस पर प्रो० कल्याणमल लोढ़ा अडंगा लगओलनिह्रमैथिलीक स्वतंत्र सत्ता के चुनौती देलनि। चारू नाल चित्त भ गेला। ई छला प्रबोध बाबू।

कोनो आन्दोलनक व्यापकता ओकर प्रचार-प्रसार पर निर्भर करैत छैक आ ताइ लेल मिडियाक सहयोग किंवा अपन मुखपत्रक प्रयोजनीयता के अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ। एहि उपलब्धिक प्रतिफलन थिक "मिथिला दर्शन" मासिक पत्रक प्रकाशन (१९५३) जकर संस्थापक संपादक भेला प्रबोध बाबू। एहि पत्रिका के कलकत्ताक पहिल मैथिली पत्रिका तथा सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका होयबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। आजुक "मैथिली दर्शन" जँ कही एकरे नवरूप थिक त अनर्गल नहि होयतं। पत्रक उद्बोधन वाक्य जे सभ अंक मे नामक नीचा छपैत आयल अछि से थिक कविवर सीताराम झाक ह्र

अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने

पत्रिकाक उद्देश्य, ओकर स्वर-स्वरूपक अंदाज एहि उद्बोधन वाक्य सँ लगाओल जा सकैछ। पत्रक नाम सतत मिथिलाक्षर मे। पत्रिकाक नियमित प्रकाशन लेल "मिथिला दर्शन प्रा० लि०" बनाओल गेल छल।

मैथिली आन्दोलन मुख्यतः भाषा आन्दोलन थिक आ एकर सार्थकता-सफलताक हेतु समृद्ध-सक्कत साहित्यिक आधारक होयब सर्वथा अपेक्षित। एही बात के ध्यान मे रखैत अखिल भारतीय मिथिला संघ "दर्शन"क संगहि पोथी प्रकाशनक दिशा मे अग्रसर भेल। प्रो० हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी, मणिपद्म, प्रो० मायानन्द मिश्र, ललित, प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, प्रवासी साहित्यालंकारक संगहि अनेको नवोदित रचनाकारक पोथी प्रकाशित कएल गेल जकर संख्या शताधिक त होयबे करत। एही प्रक्रिया के बलवती करबाक उद्देश्य सँ "लोक साहित्य परिषदक" स्थापना भेल छल। प्रबोध बाबू स्वयं साहित्यकार छला आ कलकत्ता अयबा सँ पूर्व हिन्दी मे हुनक दू गोट पोथी "लसिका" (काव्य, १९४६) आ "आजाद हिन्द फौज" (कथा १९४७) प्रकाशित भ चुकल छल। एहिठाम हुनक मैथिली कविता पोथी "जयन्ती" (१९६८) "हनुमानाष्टक" (१९६९) आ "वैजयन्ती" (१९७६) मे प्रकाशित भेल। नाटकक चर्च हम पहिनहि क चुकल छी। कर्तुल-एन-हैदरक उर्दू पोथीक मैथिली अनुवाद "पतझड़क स्वर" लेल २००२ मे हिनका साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कएल गेलनि।

प्रबोध बाबू हमर विभूति छलाह। हिनक विराट, विरल-विलक्षण व्यक्तित्व ओ कृतित्व मादे जते कहल जाय, थोड़ होयत। हमरा लेल त आर कठिन जे की लिखी आ की नहि। कतय सँ शुरू करी आ कतय शेष। कारण हम हुनका बड़ लग सँ देखने छियनि, बड़ बेसी देखने छियनि। हुनके भाषण सुनि ज्ञात भेल जे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली छैक। पी०यु० मे हिन्दी रखने रही से छोड़ि बी०ए० मे

मैथिली राखल। सोचै छी त छुन्ता लगैत अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ मे वा मैथिली रंगमंच मे कहियो काल मतान्तर भ जाय, परंच से मतान्तर कहियो मनोमालिन्यक कारण नहि बनल। दोसरे दिन जँ बाट-घाट कतौ भेटितथि त पूर्ववत सहज-सौम्य व्यवहार। वयस मे हम हुनका सँ बहुत छोट, परंच नमस्कारक हेतु पहिने हुनके हाथ किएक उठि जाइन से बहुत बाद मे बोधगम्य भेल। अवसान सँ वर्ष दू-एक पूर्व भेंट करय गेल छलौं। संग बिताओल कतेको अविस्मरणीय क्षणक, आन्दोलन, नाट्य-मंचक चर्च करैत ओ भावविहवल भ जाथि आ अबोध शिशुवत कानय लागथि। एहि सँ पूर्व एतेक "सेंटिमेंटल" हुनका नहि देखने छलियनि।

कहल जाइछ जे जाइ स्थान पर कोनो मनीषीक पदार्पण होइछ ओ स्थान पवित्र भ जाइछ। जे स्थान एहन मनीषीक साधनास्थल हो तकरा की कहबै? १६२/ए/१३२ लेक गार्डेनसक मकान प्रबोध बाबूक साधनास्थल छल। अपन समस्त परिवार के मातृभाषा मैथिली मंत्र सँ दीक्षित कएनिहार विरल व्यक्तित्व, महत् मनीषी छला प्रबोध बाबू। आइ लोक साहित्य आ विशेष के लोकगीतक चर्च भेने जे नाम सभ सँ पहिने स्मरण होइछ से थिक हिनक सहधर्मिनी अणिमा सिंहक। मैथिली महिला लेखनक चर्च हो आ इला रानी सिंहक नाम नहि आबय से कोना संभव भ सकैछ! समकालीन नाटक किंवा कविताक चर्च भेने उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क नाम निश्चिते पहिल पाँति मे लेल जायत। आइ "प्रबोध साहित्य सम्मान" मैथिलीक सर्वाधिक प्रतिष्ठित सम्मान थिक आ एहि क्रम मे हिनक छोट बालक अजय सिंह आ भातिज अभय सिंह सेहो मैथिली जगतक हेतु अपरिचित नहि अपितु आदरणीय नाम बनि गेल अछि।

मन पड़ैत अछि हुनकर ओ सौम्य-सुन्दर स्वरूप। उज्जर दप-दप धोती-कुर्ता। बेसी सँ बेसी पैरे चलबाक अभ्यास। स्वास्थ्यो प्रायः ठीके-ठाक छलनि। परंच जुन, १९९५ मे जेठ संतान इलाक दुखद अन्त जेना तोड़ि देने होइन। आ हमरा त लगैत अछि जे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपें इएह आघात हुनक बीमारीक (Cerebral Hemorrhage) क कारण भेल। एक सँ एक डाकडर दवाइ, अदभुत् अकल्पनीय स्नेह-सेवा-शुश्रुषा परिवारक, हुनका स्वस्थ्य नहि क पओलक।

"दर्द मिन्नत-कशे-दवा न हुआ।"

२० मार्च के जखन अजयक फोन आयल जे प्रबोध बाबू नहि रहला त सत्यतः हमरा दुख नहि भेल। प्रायः एहने स्थिति हमर यात्रीजीक मृत्यु-संवाद सुनि भेल छल। १९९८ सँ प्रबोध बाबू अस्वस्थ्य छला आ स्थिति क्रमशः अधलाहे होइत गेल छलनि। मृत्युक किछु दिन पूर्वक जे स्थिति देखने छलियनि से कहल नहि जाय आ हमरा सन लोक जे हुनक पूर्वक स्थिति देखने अछि तकर स्थितिक कल्पना सहजहिं

कएल जा सकैछ। अपन एहन विभूतिक दर्शन आब संभव नहि होएत से बात अबस्से कचोटैत अछि परंच हुनका जे कष्ट सँ मुक्ति भेटि गेलनि से बात आश्वस्त करैत अछि।

मृत्यु
सतत नहि होइछ दुखद
मृत्यु थिक वरदान
शान्तिक दूत
कैंसर सन व्याधिक
असह यंत्रणा सँ छटपटाइत
लोकक लेल
मृत्युए थिक महाऔषधि
मृत्युए थिक मुक्ति

आ जेना गालिब कहै छथि —

इशरते-कतरा है दरिया मे फना हो जाना
दर्द का हद से गुजरना हे दवा हो जाना

रबीन्द्र कहै छथि —

मरन रे
तुँहुँ मम श्याम समान।
मेघ वरन तुझ, मेघ जटाजुट,
रक्त कमल कर, रक्त अधर पुट,
ताप विमोचन करुण कोर तव
मृत्यु अमृत करे दान
तुँहुँ मम श्याम समान।

ओना वास्तविकता त इएह थिक जे प्रबोध बाबू शरीर सँ भनहि हमरा लोकनिक मध्य नहि रहथि, अपन कृतिक माध्यमे त रहबे करता, आ से ताबत धरि रहता जाबतधरि मिथिला-मैथिल-मैथिली रहत। तत्काल अपन एहि मनीषी के नमन, शत-शत नमन।।

(२००५)



राजा तेजल नगरिया

आचार्य-प्रवर रमानाथ झा कलकत्ता कैँ मैथिलक तीर्थस्थान कहने छथि। स्वाभाविक छैक कलकत्ता के तीर्थ स्थान बंनेबा मे एक नहि अनेको व्यक्तिक योगदान अवदान रहल होएतैक। परंच खेदक विषय जे एहि समस्त व्यक्तिक नामोटा सँ हमरा लोकनि अपरिचित छी। जे किछु नाम हमरा लोकनि जनैत छी ताइ मे एक आर नाम जोड़ब आवश्यके नहि अनिवार्यो। ओ नाम थिक प्रभास कुमार चौधरीक। जोड़बाक बात हम एहि दुआरे लिखलए जे रमानाथ बाबूक उक्त कथनक बहुत पश्चात् प्रभास जीक पदार्पण एहि महानगर मे भेल। बेसी दिन ओ रहबो नहि केला। तथापि प्रभास जीक ओ क्षणस्थायी अवस्थानहु कैँ बाद द कलकत्ताक इतिहास, मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सन्दर्भ मे, पूर्ण नहि भ सकैछ।

२८-२९ दिसम्बर १९९६ कैँ प्रभास जी युवा लेखन गोष्ठीक बैनर मे 'सगर राति दीप जरय' तथा राजकमल जयन्तीक आयोजन केने छलाह। एहि आयोजन मे पटनाक प्रायः समस्त साहित्यकार आएल छलाह। ई लोकनि पार्क स्ट्रीटक कवीन्स मैन्सन मे राखल गेल छलाह। दू दिन तँ बेस हुलिमालि रहैक। तेसर दिन, अर्थात् ३० ता० के दुपहरियाक एक बजे डॉ० रमानन्द झा 'रमण' आ डॉ० अक्कू हमर कार्यालय पहुँचलाह आ फेर हम तीनू गोटे क्वीन्स मैन्सन पहुँचलहुँ। प० श्री गोविन्द झा, भाई साहेब, कुलानन्द मिश्र, डॉ० शैलेन्द्र कुमार झा, डॉ० देवकान्त झा.....गप-शपक क्रम शेषे भेनिहार नहि। फेर जुमला प्रभास जी आ हुनके आग्रह पर आरंभ भेल कविता पाठक कार्यक्रम। वस्तुतः दु दिना आयोजन रहितो काव्य-पाठक कोनो आयोजन नहि रहैक। वेस विलक्षण आयोजन रहलैक ई। तत्पश्चात् सभ के गाड़ी पकड़ैक रहनि। हावड़ा जा-गाड़ी पर चढ़ा हमरा लोकनि आपस भेलौं। हमरा लोकनि अर्थात् हम आ नवीन जी।

१८ जनवरी १९९७ के ऑफिस सँ घुरला पर एगो पोस्टकार्ड टेबूल पर राखल भेटल। पढ़य लगलौं ह्र ''प्रिय भाइ, हम यात्रा भीरू लोक छी। आर्थिक असुविधा सेहो रहैछ। तँ साहित्यिक आयोजनो मे अधिकांशतः नहि जा पबैत छी। संयोग सँ कलकत्ता जाय पड़ल आ अहाँ सँ भेंट भेल। अहाँ सँ भेंट हमरा कलकत्ता यात्राक अभिलषित उपलब्धि लगैछ। अहाँ के देखि गप्प कऽ आ रचना सुनि हमर ई मान्यता आर दृढ़ भेल जे जीवन आस्था आ रचना मे आत्मीय सम्बन्ध होइछ। अहाँ सँ भेट पूर्वो मे भेल छल, मुदा अहाँ कैँ जनबाक अवसर एहि बेर भेटल।

अहाँक अपूर्वाक सम्बन्ध मे अगिला पत्र मे लिखब। ताबत पोथीक प्रति लेल आभार मात्र व्यक्त करैत छी।

आशा जे सपरिवार स्वस्थ तथा प्रसन्न छी। मोन राखी। पत्र दी। सस्नेह।

—कुलानन्द''

आ एहीठाम स हमरा आ कुला भाइक बीच पत्राचारक क्रम आरंभ होइछ आ हुनकर बात त नहि कहल जा सकैछ, परंच हमरा हुनका सम्बन्ध मे बेसी स बेसी जनबाक अवसर प्राप्त भेल जे विषय-वस्तु हुनक रचनाक माध्यमे नहि जानल जा सकैत छल। कहबाक प्रयोजन नहि जे हुनक कविता हम पहिनहुँ बेस आग्रहक संग पढ़ैत छलौं। कुला भाइक काव्य-संवेदना आ पत्रक आत्मीयता मे एगो अद्भुत सामंजस्य हमरा भेटैत रहल अछि। हुनक काव्यक पंडितक भाषा आ जनवादी स्वर तेबर हमरा एक दिस जँ आश्चर्यचकित करैत रहैए त दोसर दिस आकर्षितो आ तैं जे बात हमरा सम्बन्ध मे ओ लिखै छथि— 'जीवन, आस्था आ रचना मे आत्मीय संबंध' उएह बात हुनको सम्बन्ध मे हमरा लिखबाक इच्छा होइत अछि।

हमरा जनैत यात्री आ राजकमल चौधरी दुनूक परम्पराक विकास कुला भाइक कविता मे देखल पाओल जा सकैछ। ई एगो विडम्बना कही वा षड़यंत्र जे कुला भाइक कवि कैं आलोचक लोकनि हुनक चिन्तक समीक्षक सँ झूस क कैं देखैत कहैत रहलाह। एहि मे कोनो संदेह नहि जे कुलाभाइ एक विवेकशील चिन्तक छलाह, दृष्टि सम्पन्न समीक्षक छलाह। सृजनशील सम्पादक छलाह, अनुवादक छलाह आ एहि सब सँ हुनक कवि सत्ता प्रभावित छल, परंच वाधित त कथमपि नहि। हम त कहब जे ओ मूलतः कवि छलाह। ओना कविता त बहुतो लिखैछ, परंच आवश्यक नहि जे सब कविए हो। एहिठाम हम हुनक आर एक पत्र अवलोकनार्थ देबय चाहैत छी जे ओ ५ अगस्त ९९, अपन जेठ बेटाक जन्म दिन पर हमर आशीर्वादक कामनाक संग लिखने छथि—

प्रिय भाइ, पाओल पत्र तोहार
सौहार्दक प्रस्तर-लेख
ममताक कोमल मोहर
तोहर पत्र पढ़ि अकस्मात
देथा केर ओ पाँती मोन पड़ल
बड़ मानवीय विवेक संग जाहिमे
कहने छथि ओ ई बात
जे आनक दुःखकैं अपना सँ छोट बूझब
दुनियाक सँभसँ पैघ थीक अपराध

प्रगतिशील नजरि सँ ई सोच
सुविधापूर्वक प्रतिगामियो कहल जा सकैछ
खेद अछि हमरा अपन पूर्व विलाप पर
हमर स्वभाव अछि जे
प्रकृति सँ छी हम लता-धर्मी
गाछक आत्म-विश्वास
हमर स्पृहाक वस्तु रहल अलबत्त
तें हमरा कायर कहब
कोनो दृष्टि सँ प्रायः होयत नहि उचित
लोकक संग-संग ठाढ़ होयब
कि ढनमनाक खसि पड़ब
एकतानताक नजरि सँ
भिन्न-भिन्न बात नहि होइछ
आशा जे प्रसन्न होयबह
जीवनक माहुरक अगिला कप
स्वभावतः उठयबा लेल होयबह प्रस्तुत
चीयर्स! चीयर्स!!

स्नेहाधीन कुलानन्द

कुला भाइ किन्तु प्रसन्न नहि छलाह ओ चिन्तित व्यथित छलाह। कवि ओहिना भावुक होइछ, संवेदनशील होइछ आ ताहू मे कुला भाइ सन लोक। परंच ई बूझि लेब जे हुनक चिन्ता-व्यथाक कारण व्यक्तिगत छल, कथमपि उचित नहि। एहि मे संदेह नहि जे कुलानन्द मिश्र सन कविक जे सम्मान मर्यादा होएबाक चाही से त दूरक बात भेल, वास्तविकता त इएह थिक जे सुनियोजित ढंग सँ हुनक अवमानना अवहेलना कएल गेल आ पटना सन शहर मे रहितो ओ असगर छलाह। तथापि हुनक चिन्ता व्यथाक कारण छल हुनक आदर्श, जाइ लेल ओ प्रतिवद्ध छलाह। एहिठाम हम आर एगो पत्र देमय जा रहल छी जे ओ २५ जून ९९ के लिखने छथि।

प्रिय भाइ,

हम इम्हर अप्रैल तृतीय सप्ताह सँ जूनक प्रथम सप्ताहधरि कतोकठाम बौआइत रहलहुँ। मोनक लेल शांतिक जोगाड़ असंभव देखि पुनः पटनाक पुरना भट्ठी मे घुरि अयलहुँ अछि।

हम एहिठाम साहित्यिक समाज लेल खाहे अछूत खाहे अध्यातव्य भऽ गेल छी। ई हमरा नीके लागि रहल अछि। कम सँ कम महंथ, ध्वजाधारी कि 'ज्ञान लब

दुर्विदग्ध' लोकनि सँ वैचारिक धमर्थन सँ पिण्ड छूटल अछि। ओहुना जखन आन्हरे सभ अपना केँ दृष्टि सम्पन्न मानय तऽ नजरि वला केँ अपना केँ सुरक्षा दृष्टि सँ निपट्ट मानि लेबाक चाही।

बाबा पर मैथिली मे कोनो स्तरीय प्रकाशन संभव होयत, हम एकर आशा आब त्यागि देल अछि। हमरा सभक बहुतो 'प्रगतिशील' संगी मोने-मोने सुमन, मधुप आ अमरजीक पूजक छथि। साहित्य अकादेमी पर अखनो ककर वर्चस्व छैक? बाबा केँ के पूछत ? मोन राखी। प्रसन्न होयब। सस्नेह—

कुलानन्द

उल्लेखनीय जे बाबाक जखन मृत्यु भेलनि तखन हम पटने मे रही। हम आ अग्निपुष्प कुला भाइक डेरा पर जा बाबा पर एको नीक अंक बहार करबाक योजना बनओने रही। भाइ अग्पिुष्पक विचार छलनि जे 'संवाद'क आरंभ बाबाए स हो। के की लिखता सेहो प्रायः ठीक क लेल गेल, परंच योजना सफल नहि भ सकल।

कुलाभाइ अपन प्रायः पत्र मे कोनो ने कोनो कवि केँ 'कोट' करैत रहलाह। कहियो देथा त कहियो पाश। कहियो आलोक धन्वा आ बेसी काल गालिब। परंच जानिने गालिबक ई पंक्ति हुनका मोन छलनि वा नहि—

हमको उनसे वफा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफा क्या है

मोन त अबस्से छल होयतनि परंच कोमल-मोन पर लागल चोटक पीड़ा के बर्दास्त करबा मे भरिसक ओ सक्षम नहि भ सकल। कुलाभाइक व्यथा बढ़िते गेल। आब आगाँ सुनू'क प्रकाशनक क्रम मे ओकर भूमिका लिखेबाक लेल कम फिरीसान नहि होमय पड़ल छलनि हुनका। अपन पत्र मे हम लिखने छलियनि जे कुलानन्द मिश्रक कविता के भूमिकाक प्रयोजने ने छैक आ तथापि जं ओ देबै चाहथि त स्वयं लिखथि। आ सैह भेल। पोथी छपल किन्तु एहन विलक्षण पोथीक समुचित समादर नहि भेल। ढंगक समीक्षाओ कतौ नहि छपलैक। स्वाभाविके पोथी प्रकाशनक प्रसन्नता क्षण स्थायी भेल आ प्रकारान्तर सँ चिन्ता व्यथा वृद्धिक कारण।

इशरते कतरा है दरिया मे फना हो जाना
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना

ह्नगालिब

२४ मई केँ हृदय गति रुकि गेलनि आ ओ समस्त चिन्ता-व्यथा—सँ मुक्त भ गेलाह। राजा तेजल नगरिया, बसओ डोम चंडाल।

(२००१)



भाइ दोषी

गोड़ लगै छी भाइ,

आशा अछि ई पत्र अपने केँ स्वस्थ आ दनदनाइत देखत। अहिना आजीवन धुधुआइत रही—तदर्थ हमर मंगलकामना।

अहाँक पत्र आ ''देसिल बयना'' भेटैत रहल अछि। मुदा भाइ! अपना केँ अपराध बोध सँ तेना ने ग्रस्त भेल बुझैत छी जे बुझाइत अछि, बिनु कहले रहि जायत – बिनु लिखने रहि जायत। प्रभु इच्छा।

भाइ कार्यव्यस्तता आ सम्पर्क हीनताक कारणें किछु कऽ नहि पबैत छी। देखी। ओना वचन दैत छी ''देसिल बयना'' केँ हमर रचना कर्मक ज़खन आवश्यकता होएतैक सादर भेटैत रहतैक।

रचना पठा रहल छी – भाइ! जँ 'देसिल बयना'क स्वभावक अनुकूल नहि हो तऽ एकर उपयोग नहि करी। ओना हम सोचैत छी एखन अहू सँ तिक्ख आ उष्ण रचना (जेहन अहाँ सभक रचना होइत अछि)क आवश्यकता देश आ समाज केँ छैक, मुदा जाहे राजनीति! जखन मुँह केँ जाबि देल जाइत छैक, तखन कखनो साँस लेब सेहो कठिन भऽ जाइत छैक।

एकटा बात, 'देसिल बयना'क बीस प्रति पठयबाक आग्रह कएक बेर कऽ चुकल छी। की बात! जँ सुविधा हो तऽ बीस प्रति पठाउ ने मासे मास।

कलकत्ताक तमाम समानधर्मा केँ हमर जय मैथिली!

अपनेक : उपेन्द्र दोषी

१२-९-१९८२क लिखल एहि पत्रक संग भाइ दोषी तमाम अग्निजीवीक नाम एकटा शारदीय—समाद पठौने छलाह, जे शारदीय 'देसिल बयना' मे प्रकाशित भेल छल। कविता एना छल—

एहि नदिया केर इएह व्यवहार।
खोलू धरिया उतरू पार

आशा करैत छी जे मैथिली साहित्यानुरागी एहि कविता सँ अपरिचित नहि होएताह कारण भाइ दोषीक एकमात्र काव्य-संकलन 'यंत्रणाक क्षण मे' मे सेहो प्रायः एकर समावेश भेल अछि। ओना निस्तुकी एहि दुआरे नहि कहि पायब कारण हमरा

लग जे पोथी ओ पठओने छथि ताइ मे ९ सँ २४ पेज धरि निपत्ता छैक। से जे हो। आरंभ त हम हुनक पत्र सँ कएल अछि तँ पहिने ओतै आबी।

ओना त पत्र व्यक्तिगत अछि, परंच जँ एकरा नीक जकाँ पढ़ल आ बुझल जाय त पत्र लेखकक देश-काल परिवेश, ओकर चिन्ता भावनाक सुस्पष्ट चित्र देखल पाओल जा सकैछ। वास्तविकता त इएह थिक जे कोनो सही रचनाकारक व्यथा-कथा ओकर निजी नहि भ कैं सामाजिक होइत छैक, सार्वजनिक होइत छैक आ इएह व्यथा-कथा, आशा-आकांक्षा जखन कथा, कविताक रूप मे आकार लैत अछि त पाठक के ओ अपन बात बुझि पड़ैत छैक।

पत्रक भाषा जेहन सहज आ भाव स्नेहसिक्त अछि, हमरा जनैत भाइ-दोषी एहि सँ बड़ बेसी सहज आ सिनेही स्वभावक लोक छलाह। सर्वप्रथम हुनका सँ कहिया आ कोन ठाम भेंट भेल से मनो नहि अछि—कलकत्ता, पटना किंवा दुमका......। भेंटो कमे दू-तीन खेप कलकत्ता मे दू-तीन खेप पटना मे आ एक खेप दुमका मे। परंच जहिया कहियो भेंट भेल प्रायः एके रंग। जहिया आर्थिक संकट मे रहथि तहियो आ जहिया अफसर भ गेलाह तहियो। ओहने मुहदुवर ओहने मुँहफट्ट। कोनो आवरण नहि, कोनो आडंबर नहि।

भाइ दोषीक पहिल पत्र हमरा १९७९ मे प्राप्त भेल जे २० जनवरीक लिखल थिक। एहि मे ओ प्रिय भाइ सँ संबोधित करैत छथि परंच दोसरे पत्र सँ गोड़ लगै छी भाइ! आरंभ भ जाइछ। एगो नमूना—

बोकारो
१९-०५-८१

गोड़ लगै छी भाइ,

आशा अछि ई पत्र अपने के एहिना दनदनाइत देखत। आ प्रत्येक वर्ष संतान वृद्धिक अपेक्षा पोथी वृद्धिक हेतु बल प्रदान करत।

एखन बोकारो प्रवास मे छी। २७/५ कैं मेधाहातुबुरू घुरब। अपनेक बेताल कथा भेटल अछि। हमरा दोष जुनि दी। अपनेक इतिहास हंताक पैरबी हम अकादमी धरि कयने रही। मुदा अहाँक कम उम्र अहाँक संग नहि देलक तऽ दोष ककर ?

आदरणीय मल्लिक जी कैं हमर प्रणाम कहि देवनि। भौजी के हमर प्रणाम। नेना सभकैं स्नेह।

हम छी, इएह एतऽ
उपेन्द्र दोषी

पत्रक एहन शिल्प-शैली हमरा कतौ आनठाम कहाँ नजरि पड़ल अछि। एतौ भाइ दोषी भीड़ सँ फराके छथि। (भीड़ भाइ छमा करथि) ओना त प्रत्येक व्यक्ति एक आन सँ फराक होइत अछि आ विशेष के रचनाकारक त ई परिचितिए थिकै, परंच ककरो डिबिया ल ताकय पड़ैछ आ केओ अलगट्टे चिन्हा जाइछ। भाइ दोषी दोसर श्रेणी मे छलाह—व्यक्तित्वक आधार पर, रचनाक आधार पर। कहबाक प्रयोजन नहि जे बहुतो महानुभाव के सभा संस्था मे माइक पकड़बा सँ पहिने नजरि दौड़ा लेबय पड़ैत छलनि जे लग पास मे कतौ दोषी त ने अछि।

भाइ दोषी अपनहि अपन नाम (वा पदवी) दोषी रखने छलाह आ एकरा वेश नीक जकाँ प्रचारित करैत छलाह, परंच हमरा लग त ओ सरिपहुँ दोषी छलाह। ओ हमरा स दू बर्खक जेठ छलाह। (प्रमाण पत्रक हिसाबे ६ बर्खक) तथापि लिखितथि —भाइ गोड़ लगै छी।

आपत्ति केला पर करजोड़ि कहितथि—भाइ दोषी! हुनक ई शिशु सुलभ व्यवहार देखि हँसी रोकि राखब कहाँ संभव होइत छल। अनका लेल संतान वृद्धिक अपेक्षा पोथी वृद्धिक कामना कएनिहार जँ अपना बेर ई बात बिसरि जाय त से दोषी नहि त आर की। १९६० सँ जे व्यक्ति कविता कथा लिखैत हो, पत्र-पत्रिका मे छपैत हो आ चर्चित होइत हो तकर पहिल स्वतंत्र काव्य ग्रन्थ १९९५ मे प्रकाशित हो त तकरा की कहल जाय ? आनक दोष देखनिहार देखार कएनिहारो दोषी कहबैत अछि आ एहि अर्थ मे जँ ओ दोषी छथि त हमरा अपन एहि अग्रज पर गर्व अछि। हमर त कामना अछि जे एहन एक नहि हजार-हजार दोषी मिथिला मे जन्म लेथु। एहि संदर्भ मे ओ स्वयं लिखै छथि—''समाज आ देश मे पसरल विभिन्न विसंगति सभ प्रभावित करैत अछि। इएह विसंगति सभ हमरा लिखऽ लेल बाध्य करैत अछि। आ हमर विद्रोह हमर अभिव्यक्ति शब्दक आकार ल कागत पर आबैत अछि। इएह कारण थिक जे हम दोषी यंत्रणा मे साहित्य संसार मे जीवित छी। दोषी छी। कारण विद्रोह कैं स्वर देब दोष थिक।'' (धार-३) वस्तुतः एहि दोषक कारणे भाइ दोषीक उचित मूल्यांकन नहि भेल जेना कि हुनक कतिपय समानधर्माक संग भेल अछि। अन्यथा एहन प्रखर प्रतिभा ककरो लेल ईर्ष्याक विषय भ सकैत अछि।

कविता छन्दबद्ध किंवा छन्दमुक्त, कथा एवं निबंध, तीनू विधा मे समानरूपें अपन अद्भुत क्षमताक प्रदर्शन करितो अपरिचित रहबाक कचोट भाइ दोषी कैं छलनि आ से स्वभाविके छलनि। एहि सन्दर्भ मे हुनक ई पत्र देखल जा सकैछ।

गोड़ लगै छी भाइ,

फगुआ रमनगर होएत, अहाँ लेल से भरोस अछि। अहाँक पत्र पाबि प्रसन्नता भेल अछि। 'गंधवाहक' प्रति हमरा लग उपलब्ध नहि अछि। पटना मे मोहन भारद्वाजक ओहिठाम अछि। २० प्रति कलकत्ताक मोटरी बान्हल राखल अछि।

भाइ हमरा उद्धार करू। क्यो पटना जाथि त मँगबा लेबाक व्यवस्था करू। कलकत्ता नबोनारायण मिश्र जीके लिखने रहियनि। एहन नहि होएत जे क्यो गाम दिस नहि जाइत् होएताह। प्रयास कयला सँ पोथी कलकत्ता आबि सकैत अछि। कलकत्ता आर कोना की ? हमरा त सभटा छूटि रहल अछि। ओना एहि दूई वर्ष मे चर्चा योग्य किछु नहि लिखलहुँ से बात नहि। तखन आलोचक लोकनि केँ जेहन रुचनि। सुपौलवाला सभ अहाँपर आधारित ''धार-४'' बहार कयलनि वा नहि ? हमरा बुझल नहि अछि।

पत्राचार बन्द नहि राखि भाइ।

अहूँक

उपेन्द्र दोषी

समकालीन कविता पर चर्चा परिचर्चा किंवा ओकर उचित मूल्यांकन उपेन्द्र दोषी के बाद द के किन्हुँ नहि संभव भ सकैछ। परंच विडंवना देखू जे प्राध्यापकीय आलोचनाक एक मात्र लक्ष्य ''किरानी साहित्यकार'' उपेन्द्र दोषी किरानी आलोचको द्वारा अपांक्तेय बना देल गेलाह। पोथीक अभाव त बहन्ना मात्र थिक। मैथिली मे पोथी प्रकाशनक स्थिति ककरो सँ नुकाएल नहि। स्पष्ट छैक जे बिनु पत्र-पत्रिकाक समुचित अध्ययनक मैथिली साहित्यक इतिहास लेखनो अपूर्ण रहत। ओनहुना फल्ला बाबू अपन डायरी मे कविता लिखने छलाह, तकरो उल्लेख मैथिली साहित्य मे देखले जाइत अछि। मैथिली मे ललित, राजकमल, किसुन, सोमदेव, कुलानन्द मिश्र, दोषी सभक स्थिति प्रकाशनक सन्दर्भ मे प्राय: समाने रहल अछि। महाप्रकाश, सुभाष, सुकान्तक सप्पत खाय लेल एगो क प्रकाशन अछि। साहित्यिक समालोचना, गुणवत्ताक आधार पर होइत छैक ने कि संख्याक आधार पर।

८ दिसम्बर के जखन राजनन्दन लाल दास जी सँ भाइ दोषीक देहोवसानक सूचना भेटल त सन्न रहि गेलहुँ। ओहन जीवंत लोक एना हठात चल गेलाह। अप्रीलक बाद सँ ओना पत्र नहि आयल छल। ओनहुना पत्राचारक गति प्राय: मंथरे रहैत आयल अछि। ९ ता०क सम्पर्कक बैसार ''कवि उपेन्द्र दोषी श्रद्धाजलि सभा''क आयोजनक पश्चातो जेना मन एहि बात के मानैक लेल तैयार नहि होइत छल। १३ केँ भेटल पुटुस (डॉ० प्रभात कुमार)क पत्र। अपन अग्रजक श्राद्धो मे सम्मिलित

भेल कहाँ पार लागल। परंच अग्रज वियोगक विश्वास धरि भइए गेल। पत्रक पोटरी सभ खोलय लगलौं आ एक एकटा पत्र मे, पत्रक एक-एक पाँती मे, एक-एक शब्द मे ताकय लगलौं ओ निश्छल शिशु-सुलभ मुस्कान। ८२क लिखल पत्रक पाँती ''मौन मे बहुत बात सभ अछि जे बुझाइत अछि, बिनु कहने रहि जायत बिनु लिखने रहि जायत..........।''

भाइ दोषीक मौन मे की बात सभ छलनि जे ओ कहय लिखय चाहैत छलाह से नहि जानि, परंच किछु लिखल रचना सभक संग्रह छापय चाहै छलाह से नहि पार लगलनि। अपन १० अगस्त १९९६क पत्र मे ओ लिखै छथि ''पोथी (यंत्रणाक क्षण मे) छपि गेल। डॉ० बुद्धिनाथ मिश्रक प्रयासें एक प्रति भेटल अछि। आव एकर प्रचार-प्रसार बिक्री व्यवस्था सभ अहीं सभक हाथ। हम तऽ जंगलक लोक जंगली भऽ गेल छी। संपर्क विहीन। पूँजी जे लागल अछि से कोनहुना उपर भऽ जाय। इएह इच्छा। पूँजी उपर भऽ गेला संता कथा संग्रह, ललित निबंध संग्रह आ आदिवासी संस्कृति सँ संबंधित लेख सभक संग्रह प्रकाशित करबाक हिम्मत करब। ताबत एतबे।

''धार-४''क मादे अहाँ किछु नहि लिखैत छी। की प्रगति ? केदार की कऽ रहल छथि ? एमहर हुनकर कोनो पत्र नहि आयल अछि।

हमर कविता सभक बंगला अनुवाद करा सकी अथवा काली पद कोड़ारक योजना मे सामिल क' सकी त' नीक होइत। नवीनजीक कुशल मंगल लिखी।

स्नेहाधीन : उपेन्द्र दोषी

एहिठाम लिखब आवश्यक जे पोथी प्रकाशक मे ''भूमिजा प्रकाशन'' कलकत्ताक नाम छैक आ कॉपी राइट सेहो प्रकाशकाधीन जखन कि प्रकाशनक कुल खर्च स्वयं कविकेँ बहन करय पड़ल छनि। एकरा विडम्बना नहि त आर की कहल जाय ?

एहिठाम ईहो लिखब भरिसक आवश्यक जे हमरा जखन कालीपद कोड़ारक संग सम्पर्क भेल, हुनक योजनाक पता चलल त ओहि मे उपेन्द्र दोषीक नाम नहि देखि आश्चर्य लागल। नाम त हमरो नहिञे छल आ अपन कविता हम हुनक विशेष आग्रह पर मुँहजबानी लिखा देलियनि बंगानुबादक संग, परंच, भाइ दोषीक कविता नहि जा सकलै। हम हुनका पत्र देलियनि त ओ दया बाबू (श्री दयानाथ झा) सँ ल लेबाक बात लिखलनि। हमर दयाबाबू सँ सेहो आग्रह केने रहियनि परंच अन्तधरि कविता उपलब्ध नहि भ पैबाक कारणे संग्रह मे नहि जा सकलै। कचोटक बात जे

जाहि संग्रह मे हुनक कविताक अनुवाद छपलनि, सेहो प्राय: ओ नहि देखि सकलाह। हुनक शेष पत्र जे १० अप्रील, २००१क लिखल थिक, देखल जा सकैछ।

गोड़ लगै छी भाइ,

अहाँक पत्र भेटल अछि। प्रसन्नता भेल। कहबाक लेल नव किछु नहि अछि एहिठाम। सभ-पूर्ववत।

आइ-भाइ साहेब राजमोहन जी आ डाल्टेनगंज सँ एकटा नव लेखक श्री कुमार मनीष अरविन्दक पत्र आयल अछि।

मित्र लोकनिक पत्र कहियो काल अबैत अछि। सभ क्यो स्वयं मे व्यस्त। हमरो पलखति नहि। एकटा कथा-संग्रह आ एकटा ललित निबन्ध संग्रह छपयबाक प्रयास क रहल छी। देखी

साहित्य अकादमी कलकत्ता मैथिली कविताक अनुवाद 'अनुकृति' नाम सँ प्रकाशित कयलक अछि। हमरो कविता अछि प्राय: मुदा लेखकीय प्रति पुस्तकक नहि भेटल अछि। भेटैत त नीक बात। अहाँ कलकत्ता मे छी तँ लिखि रहल छी जे पोथीक एक प्रति उपराउ ने कोनहुना।

कलकत्ताक समानधर्मा मित्र लोकनि नीके ना होएताह से विश्वास अछि।

अहूँक—उपेन्द्र दोषी

विचारणीय विषय थिक जे साहित्य अकादेमी पारिश्रमिक के कहय लेखकीय प्रति पोथी धरि पठेबाक जरूरति नहि बुझैत अछि। की आन भाषाक रचनाकारक संग एहि तरहक आचरण करबाक धृष्टता ओ क पाओत ? हम स्वयं खोज लेल त पता लागल जे पोथी मात्र कवि के पठाओल जेतनि, दोसर के नहि देल जेतैक।

भाइ दोषी बिलंवे सँ सही बहुत किछ कहय चाहैत छलाह। कविता पोथी प्रकाशनक दीर्घस्थायी यंत्रणाक उपेक्षा कय कथा-संग्रह छपओलनि। निबंध संग्रह छपबितथि। संभव नहि भेल। मैथिलीक दुर्भाग्य! पहिने कुलाभाई आ फेर भाइ दोषी, कालस्य कुटिला-गति।

भाइ दोषी चल गेलाह, परंच जाइत-जाइत ओ अपन कीर्तिक नमूना ''यंत्रणाक क्षण मे'' आ गन्धवाह'' देने गेलाह। जे हुनक समानधर्मा समकालीन लेल स्मृतिक अनमोल धरोहर, मैथिली साहित्य-भंडारक अनमोल रत्नक रूप मे अक्षुण रहत आ आगामी पीढ़ीक लेल पाथेयक काज करत। जीवितावस्था मे भनहि आलोचक लोकनि हुनका बारने रहथुन परंच जहिया कहियो समकालीन साहित्यक इमानदारी पूर्वक समालोचना कएल जायत, आशा आ आस्थाक एहि कवि कैं विद्रोहक एहि

स्वर कैं अवस्से स्मरण कएल जायत। आ जेना कि भीम भाइ लिखैत छथि ''जहिया कहियो अपन साहित्य मे क्षेत्रीय संस्कृतिक अध्ययन कएल जायत तथा नगपुरिया (आदिवासी) संस्कृतिक सफल अवतरणक कारणेँ मैथिली साहित्यक परिधि विस्तार आ समृद्धि कैं आँकल जायत, तहिया उपेन्द्र दोषी भीड़ सँ बाहर क लेल जेताह।

जहिया कहियो एहि दृष्टिएँ समीक्षा कएल जायत जे चाहे केहनो बड़का लेखक होथि हुनक रचनाक दुर्बल पक्ष कैं बिना निन्दात्मक भेने बेलागि बेरा कऽ अकाट्य तर्क द्वारा हुनक होश गुम कयनिहार मे के छथि-औवल तँ तहिया उपेन्द्र दोषी भीड़ सँ बाहर कऽ लेल जयताह।''

अपन अग्रजक स्मृति के अन्तर मे संयोगने हमरा लोकनि ओहिदिनक प्रतीक्षा मे छी, ओहने दिन अनबाक प्रयास मे छी।

(२००१)



एकटा चम्पाकली : एकटा विषधर

रूसू जुनि,
जुनि रूसू
एहि मौन कैं उपेक्षा जुनि बूझू।
सापेक्ष थीक हमर ई नीरवता
कली थिकहुँ चम्पाक
कली थिकहुँ बेलीक
मुनले अछि एखन पपड़ीक आँखि
भितरे-भितर मुदा
कुनमुनाइत अछि अगणित आशाक रेशम कीड़ा
के हमरा चीन्हत ?
के करत हमर स्वागत ?

(रूसू जुनि। विन्दन्ती)

आ एही बेदना कैं अपना अन्तर मे दबौने जीवैत रहली इला। वेदना जखन असह्य भऽ गेलनि तऽ आँखि मूनि लेलनि। कोनो उलहन-उपराग नहि कोनो आरोप प्रत्यारोप नहि।

इला शद्वक अर्थ होइछ—धरती, जल, वाणी। एहि समस्त शब्दक अर्थ गुण थोड़-बहुत अपना मे समाहित केने छली इला—अर्थात् इला रानी सिंह। विगत १३ जून कैं पचास बर्खक अवस्था मे जनिक देहावसान भऽ गेलनि।

इला सँ अन्तिम भेंट भेल छल ११ मई १९९३ के, संघक कोनो आयोजन छलै महाजाति सदन संलग्न सभागार मे। बहुत दिनक बाद भेंट तें बहुत रास गप-शप। इला भाषण देने छली। छोट-छीन भाषण। एहि सँ पहिनहुँ हुनक कतेको भाषण सुनि चुकल छलहुँ। एके मंच सँ कतेको बेर कविता पढ़ने छी। मुदा आजुक भाषण हमरा नीक लागल छल। प्रभावित केने छल। स्वभाव सँ शान्त आ मृदुभाषी त ओ सबदिने छली परञ्च एमहर हुनका मे बहुत बेसी परिवर्तन भेल छल।

मई १९९१ मे इलाक बीमारीक सूचना भेटल। परिवार मे वृद्ध पिताक स्थितिक अनुमार कय गुप्त राखल गेल छलैक। चिकित्सा चलि रहल छलैक। कलकत्ताक पश्चात ओ दिल्ली गेल छली नीक चिकित्सा उपलब्ध हेबाक आशा मे।

किन्तु ओतहु सँ निराश भऽ घुरि एली। ओना जखन हुनक घुरि एबाक सूचना नचिकेताक पत्र मार्फत भेटल तऽ सोचलों जे स्थिति मे सुधार भेल हेतनि। जनितो जे कैन्सरक कोनो इलाज नहि। ई ओ विषधर थिक जे जकरा ककरो धेलक तकर प्राणान्तहि क कैं छोड़ैत अछि। चानपर गेनिहार, पल मे प्रलय करैक शक्तिक अधिकारी मनुक्ख एहि जनमरा रोग लग कते असहाय अछि! मुदा कहियो काल पहन होइ छइ जे रोगी के सामयिक आराम भेटै छइ। ओकर जीवन रेखा कने-मने नमहर कैल जा सकैत छइ। तें जखन अणिमा जी कैं फोन कैल त इएह पुछने छलियनि-इला नीके छथि ने ? उत्तर जे भेटल से लिखबाक प्रयोजन नहि। ओ ओछैन पर पड़ल छली आ फेर कहियो उठि नहि सकली। उठली आत्मीय स्वजनक कान्हपर महाश्मशानक यात्रा लेल।

चलि त सभ जाइए। सर्वमुत्पादि भंगुरम्। एहि लोक मे जे अबैए, एक ने एक दिन जाइत अछि। गीताक आत्माक अमरताबला बात पर ककरो विश्वास नहि, अन्यथा प्रियजनक मृत्युपर लोक छाती-कपार नहि पीटैत। नोर नहि बहबैत। किन्तु जेबा-जेबा मे फर्क होइ छैक। केओ सय बरखक पश्चात् जाइछ त केओ पच्चीस पचासक अभ्यन्तरे। आ इएह असमय प्रयाण बेसी कष्टकर। परञ्च सत्य त इएह छैक जे मृत्यु केहनो कष्टकरक किएक ने हो-एकरा रोकल नहि जा सकैछ।

मृत्यु के रोकल नहि जा सकैछ आ आत्माक अमरता विश्वस्त नहि त कि मृत्युक संगहि सभ किछु शेष भ जाइछ ? नहि। कम सँ कम कृति त नहिञे। आ तें कृती लोक अपन कृति मे बहुत बहुत दिन धरि जीवैत अछि, स्मरण कैल जाइत अछि।

इला मैथिली आ हिन्दी मे एम०ए०छली। 'मैथिली लोकगीत मे समाज चित्रण' शोधपर हिनका डी० लिटक उपाधि भेटल छलनि। हमरा मोन अइ १९७२ मे जखन हिनक शोध पत्र कलकत्ता विश्वविद्यालय मे जमा पड़ल छल, प्रो० कल्याणमल लोढ़ाक नेतृत्व मे हिन्दी वला सभ अड़ंगा लगौने छल जे मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि-हिन्दीक बोली थिक तें एहि पत्र कैं हिन्दीक अधीन जमा करौल जाय। कौन्सिल बैसार मे हिन्दीवला सभक दुर्गति देखै बला छल। विशाल बहुमत सँ मैथिलीक जीत भेल छलै।

इला अध्यापन क्षेत्र मे छली आ कलकत्ता सँ भागलपुर धरि छात्र समुदाय मे हिनक आदर-सम्मान छल। वर्तमान शिक्षा व्यवस्थाक दोष कैं ओ नीक जकाँ जनैत-बुझैत छली—

विद्या, ज्ञान, संयम,

गुरु-शिष्य, सम्बन्ध

भारतीय मनीषाक समस्त आदर्श

ईर्ष्या, लिप्सा और प्रतिहिंसाक

लघु परिधि मे आबद्ध भ' गेल अछि।

(शिक्षक/विन्दन्ती)

परिवार समाजक इकाइ थिक आ परिवारक शान्ति, सुख-समृद्धि निर्भर करैछ पति-पत्नीक प्रेम आ एक दोसराक प्रति प्रश्नातीत विश्वास पर। तें विवाह भारतीय परम्परानुसार पवित्र बन्धन थिक।

कौमार्यक सुचि धौत सीत पर

सिन्दूरक लालिमा छिरिया गेल!

जीवन-लघु तरी कैं

परम्परा-गंगाक अपरिचित-अपरिमेय स्निग्ध प्रवाह मे भसा दैत छी अहाँ—

अज्ञात, अनचिन्हार नाविकक भरोस पर!

(भाव-संधि/विन्दन्ती)

ई भारतीय नारीक नियति थिक जाइ सँ इला सेहो फराक नहि छली। मुदा से भरोस जखन डगमगा गेलनि त आवश्यक भ गेल छलनि—'प्रेमक पोस्ट मार्टम' केनाइ—

प्रिय

अहाँक व्याघ्र-जिह्वा

मानवीय रक्तक

कातर सुस्वादुताक

बहुतहि पियासल अछि!

तें त

नयनक छाया मे

मन कैं अवगाहैत,

हमर कँपैत अधरक

अरुणभा कैं थाहैत

चुम्माक स्वांग भरैत छी!!!

ई बोध इलाकैं अन्तर सँ तोड़ि देने छल। ओ घुरि आयल छली अपन पिता लग, जिनका सम्बन्ध मे ओ कहै छथि—

धरती-धर्मा हमर पिता

अपन पावन सहज स्नेह कैं

सायास नुका

हमरा आकाशक उच्चता

दैमै चाहैत छथि;

शैशवक समस्त हरीतिमा कैं

विसर्जित कए

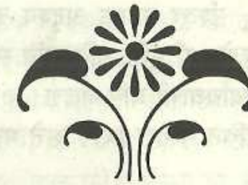
हमरा कर्त्तव्य-पालनक कण्व-शिक्षा

दैत छथि। (हंम/विन्दन्ती)

इलाक काव्य मे नारी-सुलभ कोमल-मधुर भावक प्राचुर्य पाओल जाइछ। १९७२ मे हुनक 'विन्दन्ती' काव्य-ग्रंथ प्रकाशित भेल छल आ यैह प्राय: प्रथम आ शेष थिक। एहि सँ पूर्व ओ 'सलोमा' तथा 'प्रेम एक कविता' नाटक तथा 'विष-बृक्ष' उपन्यासक अनुवाद केने छली। अनुवाद उच्च कोटिक भेल अछि।

आइ इला रानी सिंह हमरा लोकनिक बीच नहि छथि। किन्तु हुनक कृतिसभ अछि—जकर वर्त्तमाने नहि भविष्यो अवलोकन करत आ स्मरण करत कृतिकार कैं — इला रानी सिंह कैं।

(१९९५)



पाठक जी

२२ फरवरी २००२, रातुक लगभग साढ़े न बजे विजयक फोन आयल। विजय माने विजय पाठक—पीताम्बर पाठकक सुपुत्र। ओना हमरा हेतु ओकर परिचय एतबैक नहि आरो किछु अछि। ९ दिसम्बर १९८० के मैथिलीक माँग ल कैं पटना मे विशाल प्रदर्शन भेल छल—''मैथिली मुक्ति मोर्चा''क नेतृत्व मे। मैथिली विरोधी डॉ० जगन्नाथ मिश्र मुख्यमंत्री छलाह। स्वभावत: हुनक बर्दीधारी लठैत सभ बेस निर्ममताक संग प्रदर्शनकारी लोकनि पर लाठी चार्ज कएने छल। प्रदर्शनकारी मे तीन व्यक्ति के बड़ बेसी मारि लागल छलनि—पटनाक नथुनी झा, कलकत्ताक सुशील आ किशोरवय विजय। कहबाक प्रयोजन नहि जे विजय सर्व कनिष्ट प्रदर्शनकारी छल जकरा मातृभाषाक महत्ता आ आन्दोलनक उपयोगिता अपन पिता सँ ज्ञात छलैक। मैथिली मुक्ति मोर्चाक संयोजक हेबाक कारणेँ हमरा लेल ताही दिन सँ विजय आदरणीय भ गेल। अस्तु।

विजयक फोन पबिते जेना हृदयक गति तेज भ गेल, त की पाठक जी नहि रहला! हँ, इएह दुखद सूचना देबाक लेल ओ फोन केने छल, कंठ भारी छलैक, बेसी बजबे की करैत, आ हमर अवस्था एहन जे सान्त्वनाक दू शब्दो जोगार नहि क पाओल। आश्चर्य! ओना सत्त कही त हमरा एहि सम्वादक प्रतीक्षा छल। सत्ते हम पाठक जीक शीघ्रातिशीघ्र मृत्युक कानमा करैत रही। पाठक जी सन सुन्दर, आकर्षक चेहरा के ई कसैया कैंसर विगारि देने छल, ओहन ओजस्वी कंठ के रुद्ध क देने छल, एकटा कर्मयोगी के ओछैन धरा देने छल, आहार निद्रा धरि छीनि लेने छल। वस्तुत: हुनक कष्ट देखनिहारक लेल असह्य छलै, हुनकर त बाते ने हो। किछु दिन सँ डाक्टरो निरसि देने छलनि आ दवाइयो प्राय: नामे लेल, कारण रोग चिकित्साक शक्ति सीमाक अतिक्रमण क चुकल छल। ईश्वर नामक अदृश्य काल्पनिक शक्तिपर विश्वास कइयो क केओ आइधरि एहि रोग सँ मुक्ति नहि पाबि सकल। तखन पाठक जी सन प्रगतिशील मे मृत्यु मुक्तिक पर्यायवाची बनि जाइछ। तथापि पाठक जी सँ आब भेंट नहि होएत से सोचिते हृदय द्रवित भ गेल छल। सत्ते मनुक्ख आइयो कतेक असहाय अछि, कतेक असमर्थ अछि।

२८ अक्टूबर २००१ कैं पाठक जी सँ अंतिम भेंट भेल छल, कीर्ति भाई फोन केने छलाह जे ओ कलकत्ता आबि रहल छथि आ पाठक जी सँ भेंट करता। प्रात: काल हम आ राजनन्दन लाल दास जी पहुँचलौं। कीर्ति भाई सेहो आर दू गोट हिन्दी साहित्यकारक संग पहुँचल छलाह। एहि सँ पूर्व न तारीख के हम आ डॉ० रमानन्द

झा 'रमण' हुनक दर्शनार्थ गेल रही। एहि बीस दिनक अन्तराल पाठक जीक स्वास्थ्य मे चिन्ताजनक ह्रास देखबा मे आयल। ओना हुनक मनोबल एवं स्मरण शक्ति मे कनिओ कमी नहि बुझना गेल। हमरा लोकनि घंटो विभिन्न विषय पर गप करैत रहलौं आ पाठक जी पूर्ववत ओहि मे भाग लेलनि। ओना शरीर जे संग नहि द रहल छलनि से धरि स्पष्ट। बेसी बजबाक क्रम मे मुँह सँ रक्तश्राब होमय लागल छलनि। हमरा लोकनि बड़ जोड़ देल जे ओ नहि बाजथि आ पड़ि रहथि, परंच पाठक जी त पाठके जी छलाह। जीवनक अन्त भनहि आसन्न हो, जीवंतता मे कमीक आभासो धरि नहि।

पाठक जी कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक अग्रणी नेता मे सँ एक छलाह। छात्रावस्था मे जे ओ एहि आन्दोलन सँ जुड़लाह अथवा एना कही जे मैथिली आन्दोलनक भूमिका बनऔलनि, जीवन पर्यन्त ओहि सँ मनसा, वाचा, कर्मणा, जुड़ले रहलाह। जेहने संगठन कर्त्ता तेहने सुवक्ता, तेहने साहित्यानुरागी। एहिठाम लिखनाइ प्राय: अनर्गल नहि होएत जे कलकत्ता सँ जे 'आखर' सन विलक्षण पत्रिका बहार भेल छल तकरो ओ एक स्तंभ छलाह। सम्पर्कक बैसार मे ओ प्राय: उपस्थित रहैत छलाह आ पठित कविता कथा पर निश्चित रूपेँ अपन विचार प्रस्तुत करैत छलाह। अस्वस्थताक कारणे जखन ओ नहि जा पओलनि तँ हुनक विशेष आग्रह पर हुनक अवसान सँ मास छएक पूर्व हुनके आवास पर सम्पर्कक विशेष बैसार भेल छल जकर अध्यक्षता सेहो उएह कएने छलाह।

पाठक जी एक प्राइवेट कम्पनी मे चाकरी करैत छलाह आ एही क्रम मे किछु दिनक लेल हुनका पटना पठा देल गेल छलनि, मुदा पाठक जी सन लोक चाकरी आ परिवार धरि कोना सीमित रहि सकैछ। मातृभाषा प्रेम आ आन्दोलन जकरा रक्त मे होइ से कत्ते दिन एहि सँ फराक रहि सकैछ। ओ चेतना समीतिक संग जुड़ि गेलाह आ कनिञे दिन मे अपन कार्यक्षमताक बलें लोक मे ख्यात भ गेलाह। निखिल भारत मैथिली भाषी छात्र संघक विभिन्न प्रोग्राम मे ओ सहयोग कएलनि आ मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रदर्शन मे सेहो सक्रिय भूमिकाक निर्वाह कएलनि। आइयो पटनाक मैथिली प्रेमी पाठक जीक नाम आदरक संग स्मरण करैत अछि।

हमरा पाठक जी सँ प्रथम कहिया केना आ कतय भेंट भेल से स्मरण नहि अछि। हम १९६३क शेष मे कलकत्ता आयल रही आ बहुत दिन धरि प्राय: जीविकाक संधान मे बौआइत रहल रही। संस्था वा कोनो आयोजन मे जेवो करी त से अ०भा० मिथिला संघक आयोजने मे जाइ कारण हमर पितिऔत श्री शुकदेव ठाकुर संघक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता छलाह। स्वभावत: जखन संस्था मे गेलौं त मिथिले संघ मे, पाठक जी ऑल इंडिया मैथिल संघ मे छलाह। पटना सँ घुरलाक पश्चाते पाठक जी अ०भा० मिथिला संघक संग भेलाह। ऑल इंडिया मैथिल संघ उदित

बाबू मदन बाबूक पश्चात निष्क्रिय सन छल। मिथिला संघक स्थितियो प्राय: तदरूपे। कार्यकर्त्ताक पूर्ण अभाव। चौहत्तरिक लगभग हम प्राय: संस्था सभ सँ पृथक भ गेल छलौं। स्वभावत: कतौ कोनो आयोजन मे जेवा मे वाधा नहि। एवम् प्रकारे बुझि पड़ैछ जे हमरा लोकनिक घनिष्टता हठात् नहि क्रमात भेल होएत। एकर आर एक कारण भेल जे हम दुनू गोटे बामपंथी विचार-धाराक लोक। पाठकजी त साम्यवादी दलक सक्रिय सदस्य छलाह ओ ओकर विभिन्न क्रिया कलापक संग सदा सम्पृक्त रहैत छलाह। कहबाक प्रयोजन नहि जे पाठक जीक मनोबल, हुनक आन्दोलनी व्यक्तित्व ओ कृतित्वक पृष्ठभूमि मे इएह बामपंथी विचार धारा रहल अछि।

चौधरीजी आ पाठक जीक मिलन निश्चिते स्वागत योग्य छल। दुनू गोटे मिलि अखिल भारतीय मिथिला संघ के पुनर्जीवित जागृत करबाक योजना बनओने छलाह। मिथिला मैथिलीक निमित्त कतेरास सपना देखैत छलाह। परंच चौधरीजीक वार्द्धक्य आ कलकत्ता छोड़बाक वाध्यता, पाठक जी स्वयं फेर कोनो योजनाक क्रियान्वयन हेतु अगुआथि ता पत्नी रोगाक्रान्त भ गेलथिन। कैंसर सन प्राणघाती रोग, जकर उपचार विज्ञानक चमत्कार के आइयो औंठा देखा रहल अछि। एहि बीच चौधरी जी दिवंगत भ गेलाह। पाठक जी अपन अर्द्धांगिनीक उपचार मे लागि गेलाह। कलकत्ता सँ बम्बइ धरि—कत्तौ नहि छोड़लनि, पत्नी कने नीक भेलथिन त चौधरी जीक स्मृति ग्रंथक योजना के कार्यरूप देबाक प्रयास छलनि ता स्वयं कैंसर पीड़ित भ गेलाह। मुँहक कैंसर, पाठक जीक मुँहक पान प्राय: कखनो शेष नहि होइत छल। गौरवर्ण, सुन्दर आ आकर्षक मुखाकृति, लाल टुहटुह ठोर.....के जनैत छल जे ई पाने कहियो काल भ जायत। ओना पानेक कोनो दोष ? बहुतो लोक पान खाइत अछि, आ जे नहि खाइछ से किएक एहि रोगक शिकार भ जाइछ। से जे हो, पाठक जी अपन चिकित्सा मे लागि गेलाह, मध्यवित्त परिवार आ दू-दू गोट कैंसर रोगीक चिकित्साक भार। ओना पाठक जीक परिवार सरिपहुँ आदर्श परिवारक नमूना थिक। बेटा-पुतोहुक स्नेह-साहचर्य सेवा टहल मे कहियो कोनो कोताही नहि, मुदा कैंसर त कैंसर थिक। औषधि चलिते रहल आ पत्नी चलि देलथिन। भरिसक अपन कष्ट त ओ अंगेजि लेने छलीह। परंच पतिक कष्ट सहन नहि भेलनि। व्याधिक व्यथा आ पत्नी वियोग, वर्षाभ्यन्तरे पाठको जी अपन अर्द्धागिनीक अनुसरण कएलनि।

चौधरी जीके कलकत्ता छोड़बाक मन नहि छलनि। जाहि बाबू साहेब चौधरीक नामे मैथिली प्रेमी कलकत्ता के जनैत छल हुनका कलकत्ताक मैथिली भाषी नहि राखि पओलक। पाठक जी के राखि पाएब त ओनहुना संभव नहि छल। पाठक जी चल गेलाह आ ताही संग कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक एक अविस्मरणीय व्यक्ति। रहि गेल स्मृति आ केवल स्मृति, स्मृति शेष। (२००३)

आचार्य ब्रह्मानन्द सिंह झा

समय साल कहाँ मन अछि। अ०भा० मिथिला संघ मे छलौं। ओकरे कोनो आयोजनक क्रम मे बजबज गेल रही। हुगली नदीक तीर पर विशाल जूट मिल—सेन्ट्रल जूट मिल। बहुत रास मैथिल एहि मिल मे कार्यरत। विभिन्न पद पर। ओना संख्या बेसी श्रमिकेक। एहि ठामक बहुतो लोक संघक सक्रिय सदस्य। मैनेजरक पद पर कार्यरत श्री धनञ्जय झा एक समय संघक अध्यक्ष छलाह। एहि ठामक स्कूलक शिक्षक बूलन जी (श्री कमला कान्त झा) संघक सचिव छलाह। सुशील जी (घराड़ी/गामबालीक लेखक) एही मिलक कार्यालय मे कार्य करैत छथि। एही घरौआ बैसार मे हमरा लोकनिकेँ एक नव व्यक्ति सँ परिचय कराओल गेल—श्री ब्रह्मानन्द सिंह झा। स्कूल मे शिक्षकक रूप मे योग देने छलाह। धोती-कुर्त्ता मे गोर-नार भव्य हंसमुख रूप। क्रमे परिचय प्रगाढ़ होइत गेल। ओ प्राय कलकत्ता आबथि आ विभिन्न मैथिली सेवी संस्थाक कार्यक्रम मे भाग लेल करथि।

किछु दिनक पश्चात् ओ बजबज छोड़ि कलकत्ताक निउ नेशनल हाइ स्कूल मे योग देलनि। ओतय बेसी दिन नहि टिकलाह। जाहि मतान्तरक कारण ओ बजबज छोड़ने छलाह, तेहने स्थिति एहिठाम। झाझा सँ बजबज आ बजबज सँ कलकत्ता। आश्चर्य जे एहन नीक, एते सुयोग्य शिक्षक केँ कतौ समुचित सम्मान नहि भेटलनि। योग्य एहि दुआरे नहि जे ओ दू विषय मे एम०ए० (अंग्रेजी आ अर्थशास्त्र) तथा एल०एल०बी छलाह। अध्यापकक योग्यताक प्रमाण त वस्तुत: ओकर अध्यापन क्षमता होइछ। आ हुनक एहि क्षमता केँ हुनक विरोधीओ मुक्तकंठे स्वीकार करैछ। कहबाक प्रयोजन नहि जे हुनक योग्यताक सम्मान छात्र लोकनि अवश्ये देलकनि। ओ स्कूल त छोड़ि देलनि, मुदा अध्यापन नहि-जे हुनक जीविका छलनि। ओ घरहिपर विद्यार्थी सभ केँ ट्यूशन पढ़बैत रहलाह। एक-एक दल बहराइत रहल आ नव-नव छात्र लोकनिक समागम होइत रहल। हुनक आवास चौपाड़ि सन चलैत रहल। ओ प्राय: कहैत छलाह—जे ओकिल मोकदमा हारि जाय से ओकिल की ? जाहि शिक्षकक छात्र फेल क जाइ से शिक्षक की ?

हम लेक गार्डेन्स छोड़ि सॉल्टलेक क्वाटर मे एलौं। ओहो एही ब्लॉक मे डेरा लेलनि। ओना एहिठाम जन्मना मैथिलक संख्या थोड़ नहि, परंच कर्महुँ सँ मैथिल होथि तेहन लोकक संख्या नगण्ये। स्वाभाविक कारणे हमरा लोकनिक परिचय

पारिवारिक सम्बन्धक रूप ल लेलक। ०४ जून के आफिस सँ घुरलाक बाद जखन हुनक मृत्यु संवाद भेटल त सन्न रहि गेलौं। पाँच-सात दिन पूर्वे त गाम सँ घुरल छलाह आ बेस प्रसन्न छलाह। प्रसन्नताक कारण छलनि जे बहुत दिनक बाद गेल छलाह। एहि क्रम मे बाबा वैद्यनाथक पूजा-अर्चना सेहो, जे आस्तिकमना श्री झा मे एक नव आशा-विश्वासक संचार केने छल। ओ कहैत छलाह जे बाबा हुनक सभ दुख-कष्ट हरि लेलथिन। जेहो, तुरन्ते हुनका डेरा पर पहुँचलौं। कन्नारोहटिक मध्य देखल चौकीपर पड़ल-उतान, जेना कोनो सुखद स्वप्न देखि रहल होथि। हुनक मुखाकृति देखि विश्वास करब कठिन छल जे ओ आब नहि रहलाह। तैं एकक पश्चात दोसर डाक्टर बजाओल गेल, परंच..........।

आचार्य ब्रह्मानन्द सिंह झा शिक्षक छलाह, नीक शिक्षक छलाह। मुदा ई त हिनक सामान्य परिचय भेल। जँ ओ मात्र एतबे रहितथि त हुनका लेल किछु लिखबाक प्रयोजन भरिसके बूझल जाइत। वस्तुत: कलकत्ता महानगर तथा एकर उपनगरी मे मैथिल शिक्षक थोड़ नहि। मिथिलाक भरिसके कोनो गाम हो जाइठामक लोक कलकत्ता वा एकर उपनगरी के कार्यरत नहि होथि। अनुमानत: पाँच-सात लाख मैथिल। मुदा अपना कें मैथिल बुझनिहार/कहनिहारक संख्या नगण्ये। एहि मे संदेह नहि जे अपन माटि-पानि छोड़ि एहिठाम लोक जीविकाक खोज मे आयल अछि आ तैं अर्थोपार्जन, अपन आ अपन परिवारक भरण-पोषण ओकरा लेल सर्वाधिक महत्वपूर्ण। अपवाद स्वरूप किछु लोक एहन छथि जे अपन काज उद्यम सँ थोड़ेक समय बहार क अपन देस कोसक लोक सँ भें घांट करैत छथि, भाषा-भूमिक समस्यापर बात-विचार करैत छथि, अपन कमाइक किछु अंश मिथिला-मैथिलीक नामपर खर्च करैत छथि। एहने किछु लोक मे सँ एक छलाह आचार्य ब्रह्मानन्द सिंह झा।

आचार्य झा अंग्रेजीक संगहि मैथिली हिन्दी तथा संस्कृत भाषा-साहित्यक नीक विद्वान छलाह। ओ विलक्षण मंच संचालक छलाह। आचार्य मुकुटधारी मिश्रक दिवंगत भेलाक पश्चात् मिथिला सांस्कृतिक परिषदक मंचपर हिनक निर्देशन मे कएक बेर भावनृत्य प्रदर्शित भेल अछि आ से दर्शक द्वारा वेश प्रशंसित भेल अछि। सन् १९८५ मे कर्णगोष्ठी द्वारा आयोजित तथा जयंत लोक मंच द्वारा प्रस्तुत श्री शिक्षायतनक सभागार मे साहित्य-संगीत संध्याक सफल संचालन केलनि। अपन नीक अभिनेता होएबाक प्रमाण ओ कलकत्ताक मंचपर अपन पहिल आ शेष अभिनय, साहित्य रत्नाकार मुन्शी रघुनन्दन दास लिखित 'मिथिला नाटक' मे द चुकल छथि

जकर मंचन १९८३ ई० मे कर्णगोष्ठीक प्रयासें भेल छल। एहि सभक अतिरिक्त ओ नीक निबन्धकार, समीक्षक आ अनुवादक छलाह जकर उदाहरण विभिन्न पत्र पत्रिका मे देखल जा सकैछ। स्व० नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकर तथा श्रीमत गोदावरी दत्तक साक्षातकार पर आलेख तथा कर्णामृत मे प्रकाशित अनेको पुस्तकक समीक्षा हुनक प्रतिभाक परिचय दैछ।

आचार्य झा अनेको मैथिली संस्था सँ जुड़ल छलाह। कलकत्ता सियालदह फ्लाई ओवर क नामकरण विद्यापति सेतु तिरहुत-वैदेही सेवा संस्थान द्वारा हुनकहि अध्यक्षताक अवधि मे भेल। एहि सँ मिथिला मैथिलीक प्रति हुनक कर्मठता तथा निष्ठा भावक परिचय भेटैछ।

विगत किछु वर्ख सँ ओ पूर्ण स्वस्थ नहि रहैत छलाह। काया विशाल भ गेल छलनि आ ताइपर फाइलेरियाक कारणे पैरक अवस्था ठीक नहि छलनि। दही आ मधुरक प्रेमी हेबाक कारणे परहेज नहि क पबैत छलाह। डेरा से चारितला पर आ तैं बहराइत प्राय: नहि छलाह। एमहर हमरो डेरा चारितला पर आ डांड़ कज्जी रहबाक कारणे गेल पार नहि लगैत छल। सम्पर्कक माध्यम धीया-पुता। परंच मैथिलीक समस्त गतिविधिक खोज रखैत छलाह। कोनो आयोजन मे नहि जा पैबाक हेतु व्यथित होइत छलाह आ दुख प्रकट करैत छलाह। ९ मार्च के हमरे डेरापर युवालेखनक बैसार भेल छलैक। नहि आबि सकलाह। सोचि आँखि सँ नोर खसि पड़ल छलनि। धीया-पुता कहैत आयल छल। बैसार शेष भेलापर किशोरी बाबू भेंट क आयल छलथिन..........। कोनो नव पोथी वा पत्र-पत्रिका आयल वा नहि तकर सतत खोज रहैत छलनि। मैथिली मे प्रकाशनक स्थिति त कोनो नुकाएल नहि। तैं जखन जे कोनो पोथी वा पत्रिका अबैत छल, पहिने हुनके पठादैत छलियनि। मोट सँ मोट पोथी ओ एक सँ दून दिन मे पढ़ि अपन मन्तव्यक संग आपस क दैत छलाह। हुनक दिवंगत भेलाक पश्चात् कएकटा पत्रिका आयलए। धनवाद कर्ण गोष्ठीक मैथिली ९७, कर्णामृत, प्रवासी........। प्रत्येक बेर ओ मन पड़ैत छथि। आब त मनेटा पड़ता.........।

(१९९७)



कलकत्ता मैथिली रंगमंच आ श्रीकान्त मंडल

बात मैथिली आन्दोलनक हो, प्रकाशनक अथवा नाट्य-मंचनक, कलकत्ताक नाम सभठाम सभसं पहिने लेल जायत आ से आदरक संग। कलकत्ता के ई स्थान दिएबा मे एक नहि, अनेकों व्यक्तिक योगदान-अवदान रहल-ए आ तें ओ समस्त व्यक्ति स्मरणीय छथि, आदरणीय छथि। तथापि जाइ किछु व्यक्तिक नाम पहिल पंक्ति मे आओत ताइ मे एक व्यक्तिक नाम छल श्रीकान्त मंडल।

कलकत्ता मे पहिने सभा-समावेश होइत छल, आन्दोलनक बात होइत छल। नाटकक आरंभ होइछ १९५४ मे। स्थानीय डागा धर्मशाला मे 'छीक' प्रहसन अभिनीत भेल। एहि पहिल प्रस्तुतिक आशातीत सफलता रंगकर्मी लोकनिक उतसाह वर्द्धन कएलक आ रंगमंचक जय-यात्रा आरंभ भेल। नाटक मंचित होमय लागल परञ्च नाटकक रूपमे नहि --भीड़ जुटेबाक साधनक रूप मे। अगबे भाषण लेल लोकके जमा केनाइ कठिन तें नाटकक नामपर लोक जुटा भाषणक मध्यमे ओकरा मैथिली प्रेम, आन्दोलनक बात कहि, पश्चात नाटक देखेबाक परिपाटी बनि गेल। नेतालोकनि मे एतेबोध नहि छलनि जे नाटक अपने-आप मे सम्पूर्ण होइछ, ओकरा माध्यम सं सभ किछु कहल जा सकैछ, आर बेसी प्रभावी ढंग सं कहल जा सकैछ--ओहो बात जाइ लेल नेता लोकनि नाभिकुंड सं जोर लगा चिकड़ै छथि। स्वभावतः संस्थाक मठाधीश लोकनि आ रंगकर्मी लोकनि मे मतभेद। परिणामतः १९५९ मे मिथिला कलाकेन्द्र नामे मैथिलीक पहिल नाट्य संस्थाक गठन भेल। एहि संस्थाक सचिव बनाओल गेलाह श्रीकान्त मंडल। एहिठाम उल्लेखनीय थिक जे संस्थाक गठन मे सर्वश्री शुक देव ठाकुर, मोहन चौधरी आ लक्ष्मीनारायण मिश्रक अग्रणी भूमिका रहल अछि।

१९६६ मे रंगकर्मी लोकनि मे मतान्तरक कारणे कलाकेन्द्र बन्न भ गेल आ दू गोट संस्था जन्म लेलक -'मैथिली रंगमंच' आ 'मिथियात्रिक'। श्रीकान्त मंडल 'मैथिली रंगमंचक' नाट्य-सचिव बनाओल गेलाह। रंगमंच'क आयु दस बर्खक भेल। १९७६ मे संस्थाक सदस्य ओ रंगकर्मी लोकनि मे मतभेदक कारणे 'मैथिली रंगमंच' बन्न भ गेल। एहिठाम हम ई स्पष्ट क देबए चाहैत छी जे मतपार्थक्य आ आपसी वैमनस्यता वा कटुता मे फर्क होइत छैक। हम कोनो वस्तुकें जाहि तरहें प्रस्तुत करै चाहे छी-आवश्यक नहि जे आनो ओही तरहें करत अथवा ओकरे सही मानत। ओ दोसरो तरहे क सकैछ वा करबाक इच्छा राखि सकैछ। के कतेक उचित आ उपयुक्त-निश्चिते तकर निर्णय-प्रस्तुतिक पश्चात्परिणामक आधारे पर भ सकैछ। तें,

एतै हम जोर द क कहि सकैत छी जे हमरा लोकनि मे--रंगकर्मी लोकनि मे आपसी वैमनस्यता वा कटुता लेसमात्रो नहि छल। मिथि यात्रिकक श्री गुणनाथ झा, श्री दयानाथ झा आ 'रंगमंच'क श्रीकान्तमंडल, रामलोचन ठाकुर के रोजाना भोर-सांझ एकै टेबुल पर बैसि बात-विचार करब, एक दिन भेंट नहि भेने एक दोसरक हेतु बेचैनी की एहि बातक प्रमाण नहि थिक ? आइ श्रीकान्त नहि अछि, मुदा आर सभ त छीहे। तैं जे केओ पूर्वाग्रहक कारणे कलकत्ताक रंगमंचक गौरवमय इतिहासकें म्लान करबाक प्रयास करथि त से हुनक मूर्खता छोड़ि आर किछु नहि।

१९६०-१९७६ कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक लेल स्वर्णिम समय छल। नव-नव नाटक लेखन, मंचन, प्रकाशन तथा नाट्य-मंचन मे नव-नव प्रयोग एहि अवधि मे भेल अछि। मैथिलीए किएक, प्रायः सम्पूर्ण नाट्य-जगत मे एक नव आन्दोलनक लहरि उठल छल आ स्वाभाविके छैक जे कलकत्ता सन महानगरक मैथिली नाट्य-संस्था, रंगकर्मी एहि सब सं प्रभावित होथि। विभिन्न भाषाक मंच देखबाक, विभिन्न भाषाक रंगकर्मी लोकनिक संग विचारक आदान-प्रदान करबाक सुविधा छलैक। एतबे नहि, 'रंगमंच' आरंभिक प्रयोजना मे सर्वश्री शिशिर दास, विलीन दास, गोपाल दास, पंकज बनर्जी, प्रभात चक्रवर्ती आदि बंगलाक अभिनेता लोकनि अभिनय केने छथि। प्रयोजन भेने यदा-कदा मैथिलीक अभिनेता लोकनि सेहो बंगला मंचपर अभिनय-केने छथि। 'मैथिली रंगमंच' आ बंगलाक 'राजा-साजा' क रिहर्सल एकेठाम होइत छलैक। 'राजा-साजाक' निर्देशक नाट्यकार श्री प्रवीर मुखर्जी 'सुखायल डारि नव पल्लव' क निर्देशन देने छथि। बंगालक आलोक शिल्पी श्री सुशील दास हमरो लोकनिक नाटक मे रहैत छलाह। रुप सज्जा, साज-सज्जा बंगलाक श्री अजय घोषक रहैत छल। स्वाभाविक छैक जे नीक सं नीक मंचन होइत छल।

कलाकेन्द्र कें टुटलाक पश्चात मैथिली रंगमंच, आ मिथि यात्रिक बनल। कोनो संस्थाके टुटि गेनाइ नीक भने नहि हो, परञ्च मैथिलीक नाट्य-मंचनक परिमाण आ परिणाम दुनू दृष्टिए हमरा जनैत ईनीक भेल। दू गोट संस्था रहबाक कारणें दुनू मे स्वस्थ आ सार्थक प्रतियोगिताक भावना छलैक जे बेसी सं बेसी नीक प्रस्तुति मे सहायक सिद्ध भेल। संयोग छलैक जे 'मिथि यात्रिक' के श्री गुणनाथ झा तथा 'मैथिली-रंगमंच' के श्री नचिकेता सन नाट्यकार भेटलैक आ कोनो नाट्य-संस्था लेल अपन नाट्यकार बड़ बेसी प्रयोजनीय-होइत छैक आ विशेष कें मैथिली संस्थाक लेल-जतय कि नाटकक नितान्त अभाव रहल। 'छीक', चिन्नीक लड्डू वा 'बसात' क बल पर आधुनिक मंचक कल्पना कैलो कोना जा सकैछ।

नाट्यकर्म 'टीम वर्क' थिक, कोनो एक व्यक्तिक काज नहि। रंगमंचक सफलता असफलता, पोथी, अभिनेता, अभिनेत्री, निर्देशक, आलोक व्यवस्था, मंच

व्यवस्था, साज सज्जा ओ रूप सज्जा आदि वस्तु पर निर्भर करैछ। ओतबे किएक,हमरा जनैत दर्शकोक भूमिका गौण नहि। शून्य प्रेक्षागृह मे कोनो मंचन नहि भ सकैछ। संयोग सं उपरोक्त अवधि मे मैथिली रंगमंचके सभ किछु उपलब्ध छलैक - 'नाटककार, अनुवादक। सर्वश्री शुकदेव ठाकुर, फेकू मिश्र, बाबू साहेब चौधरी, श्री कान्त मंडल, दयानाथ झा, उत्तम लाल मंडल, गौतम भारती (भोजपुरी भाषी), मोहन चौधरी, जनार्दन झा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, कमल नारायण कर्ण, इन्द्र नारायण मिश्र, नचिकेता, सदानन्द झा, काली कान्त ठाकुर, विश्वम्भर ठाकुर, राजेन्द्र मल्लिक, कुणाल आदि सन कुशल अभिनेता, चन्द्र कला किरण, बीना राय, कृष्णा सरकार, उमा शर्मा सन अभिनेत्री। लक्ष्मी नारायण मिश्र सन समर्पित रंगकर्मी जे अपन काज छोड़ि बंगला भाषी अभिनेत्री लोकनिक घर जा पाट मुखस्त करबैत छलाह। कमल नारायण कर्ण सन व्यक्ति, जे मांक मृत्युक सम्वाद पाबियो के कनियो विचलित नहि भेलाह आ दत्तचित भेल नाटक क निर्देशन मे लागल छलाह।

कलकत्ता मे शताधिक नाट्य-मंचन भेल अछि-एहि अवधि मे दू दर्जनक लगभग पोथी प्रकाशित भेल अछि। कलकत्ताक रंगकर्मी द्वारा दुमका जिलाक गोड्डा मे दू राति आ धनबाद मे एक राति नाटक मंचित कएल गेल अछि आ दर्शक लोकनिक असीम प्रशंसा पओने अछि। कथ्यक हिसाब सं छीक सं जे यात्रारंभ भेल छल- 'पाथेय' आ 'नाटकक लेल' धरि पहुंचल। मंचतकनीक वा प्रयोग मे पर्दाक व्यवहार सं शुरु भेल घूर्णाय मान मंच धरि गेल आ फेर 'लाइटिंग जोन' मे मंचके बांटि-नाट्य प्रस्तुति कएल गेल। मैथिली मे सर्वप्रथम अध्ययन कक्षीय नाटक एहीठाम भेल आ बालकलाकार लोकनिक हेतु 'लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत' एहिठाम प्रस्तुत कएल गेल। नाटकक अभावकें ध्यान रखैत मंचित होमय बला पोथी प्रकाशित कए दर्शक के टीकसक संग देल गेल जे एगो अभिनव प्रयास कहल जायत। एकरे परिणाम भेल जे एहिठामक प्रकाशित पोथी मिथिलांचलक गाम-गाम धरि पहुँचल आ मंचित भेल। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे कलकत्ता मिथिलांचलक कोनो शहर नहि थिक। एहिठाम जे केओ मैथिल एला वा अबैत छथि से जीविकाक खोज मे आ जीविकेक कारणे ओ यत्र-तत्र छिड़िऐल छथि। एहना स्थिति मे चाकरी करैत बांकी समय मे केओ कतेक काज क सकैछ। अपन मंच नहि, अभिनेत्री नहि, आलोक शिल्पी नहि - रिहर्सलक उपयुक्त स्थानोक अभाव आ सबहक निमित्त अर्थक प्रयोजन। कोनो धन्ना सेठ मैथिली संस्था के कहियो नहि भेटलथिन। स्वभावतः रंगकर्मी लोकनिकें अपनहिं जोगार केनाइ। छ बजे सं मंच आ पांच बजे धरि लोकक डेरे-डेरे टीकस बेचनाइक अनुभव त हमरा स्वयं अछि। तें कलकत्ताक मैथिली

रंगमंचक उपलब्धिक लेखा-जोखा करबाकाल एहि सब बात कें ध्यान मे अबस्से राखल जएबाक चाही।

नाट्य-मंचक परीक्षा-निरीक्षा ओ ओकर विकास के ध्यान में रखैत एहिठाम सं 'लोक मंच' ओ 'रंगमंच' नामे दूगोट नाट्य विषयक पत्रिका सेहो प्रकाशित भेल छल जे मैथिलीक अन्यान्य पत्रसन अल्पजीवी भेल।

उपरोक्त चर्चित तीन गोट नाट्य-संस्थाक अतिरिक्त आनो संस्था सभ, जकर कार्य नाटक केनाइ नहि छलैक, समय-समय पर नाट्य-मंचन करैत रहल। एहि मे अखिल भारतीय मिथिला संघ, ऑल इन्डिया मैथिल संघ उषाकम्पनीक मित्र संघ' कुर्मि क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोष, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि।

श्रीकान्त मंडल मिथिलाक प्रसिद्ध गाम सरिसव पाहीक छल मुदा एहि प्रसिद्धिक भागीदार अथवा दावीदार ओ नहि छल। ओ त हजार-हजार अपरिचित लोकक भीड़ मे हेड़ायएल कलकत्ता आएल छल जीविकोपार्जनक खोज मे। ने कोनो स्कूल-कॉलेजक डिगरी, ने कुल गौरवक खतिआन। मात्र इच्छा आ उहिक सम्बल। एकरे बल पर ओ अपन परिचिति बनओलक, प्रसिद्धि प्राप्त केलक।

रंगमंचक प्रति ओकरा मे आकर्षण नान्हिटा सं छलैक। जेना कि ज्ञात भेलए, जखन ओ बड़ छोट छल तखनो ओ गामक मंच यत्न सं देखैत छल। तैं स्वाभाविके जे कलकत्ता सन सांस्कृतिक शहर मे आबि ओकर ई आकर्षण आर बढ़लैक-किछु करबाक इच्छा जन्म लेलकै। ओ मैथिली रंगमंच सं जुड़ि गेल। जेना कि पहिने कहि आयल छी, मिथिला कला केन्द्र जे पहिल नाट्य-संस्था गठित भेल तकर ओ सचिव बनाओल गेल आ निर्विवाद से बिनु योग्यता-क्षमताक नहि।

अभिनेताक रूप मे मैथिली रंगमंच पर ओकर प्रथम पदार्पण होइछ 'हाथीकदांत' मे (१९६०) तत्पश्चात उताहुल धरती पियासल नोर, चारि पहर, अन्हेर नगरी चौपट्ट राजा, जमीन, चन्द्रगुप्त (चाणक्य नामे प्रकाशित), चिन्नीक लड्डू, कांचन रंग, सुखायल डारि नव पल्लव, कुहेस, प्रेम एक कविता, निष्प्रदीप, आगन्तुक, बेमातर, सन्तान, पांथेय, इजोत, मधुयामिनी, नायकक नाम जीवन, एक छल राजा, नाटकक लेल आ बतहा मे ओ अभिनय केने अछि। कोनो नाटक मे ओकर भूमिका गौण नहि छलैक-नायक वा सह-नायक।

निर्देशनक क्षेत्र मे ओ प्रवेश करैछ सुखायल डारि : नव पल्लव (१९६६) सं। श्री प्रवीर मुखर्जी एकर निर्देशक छलाह आ श्रीकान्त सह निर्देशक। तकर बाद एक छल राजा, आगन्तुक, पाथेय, मधुयामिनी, नाटकक लेल व्यक्तिगत आ बतहा ओकर

निर्देशन मे भेल छल। एहिठाम उल्लेखनीय जे पाथेय आ मधुयामिनी-जकर प्रयोजना रंगमंचक छलै, तकरे निर्देशक छल तथा बतहाक एकक अभिनय ओ स्वयं केने छल।

अभिनेता श्रीकान्त मंडलक सम्बन्ध किछु लिखब हमरा लेल सहज-संभव नहि बुझि पड़ैछ कारण हम प्रायः नायक मे ओकरा संगहि मंच पर रहैत छलौं। एकर उचित विवेचना निर्विवाद दर्शक-आलोचकेटा क सकैत छथि। तथापि एकटा अभिनेताक दृष्टिये ओकरा मे किछु मुद्रा दोष छलैक जे सभ-तरहक अभिनय मे बाधक होइत छैक। ओ दम्माक रोगी छल स्वभावतः उकासीपर काबू पाएब संभव नहि। परंच इएह उकासी 'प्रेम एक कविता' मे ओकर अभिनय के स्वाभाविक आ जीवंत बना देने छलैक। तहिना 'कुहेस' मे ओकर अभिनय दर्शक के बहुतो दिन मोन रहतैक। कुहेसक पहिल प्रस्तुति मे हम डाकडरक भूमिका मे रही जे मात्र शेष दृश्य मे अबैछ आ तें हमरा देखबाक अवसर भेटल छल।

सर्वप्रथम घूर्णायमान मंचक प्रयोग 'सुखायल डारि : नव पल्लव' मे भेल छलैक आ श्रीकान्त एकर सह निर्देशक छल-स्वभावतः एकर श्रेयक अधिकारी। लाइटिंग जोन मे मंच के विभक्त कय अभिनय केनाइक शुभारंभ ओकरे निर्देशन मे भेल छलैक। मंच तकनीकक ओकरा बड़ बेसी ज्ञान छलैक। हमरा लोकनि कतिपय नाटक मे गीतक समावेश सेहो केने छी आ आश्चर्यक बात जे तकरो सूर ओ गुनगुना के तैयार क लैत छल।

मंचक अवसर पर मंचित होमय बला पोथीक प्रकाशनक योजना मे ओकर पैघ-योगदान रहलैक तथा ''रंगमंच'' पत्रिकाक प्रकाशन मे यद्यपि सम्पादक हम रही ओकर सहयोग स्मरणीय रहत।

एहि तरहें संस्था गठन सं ल के नाट्य मंचन, अभिनय, निर्देशन संगीत, मंच व्यवस्था, प्रकाशन आदि समस्त क्षेत्र मे ओकर योगदान-अवदान रहलैक। हमरा लोकनि आन्दोलन लेखन आदि मे सेहो अपन श्रम आ समय व्यतीत करैत रहलौं, परंच ओ एकमात्र रंगमंचक प्रति समर्पित रहल आ इएह समर्पण ओकरा साधारण सं विशेष व्यक्तिक श्रेणी मे ल जाइछ। इएह कारण छैक जे कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक संग श्रीकान्तक नाम तेना भ के जुड़ल अछि जे ओकरा कहियो कोनो स्थिति मे फराक नहि कएल जा सकैछ। मैथिली रंगमंच क इतिहास मे श्रीकान्तक नाम सदा-सर्वदा एगो जाज्वल्यमान नक्षत्र जकां चमकैत रहत आ आगामी पीढ़ीक दिशा निर्देश करैत रहत, एहि मे कनको संदेह नहि।

(१९९४)



प्रगतिवादी प्रयोगवादी रचनाधर्मिता आ सोमदेव

मार्क्सीय दर्शन सँ प्रेरित-प्रोत्साहित जाहि नव धाराक प्रादुर्भाव साहित्य-जगतमे भेल, आगां चलि उएह प्रगतिवादी धाराक नामे अभिहित कएल गेल। ओना एकरा विडम्बनाए कहल जाय जे राजनैतिक दलक विभाजनक प्रभाव साहित्यकारो लोकनि पर पड़ल आ ओहो लोकनि अपनाकेँ दलक संग जोड़ि विभिन्न खेमामे विभाजित क लेलनि, परंच उत्स किंवा आधार जे हेतु उएह छल तेँ रचनात्मकतामे विशेष पार्थक्य नहि परिलक्षित कएल गेल।

मार्क्सीय दर्शन एक वैज्ञानिक दर्शन थिक जे बिनु परीक्षा-निरीक्षाक कोनो वस्तु केँ स्वीकार किंवा अस्वीकार नहि करैछ। ई सर्वांशत : मानव-दर्शन थिक जे मनुक्खकेँ मात्र मनुक्खक रूप मे व्याख्यायित करैत अछि। विकाससँ ओकर तात्पर्य सामाजिक विकास होइछ, समस्त मानव जातिक विकास होइछ ने कि कोनो व्यक्ति वा वर्गक विकास। वर्गीय विकासक आधार रहलए शोषण। कहबाक प्रयोजन नहिजे एही शोषणक औचित्य सिद्ध करबाक लेल, एकरा नैतिक-सामाजिक मान्यताक मुखौटा देबाक लेल शोषक श्रेणी द्वारा ईश्वर, पाप-पुण्य, पूर्वक—जन्म.....आदि नाना अवान्तर कथाक सृजन-पोषण कएल गेल। मार्क्सीय दर्शनक मूल उद्देश्य थिक शोषण मुक्त समाजक संरचना आ तकर माध्यम शोषित-निपीड़ित सर्वहाराक संगठित संघर्ष। एहि लेल आवश्यक समुचित शिक्षा आ चेतनाक विकास जे ओकरा सभ तरहक कुसंस्कार सँ, अंधविश्वाससँ मुक्त करत। स्वभावतः एहि चिन्तन-चेतनासँ उद्भूत प्रगतिवादी साहित्य मे ईश्वरक अवस्थान नहि, मानवीय श्रम-शक्तिक गुणगान अछि। एहि मे ईश्वरक अलौकिक क्रिया-कलापक स्थान पर लौकिक आचार-आचरण, सर्वसाधारणक आशा-आकांक्षाक, कथा-व्यथाक चिन्तन अछि, ओकर जागरण-उत्थानक आह्वान अछि, तेँ प्रगतिवादी साहित्य मे जँ विद्रोह अछि तेँ से संहति-सामंजस्यक लेल, विध्वंसक आह्वान अछि त से नव-निर्माणक लेल।

साहित्य मे प्रगतिवादी धाराक प्रवर्तन विश्वजनीय घटना थिक। मैथिलीमे किरण-यात्री एहि धाराक प्रवर्तक छथि। १९४९ मे प्रकाशित 'चित्रा' सँ एकर आरम्भ मानल जेबाक कारण अछि जे एहिसँ पूर्व एहि धाराक रचना संग्रह नहि आयल। किरणजीक कोनो संग्रह नहि अएबाक कारणे प्रायः लोक हुनका बिसरि जाइत अछि जे एक ऐतिहासिक भूल थिक। प्रयोगवादी धारा मैथिलीमे नहि अछि।

प्रयोग मैथिलीक प्रगतिवादी धाराक प्रयोजन अबस्से रहल अछि आ ताही रूप मे एकर उपस्थिति देखल जा सकैछ। प्रयोग शिल्प-शैलीक दृष्टिॅ, विम्ब-प्रतीकक दृष्टिॅ। प्राचीन शिल्प-शैली विम्ब-प्रतीक किंवा छन्द विधान नवीन काव्य धाराक भाव-बोध के बहन करबामे असमर्थ पाओल गेल। ईश्वरक अर्चना-प्रार्थना लेल सृजित छन्द-शिल्प मनुक्खक कथा-व्यथा कहबा काल तोतराय लागल। स्वभावत: नव पथान्वेषण, नव प्रयोग।

किरण-यात्री जाहि प्रगतिवादी धाराक प्रवर्तन मैथिली साहित्य मे केलनि से आइ आर बेसी शक्तिशाली भेल अछि, विस्तार-प्रसार लाभ कएलक अछि आ जँ कही जे मैथिलीमे अपन वर्चस्व स्थापित कएलक अछि त अत्युक्ति नहि होएत। निर्विवाद एकर श्रेय परवर्ती साहित्यकार लोकनिकैँ छनि जाहि मे अग्रणी भूमिका रहलनिहैँ सोमदेवक। 'कालध्वनि'क रचनाक आधार पर अप्रील १९४९ मे 'अंतिम समाद'क रचना भेल। तहिया सँ आइधरि ई अविराम रचना-शील छथि। १९५४ मे प्रकाशित हिनक हिन्दी कविता संग्रहक भूमिकामे यात्री जी लिखने छथि-हम सोमदेवक प्रतिभाक कायल छी। हिनक वस्तुनिष्ठा युगचेतनासँ भास्वर छनि।' ई कथन हिनक मैथिली कविताक सन्दर्भ मे सेहो ओतबे सत्य थिक।

विगत शतीक चारिम दशक मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन विशेष महत्व रखैत अछि। एहि दशकमे किछु एहन विलक्षण नक्षत्रक आविर्भाव मैथिली साहित्यमे भेल जे आगू चलिकैँ अपन शक्ति-सामर्थ्यसँ, अपन प्रतिभाक प्रकाशसँ समस्त मिथिलाङ्नकैँ आलोकित आकर्षित आ प्रभावित कएलक। जन-मानसमे एगो नव-आशा आकांक्षाक सृजन कएलक, एगो नव स्फूर्तिक संचार कएलक।

ई लोकनि छथि—धूमकेतु (१९३२), सोमदेव (१९३४), मायानन्द मिश्र (१९३४), डॉ० धीरेन्द्र (१९३४), रमानन्द रेणु (१९३४), कीर्त्तिनारायण मिश्र (१९३६), जीवकान्त (१९३६), हंसराज (१९३८), कुलानन्द मिश्र (१९३९)। एके नभआङनमे विचरण करितो प्रत्येकक अपन प्रभामंडल अछि, गतिपथ अछि, फराक परिचित अछि।

मातृक मिथिला, पैतृक भोजपुर। माइक भाषा मैथिली, पिताक भोजपुरी। नाम-गौरी शंकर प्रसाद। नहि, ई कोनो नव प्रयोग नहि थिक। संयोग कहि सकैत छी। प्रयोग थिक-शंकर सोम, अजात शत्रु, भ्रान्तमणि, भास्कर, विरौलिया आ सोमदेव। प्रगति + प्रयोग = सोमदेव। सोमदेव अर्थात् प्रयोग। सोमदेव अर्थात् प्रगति। प्रयोग अर्थात् प्रयोजन। प्रगति अर्थात् अग्रगति। प्रगति अर्थात् नूतन पथान्वेषण। प्रगति अर्थात् सृजन।

सोमदेव हिन्दी सँ आरम्भ करितो ओकरा छोड़ि देलनि। भोजपुरी मे रचनाक' सकैत छलाह परंच से नहि कएलनि। मैदान खाली छलैक। जँ केने रहितथि त जानि ने आइ औ कतय रहितथि। परंच ओ मैथिलीए कैँ चुनलनि जाहिठाम महंथानक बोलबाला छलैक। जनितो जे एहिठाम सम्मान के कहय स्थानो लेल संघर्षक प्रयोजन। किन्तु मार्क्सीय चेनतासँ उद्बुद्ध सोमदेवक लेल संघर्षक पथ श्रेयस्कर बुझना गेल। विडम्बना एहन जे १९४९ सँ लिखैत रहलाक पश्चातो पोथीक रूप मे 'कालध्वनि' १९६५मे प्रकाशित भेल। एहि सँ पूर्व १९५८ मे 'स्वरगंधा' प्रकाशित भेल आ आधुनिक कविताक विकासक क्रम मे 'चित्रा'क पश्चात् ओकरे नाम एलैक। ओना इहो बात अनठेबा योग नहि जे 'स्वरगंधा'क चर्चाक कारण कविता सँ बेसी ओकर भूमिका रहलैक। 'कालध्वनि'क कविता सभमे १९ गोट कविता १९४९ सँ १९५८क बीचक रचना थिक जखन कि 'स्वरगंधा'क समस्त कविता १९५७-५८क। वस्तुतः 'स्वरगंधा'क प्रकाशनक समयधरि सोमदेव नीक जकाँ चर्चित-प्रतिष्ठित भ चुकल छलाह; तैं जं कही जे किरण-यात्रीक प्रगतिवादी धाराकैँ शक्ति आ गति प्रदान करबा मे, अग्रसारित करबा मे सोमदेवक अग्रणी भूमिका अछि त अत्युक्ति नहि होएत।

प्रगति एकठाम ठमकल नहि रहैछ। प्रगतिक अर्थे होइछ अग्रगति। अविरल-अविराम अगुआइत रहनाइ। १९६५मे 'कालध्वनि' प्रकाशित भेल छल आ तकर पैंतिस वर्ख बाद प्रकाशित भेलए 'सहसमुखी चौकपर'। परंच रचनाक क्रमबद्धता कनियो वाधित नहि भेल अछि। स्पष्ट छैक जे ई अविराम लिखैत रहलाहए, पूर्ण सजगता आ प्रतिबद्धताक संग। पत्र-पत्रिकामे रचना प्रकाशित होइत रहलए। प्रकाशनक समस्याक कारणे गति मे मंथरता अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ। मुदा मूल वस्तु, जे थिक वैचारिक दृढ़ता आ प्रतिबद्धता, ताहि मे लेसमात्रोक विचलन नहि पाबि सकैत छी। सोवियत संघक पतन सँ बहुतो साहित्यकारमे वैचारिक स्खलन देखल गेल अछि एकर विपरीत सोमदेवक वैचरिक प्रखरता आ भाव बोधक प्रगाढ़ता लक्षनीय। हमरा जनैत एकर मुख्य कारण थिक हिनक व्यक्तित्व। आइ काल्हि व्यक्तित्व आ कृतित्त्वमे सामंजस्य ताकि पायब 'क्षीर समुद्र मे अनन्त भगवान कैँ पेबा सन' अछि। भाषण सँ लेखन धरि अपनाके विद्रोही प्रगतिशील घोषित कएनिहार एहन साहित्यकारक अभाव नहि जनिक दिनचर्या देखि अहाँकैँ वितृष्णा भ जाय। फैशन मे किंवा लोक-देखेबा लेल कोनो मजूरक संग फूटपाथ पर वा चौकपर चाह-बीड़ी भनहि पीबि लेताह परंच ओही व्यक्तिकैँ अपन बैठक खानाक सोफापर बैसल

देखि आँखि करजनी सन भ जेतनि। परंच सोमदेव जतबे सहजताक संग कोनो दुसाध-मुसहरक खोपड़ी मे बैसि भूजा फाँकि सकै छथि, दारू पीबि सकै छथि, ततबे सहजताक संग ओकरा अपना चौकीपर बैसा खुआ-पीया सकै छथिन। जतबे उत्सुकताक संग लोरिक सलहेसक नाच देखि आनन्द ल सकै छथि ततबे कोनो शीत-ताप नियंत्रित हॉलमे बैसि उच्चांग संगीतक। इएह सामाजिक सरोकार सोमदेवक प्रगतिवादकेँ नित-नूतनता दैत अछि, सबल आधार आ आयामक विस्तार दैत अछि।

प्राचीन शिल्प-शैली, छन्द वा विम्ब-विधान प्रगतिवादी धाराक कथा वस्तु, ओकर भाव बोध वहन करबा मे अक्षम छल, ओकर संवेदनाक संप्रसारणमे, प्रभावोत्पादकताक समुचित प्रसार-विस्तार मे असमर्थ छल तँ नव शिल्प-विधानक प्रयोजन। परंच जँ एहि प्रयोजनक पूर्तिक लेल कोनो प्राचीनो शिल्प-शैली छन्द वा विम्ब-प्रतीक उपयुक्त आ सक्षम बूझल गेल तँ तकर प्रयोग मे प्रगतिवादी साहित्यकारकेँ कनियो असौकर्यक बोध नहि भेलनि आ एकर सभसँ नीक उदाहरण छथि सोमदेव। 'काल ध्वनि' आ 'सहसमुखी चौक पर'क रचनाकार ओहने सहजभावेँ 'सोमसतसइ'क रचनाक' सकैत छथि, नौटंकी शैली मे 'सीतायन'क रचनाक' सकै छथि। अपन भाषाक उन्नति लेल एक दिस जँ ओ 'चरैवेति' सन संगीत-नाट्य काव्यक रचनाक' सकै छथि त दोसर दिस 'चानोदाइ' आ 'होटल अनारकली' सेहो लिखि सकैत छथि। एक सुच्चा मार्क्सवादी हेबाक कारणे ओ जनैत छथि जे भाषा मात्र विचारक बाहनेटा नहि अछि सामाजिक विकासक साधनो थिक।

सोमदेव आशुकवि छथि। हिनक प्रतिभा बहुमुखी अछि आ सभ विधा मे ई समान अधिकारक संग रचना कयने छथि। परंच हिनक प्रगतिवादिता किंवा प्रयोगधर्मिता मात्र रचनेधरि सीमित नहि अछि। भाषाक क्षेत्र मे सेहो हिनक प्रयास स्तुत्य अछि आ जेना कि राजकमल चौधरी कहैत छथि—सोमदेवजी गोअरटोली आ गोढ़ियारीमे बाजल जाइत अब्राह्मण शब्द आ ध्वनि मैथिली कविता मे अनलनि! ई कोनो साधारण बात नहि भेल। १९७८ मे जाहि भाषा प्रयोगक कारणे हमरा महन्थानक कोपभाजन बनय पड़ल छल ताहि भाषाक प्रयोग हमरा सँ बीस वर्ख पूर्व ओ कऽ चुकल छलाह। यात्रीजी कहलनि—नवतुरिये आबओ आगाँ। सोमदेव एहि नवतुरिया दल कैं एक नहि अनेको बेर आगाँ अनलनि ओकरा लोकनि कैं प्रेरित प्रोत्साहित कएलनि, जकर सभसँ नीक नमूना थिक 'पहिल अग्नि संकलन।' आ ई पोथी ताहि समयमे प्रकाशित केलनि जखन नि हुनक आर्थिक स्थिति सोचनीय छलनि। कॉलेज सँ दरमाहा भेटबाक कोनो निस्तुकी नहि। घर घराड़ीक मोकदमा। लेध-गेध आश्रम

आ धीयापुताक शिक्षा। परंच हिनका लेखे जेना धनसन। कनियो मुँह मलिन नहि। एगो अद्भुत आभासँ दीपित मुखमंडल। आरामसँ घंटो भाषा-साहित्यक विकासक योजना बनबैत। 'पत्रिका बहार करैक योजना, पोथी प्रकाशनक योजना, सभा-समावेशक योजना। मैथिलीमे जेबी-संस्करण पोथी प्रकाशन योजना हिनके मानसिक उपज छल।

नवतुरिया लेखक कैं प्रेरित-प्रोत्साहित करबामे ई अग्रगण्य छथि। 'मिथिला भूमि'मे कते नव नाम हिनक प्रयासँ पाठकक समक्ष आयल छल। एहि पत्रमे ई एगो स्तंभ आरंभ केने छलाह—तोता-मैना संवाद। अपने लिखैत छलाह। हास्य-व्यंग्य रचना। एक बेर हमरो किने फुरायल। कलकत्ताक मैथिली गति-विधि सँ क्षुब्ध एही स्तंभक लेल लिखि पठा देलियनि। 'अथ कथा इजोतक खाम्ह प्रसंग।' रचना भेटिते बेश पैघ प्रशंसा-पत्र। एहि सँ पूर्व हम हास्य-व्यंग्य नहि लिखने छलौं। एहि मे कोनो शक नहि जे ओ रचना बड़ बेसी चर्चित भेलैक आ एहू विधामे हम लिखय लगलौं। परंच तकर श्रेय निर्विवाद हिनके छनि। आ हमरा जेना ज्ञात अछि, ई स्नेह, एहने प्रोत्साहन ओ सभ नवतुरिया वर्ग कैं दैत छलथिन। लोकजे कहओ मुदा हम त एकरो सृजन शीलताए कहब।

सहजतावादक सात स्थापना सुत्र जकाँ कखनो काल लगैत अछि जे सोमदेवकेँ समग्रता मे चीन्हब सहज संभव नहि। जन्मना हिन्दू, धर्म सँ बौद्ध, मर्म सँ मार्क्सवादी। जतबे सहजता आ प्रतिवद्धताक संग ई श्रमिक संगठन बना सकैत छथि, ततबे सहजता आ प्रतिबद्धताक संग जनवादी लेखक सम्मेलनक आयोजन आ फेर तहिना योगक्ल्पोपचार साधना मे लीन। हिनक उदात्त भावनाक अन्दाज लगा पाएब किंवा हिनक ऊर्जाक श्रोतक अनुमानक' पाएब सहज हो वा नहि किन्तु सुखद आ आकर्षक त अबस्से। जानि ने सोमदेवक ई क्रिया-वृत्ति प्रगतिवादी धाराक रूप मे विवेचित कएल जायत वा प्रयोगवादी अथवा सहजतावादी धाराक रूप मे, मुदा सोमदेवक विशेषता-महत्ता त एहिठाम अछि। भीड़मे रहितो भीड़सँ फराक। पांक में कमलवत। दुर्भाग्य मैथिलीक जे हमरा लोकनि एहन प्रतिभा कैं चीन्हि नहि सकलौं, उचित उपयोगक बात त फराक रहओ। किरण जीक संग सेहो एहिना भेल छल। यात्री आ राजकमल के चीन्हल हिन्दीक माध्यमे। अन्यथा शताधिक ग्रंथ-रचनाक प्रतिभा-क्षमता सम्पन्न एहि विभूतिक मात्र सात गोट पोथीपर संतोष नहि करय पड़ैत आ मैथिली साहित्य-भंडार एहन दीन दशामे नहि रहैत।

(२००२)



परिचित विषय-वस्तुक कथा

''...होयत त जून-जुलाइ मे फेर आयब गाम। गाम माने घर-अपन घर। किरायाक घर कोनो घर होइ छै ? ओना कह' लेल लोक जे कहौ जे जत' रही सैह घर, मुदा नहिओ रहला पर अपन घर घरे होइ छै। रहि गेलहुँ पटना परिवार सहित रिटायर भ' गेलाक बादो, मुदा ओ अपन घर कोना भेल ? किरायाक मकान कतौ घर भेलैए ?'' घरक मादे अपन मोनक बात एहि तरहें व्यक्त कयनिहार कथाकार राज मोहन झाक संबंध मे कहल जाइत रहल-ए जे ओ मैथिली मे तँ लिखैत छथि, परंच मिथिलाक कथा नहि लिखैत छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे राज मोहन झाक अधिकांश कथाक कथावस्तु प्रवासक थिक। प्रवास मे जीवन व्यतीत कयनिहार लेखक जे दू-चारि दिन खातिर गाम आबैत छथि, तकरा सँ गाम घरक कथाक अपेक्षा रखबाक औचित्य पर आइ धरि प्रायः विचार नहि कयल गेल। विचार तँ आइधरि एहू विषय पर नहि कएल गेल जे मैथिली साहित्य मे प्रवासी साहित्यकारक की योगदान-अवदान छै, प्रवासी मानसिकता सँ मैथिली साहित्य कतबा दूरधरि आ कोन तरहें प्रभावित अछि आ जँ एहि साहित्य कें बेरा देल जाय तँ समकालीन मैथिली साहित्य जकरा हमरा लोकनि समकालीन भारतीय साहित्यक समकक्ष होयबाक दावी करैत छी - कत' ठाढ रहत ?

कोनो साहित्यकारक कृतित्व पर ओकर व्यक्तित्वक प्रभाव पड़िते टा छै। प्रभाव पड़ैत छै देश-काल परिवेशक। ओना वातानुकूलित कक्ष मे बैसि आधुनिक कंप्यूटरक सहयोग सँ श्रमिक-मजूरक कथा सेहो एहि देश मे लिखले जाइत अछि, मुदा तकर उपयोगिता बंबइया सिनेमा सँ बेसी नहि। साहित्य मे भोगल यथार्थ आ अनुभवक प्रामाणिताक बात आइ-काल्हि प्रायः अनठाओल सन लगैत अछि, परंच एकर सार्थकता कैं अस्वीकारब सहज-संभव नहि। एकरा दोसर तरहें हम ईमानदारी सेहो कहि सकैत छी। अर्थात जे विषय-बात अहाँ कैं बुझल-गमल नहि अछि ताहि मादे लिखब इमानदारी नहि भेल। एहि संदर्भ मे हमरा अपन अग्रज कुलाभाइक बात मोन पड़ैत अछि। अपन एक पत्र मे ओ लिखैत छथि-'ककरो परिचिति बिनु ककरो पर साहित्य कोना भ' सकैछ, ओकर तात्पर्य की होयतैक ?'' आ एहि दृष्टिकोण सँ विचार कयने राज मोहन झा एगो ईमानदार लेखकक रूप मे हमरा समक्ष अबैत छथि। जे केओ व्यक्ति हुनका सँ परिचित अछि, हुनक परिवारिक -सामाजिक अवस्थान सँ

अवगत अछि, से निर्विवाद हमर विचार सँ सहमत पोषण करत। जे केओ परिचित नहि अछि से हुनक कृतित्वक आधार पर हुनक व्यक्तित्वक आकलन क' सकैछ, अन्दाज लगा सकैछ।

राज मोहन झा अपन नाम कैं कोनो वादक संग जोड़ल जयबाक पक्ष मे नहि छथि। मार्क्सवाद सँ हुनका एलर्जी छनि। ओ अपना कैं मानवतावादी कहैत छथि? स्वभावतः ओ अपन कथा वस्तुक चयन मे वेश साकांक्ष रहैत छथि। परंच मोनक भाव तँ कतौ ने कतौ कोनो ने कोनो तरहें व्यक्त भइ-ए जाइत छैक आ तँ जखन पयर घसिटाय लागैत छनि तँ जल्दी-जल्दी भगवान कैं गोहराब' लगै छथि - हे भगवान; हे भगवान........!

राज मोहन झा वस्तुतः 'जेनेटिक राइटर' छथि। कथा लिखबाक लेल हिनका बड़ पैघ 'प्लॉट' वा विषय वस्तुक प्रयोजन नहि। छोट सँ छोट विषय-वस्तु वा घटनाक पैघ कथाकार रूप मे हम हिनका मानैत छी। पैघ कथा सँ हमर तात्पर्य आकार मे पैघ किन्नहु नहि थिक। पैघ अपन स्तरीयता मे, गुणवत्ता मे, प्रभाव मे, कथाकारिता मे... ओना तँ हिनक कथा विवरणात्मक होइत अछि, तथापि ओ विवरण उबाउ किंवा रोचकताक अभाव जनित दोष सँ ग्रासित नहि। पाठक कैं बान्हि क' रखबाक तथा ओकर जिज्ञासा कैं कथाक संगहि बढ़बैत जयबाक पर्याप्त क्षमता हिनक कथा मे पाओल जाइछ, जे बात कोनो नीक कथाक लेल आवश्यके यहि अनिवार्य अछि। कोनो नीक कथाक लेल एहिना महत्त्वपूर्ण होइत अछि ओकर आरंभ आ अंत। राज मोहन झाक कथा मे एकरो विलक्षणता देखल जा सकैछ। 'छुट्टीक दिन' कथाक अंत एना अछि - ''हम एक टा दीर्घ निःश्वास ल' पाछाँ दूर धरि नमरल लाइन कें देखलहुँ आ डेरा पर छोड़ि आयल लम्बित काज सभक सूची कैं मोन पाड़ैत बसक दिशा मे आँखि टँगि लेलहुँ।''

राज मोहन झाक कथाक एगो आर विशेषता ई अछि जे अधिकांश कथा मे कथा-नायक ओ स्वयं छथि - कतौ हम तँ कतौ ओक रूप मे। पहिने कहल गेल ईमानदारीवला बातक संग संपृक्तक' कैं देखने ई विशेषता हिनक कथा कैं आर बेसी जीवंत-प्राणवंत बना दैत अछि। अपन पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण वला बात प्रायः हिनका मादे कहल जाइत रहल-ए। हमरा जनैत ओकरा जँ आत्म-मंथन किंवा आत्म विश्लेषण कही तँ से बेसी उपयुक्त होयत। लेखक कैं जे कथावस्तु भेटैत छैक से 'कच्चा माल'क रूप मे। जेना कोनो प्रतिभावान शिल्पी काँच माटि सँ अपन मनोनुकूल रंग-विरंगक मूर्त्ति बना लोकक समक्ष उपस्थित करैछ।

राज मोहन झाक कोनो-कोनो कथा मे चित्रात्मकताक विलक्षणता सेहो देखल जा सकैत अछि। एहि संदर्भ मे *अंतिका* क दोसर अंक मे प्रकाशित 'घर' कथाक किछु पंक्ति देखल जा सकैछ -"एक टा चाकर मेघ-खंड चन्द्रमा कैं गिड़बाक लेल नहूँ-नहूँ बढ़ैत आबि रहल छल। आकृति सँओ हुराड़ जकाँ लगैत छल। फेर देखैत-देखैत ओकर एक टा अंग खरहा मे बदलि गेल ... एक बेर हमरा ओ सरदार बल्लभ भाइ पटेल जकाँ लागल तँ दोसर बेर फैल्ट हैट लगौने भगत सिंह जकाँ ... मेघक बीच सँ हुनक मद्धिम प्रकाशक गोला प्रतिभासित होइत रहनि। सहसा ओहि मे हमरा बाबाक आकृतिक आभास भेल। चन्द्रमाक धूमिल प्रकाश-पूंज जेना दुनू भौंहक मध्य हुनक ठोप होइनि...।" कल्पनाक ई उड़ान वस्तुतः काव्यात्मक आनन्द दैत अछि।

राज मोहन झा अपन कथा-वस्तुक चयन मे, अपन पात्रक गठन मे जतेक सतर्क छथि ततेक भाषाक संदर्भ मे नहि। हिनक कथा मे विजातीय भाषा-शब्दक प्राचुर्य एहि बातक प्रमाण थिक। मैथिलीक वर्तमान स्थिति कैं ध्यान मे राखैत आ ओकर शब्द भंडार कैं देखैत एकरा नीक बात नहि कहल जा सकैछ।

(२००१)



कलकत्ताक मैथिली नाट्यकार

कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंचक शुभारंभ होइछ १९५३-५४ ई० मे 'पंडितजी'क अभिनय सँ। स्मरणीय जे एकर पृष्ठभूमि सौखीन अथवा व्यावसायिक नहि अपितु आन्दोलनात्मक रहल अछि। दोसर तरहेँ कहने कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंचक पृष्ठभूमि मैथिली आन्दोलन रहल अछि जकरा कोनो स्थिति मे बिसरल नहि जेबाक चाही। कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली आन्दोलन मे कलकत्ताक अग्रणी भूमिका रहलैए आ एकरा अस्वीकार करब कोनो शुभ बुद्धि सम्पन्न व्यक्तिक लेल सहज संभव नहि। कलकत्ताक एहि अवदानक कारणेँ आचार्य प्रवर रमानाथ झा एकरा मैथिलक हेतु तीर्थ स्थान कहैत छथि।

एकरा एकटा विडंबनाए कहल जाय जे जे मैथिलि भाषा भारतक प्राचीनतम आधुनिक भाषा मे एक अछि (जँ सभ सँ प्राचीन नहिओ) तकर स्वतंत्र सत्ता कैं अस्वीकार कय एकरा एक एहन भाषाक 'बोली' कहल जाय लागल जे स्वयं भाषा छलो नहि अपितु भाषा बनबाक प्रक्रिया मे छल आ मैथिलीक संग एकर स्वप्न-सम्पर्कोटा नहि छलैक। निर्विवाद एकर कारण हमरा लोकनिक राजनैतिक चेतनाक संगहि भाषा-चेतनाक अभावेटा कहल जा सकैछ जकर स्पष्ट छवि मैथिली आन्दोलनक क्रम मे आ मैथिलीक संवैधानिक स्वीकृतिक पश्चातो देखल पाओल जा सकैछ। तथापि जँ मैथिली आन्दोलन सफलताक सोपान धरि पहुँचि पाओल त तकर श्रेय निश्चिते हमर विभूति लोकनि कैं छनि जनिकर संख्या भनहि थोड़ हो परंच अवदान अनन्त, अतुलनीय, अविस्मरणीय। अस्तु।

शुरू-शुरू मे नाट्य-मंच एहि आन्दोलनक सहयोगी अंग वा उपांगक रूप मे देखल जाइछ। नाट्य-मंच जे हेतु लोक रंजनक प्रमुख आ सहज-सुबोध साधन थिक तँ एहि माध्यमे बेसी सँ बेसी लोक जुटा ओकरा भाषणक माध्यमे आन्दोलनक आवश्यकता-अनिवार्यताक बात कहब, एहि लेल प्रेरित-प्रोत्साहित करबटा लक्ष्य छल। एहि मादे प्रायः नहि सोचल गेल छल जे नाट्य-मंच स्वतः एक आन्दोलन थिक आ भाषण द्वारा कहल जायवला विषय-बात नाटकक माध्यमे कहब अपेक्षाकृत अधिक प्रेरक-प्रभावोत्पादक भ सकैछ। ई बात निश्चित रूपेँ पश्चात् चलिकैं हमरा लोकनिक चिन्तन-चेतना मे आयल जे ने मात्र नाट्य लेखनक प्रक्रियाक प्रेरक प्रसंग भेल अपितु नाट्य मंचक सामग्रिक कायाकल्पक कारण बनल, ओकरा सही आ सार्थक दिशा दैत नाट्यान्दोलनक वास्तव रूप प्रदान कएलक। मन रखबाक थिक जे

मैथिली आन्दोलन भाषा आन्दोलन थिक आ एकर सफलताक आधार प्राचीन साहित्यक भंडारेटा नहि, ओकर अविरल-अविच्छिन्न परंपरा, समृद्ध समकालीन साहित्यक भंडारोक प्रयोजन होइछ आ ई समृद्धि नाटक सन सशक्त विधा के बाद द कँ संभव नहि।

आइ जखन कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंचक स्वर्ण-जयन्ती समारोह मनोओल जा रहल अछि त स्पष्ट अछि जे ई नाट्य-मंच अपन पचास वर्षक यात्रा पूर्ण कएलक। ई यात्रा जे सही आ सार्थक दिशा मे भेल से बात हम पहिनहि कहि आयल छी। तैं आवश्यक जे एहि कथनक आधार-औचित्यक विचार-विवेचन-विश्लेषण क ली।

कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंच अपन एहि पचास वर्षक 'यात्रा' मे प्रायः ९०-९५ नाट्य-मंचन केने अछि, जाहि मे किछु नाटिका वा एकांकी सेहो अछि। किछु नाट्य-मंचन कलकत्ता सँ बाहरो अबस्से एहिठामक संस्था द्वारा भेल अछि आ एहि तरहेँ कतिपय नाटक एकाधिक बेर मंचित भेल अछि। मंचित कुल नाटक मे प्रायः २१-२२ गोट अनुदित नाटक थिक आ शेष मौलिक नाटक मे ३५-३६ गोट मात्र एहिठामक नाट्यकार लोकनिक रचना थिक। एहिठाम लिखि देव प्रायः आवश्यक जे एहिठामक नाट्यकार लोकनिक कतिपय नाटक लिखित प्रकाशित अछि परंच मंचित नहि भेल अछि। यद्यपि एकर विस्तृत जानकारी हमर पोथी 'स्मृतिक धोखरल-रंग' मे देल गेल अछि तथापि आगू बढ़बा सँ पहिने कलकत्ताक नाट्यकार आ हुनका लोकनिक कृतिक अवलोकन क लेब विषय-बोध आ विचार-विश्लेषणक सौविध्य हेतु श्रेयस्कर।

१) प्रो० प्रबोध नारायण सिंह — १) प्रेमक रोग
२) हाथीक दाँत

२) श्री सीताराम चौधरी — १) सुखायल डारि नव पल्लव
२) बेमातर

३) श्री गुणनाथ झा — १) कनियाँ-पुतरा
२) पाथेय
३) मधुयामिनी
४) शेष नञि (अ०प्र०)
५) सातम चरित्र
६) आजुक लोक (अ०प्र०)

४) श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — १) नायकक नाम जीवन
२) एक छल राजा
३) नाटकक लेल
४) अनुतरण
५) आन्दोलन
६) रामलीला
७) प्रत्यावर्त्तन
८) जनक
९) इन्द्रमा
१०) ओ कागज केर बाघ छथि
११) प्रियंवदा

५) श्री बाबू साहेब चौधरी — १) कुहेस

६) श्री जनार्दन झा — १) निष्कलंक
२) अभिनेत्री (अ०प्र०)
३) अरुणोदय (अ०प्र०)

७) श्री बिन्देश्वर मण्डल — १) क्षमादान

८) श्री उत्तम लाल मण्डल — १) इजोत

९) श्री देवन मण्डल — १) महकारी

१०) श्री शरत् चन्द्र मिश्र — १) समाजचक्र

११) श्री राजनन्द लाल दास — १) संतो

१२) श्री सुशील चन्द्र झा — १) भामती

१३) श्री कुणाल — १) चेतनाक स्वर (अ०प्र०)
२) भग्न स्तूपक अन्क्षत स्तम्भ

१४) श्री रत्नाकर — १) बतहा (अ०प्र०)

१५) श्री मोहन चौधरी — १) सन्तान (मूल जय जन्म भूमि)

१६) श्री कृष्णचन्द्र झा 'रसिक' — १) विवाह एक धंधा (अ०प्र०)
२) विवाह एक नाट्क
३) विवाह एक समस्या (अ०प्र०)

१७) श्री अशोक झा — १) जिबैत लाश
२) बीर्रो (अ०प्र०)
३) कमउआ पूत

१८) श्री प्रमोद कुमार ठाकुर — १) कलियुगक भगवान (अ०प्र०)

१९) श्री आनन्द कुमार झा — १) टाकाक मोल
२) कलह
३) बदलैत समाज
४) धधाइत नवकी कनियाँक लहास
५) हठात् परिवर्त्तन

२०) श्री शंभुनाथ मिश्र — १) बुड़िवक बेटा टके काबिल (अ०प्र०)
२) मिथिलाक अभिशाप (अ०प्र०)
३) कुर्सी खाली अछि (अ०प्र०)

२१) श्री मधुर लाल मण्डल — १) नव जागरण (अ०प्र०)

२२) श्री शंकपिया — १) कंगना

उपरोक्त सूचनानुसार ५२ गोट नाटक एहिठामक रचनाकारक कृति थिक ५० वर्ष ५२ गोट नाटक।

कलकत्ताक नाट्यकार मे सर्वप्रथम जे नाम अबैछ ओ थिक प्रो० प्रबोध नारायण सिंहक। प्रो० सिंह कलकत्ता मैथिली-आन्दोलनक अग्रणी नेता, मिथिला राज्यक कट्टर समर्थक 'मिथिला दर्शन' मासिक पत्रक यशस्वी सम्पादक, लेखक, अनुवादक छथि। हिनक दुनू नाटिका जेना कि नामे सँ स्पष्ट अछि हास्य-व्यंग्य आधारित अछि। हाथीक दाँत राजनैतिक व्यंग्य थिक—महिला कल्याणक नाम पर महिला लोकनिक शोषणक जीवंत चित्र।

श्री सीताराम चौधरीक दुनू नाटक बंगलाक 'पथेर शेषे' आ 'बैकुंठेर विल' पर आधारित अछि। पहिल वैवाहिक समस्या आ दोसर गलत शिक्षा-संगतिक प्रसादात प्रादूर्भूत भ्रातृकलह के रेखांकित करैत अछि। समस्या-स्वरूपांकन, शिल्प आदिक विलक्षणता आ मंचक सफलता एहि दुनू नाटकक प्रसिद्धिक कारण होइतहुँ एकरा मूलतः मौलिक नहि कहल जा सकैछ।

समकालीन साहित्य मे देश-काल-परिवेशक महत्वपूर्ण स्थान छैक। एकरा संगहि रचनाकारक अपन स्थिति अवस्थान, ओकर अतीत वा पृष्ठभूमि सेहो थोड़ महत्वक नहि। कोनो रचनाकारक चिन्तन चेतना कैँ जागृत करबा मे, ओकरा उद्बुद्ध-उद्वेलित करबा मे, रचनाक स्वर-स्वरूप ओ दशा-दिशा निर्धारण-निरुपण मे एहि समस्त घटक वा उपकरणक अहम् भूमिका होइत छैक। कलकत्ता नाट्य-मंचक पूर्वार्द्धक दू गोट मुख्य नाट्यकार श्री गुणनाथ झा आ श्री उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क

समग्र नाट्यकृतिक अध्ययन-अनुशीलन सँ ई बात स्पष्ट परिलक्षित होइछ। गुणनाथ झाक अतीत मिथिलाक गाम थिक किन्तु नचिकेताक महानगर कलकत्ता। आ इएह अतीत हिनका लोकनिक रचनाक विषय-वस्तुए नहि ओकरा देखबाक दृष्टि आ 'ट्रीटमेण्ट'क पार्थक्य कैँ प्रकाशित-प्रतिभासित करैत अछि।

श्री गुणनाथ झा 'कनियाँ-पुतरा' सँ प्रारम्भ कय 'आजुक लोक' पर विराम लैत छथि आ ई विराम दीर्घ सँ दीर्घतर-दीर्घतम होइत पूर्णताक पर्याय बनल जा रहल अछि जे ने मात्र कलकत्ता अपितु समस्त मैथिली नाट्य-मंच जगतक हेतु दुखद। अस्तु। 'कनियाँ-पुतरा' वैवाहिक समस्याधारित नाटक थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई समस्या मिथिलाक अभिशापे थिक आ स्वाभाविक कारणे एहि पर बड़ बेसी लिखल गेलए। 'आजुक लोक'क प्रथम मंचन हिन्दी मे भेल अछि आ पोथी सेहो प्रकाशित नहि, स्वाभावतः हम एकरा अनुवादक्र श्रेणी मे रखने छी। निस्तुकी त लेखके क सकैत छथि। ओना मंचनक समय सेहो 'मैथिली सँ अनुदित' उल्लेख नहि कएल गेल छल। गुणनाथ जीक अन्य नाटक मे 'सातम-चरित्र' पूर्णतः प्रयोग थिक, 'मधुयामिनी' यथा नाम तथा गुण। 'शेष नत्रि' पाश्चात शिक्षा-सभ्यताक दुष्परिणाम स्वरूप दिग्भ्रमित अनुज आ पितृप्रतीम अग्रजक त्याग तपक तानी भरनी मे बुनल व्यथा-कथा कहैत अछि। गुणनाथ जीक सर्वोत्कृष्ट कृति हमरा जनैत थिक 'पाथेय'। शहरी चाकचिक्य सँ आकर्षित ग्राम्य प्रतिभा पलायनक पृष्ठभूमि मे रचित ई विलक्षण कृति थिक जे साहित्यक उपयोगिता-उपादेयता के पूर्णतः प्रतिभासित-प्रतिष्ठित करैत अछि। आचार्य रमानाथ झाक शब्द मे 'कनियाँ-पुतरा'क पश्चात् ई 'पाथेय' कलाक दृष्टि सँ भव्यगर अछि। विषय-नव, विषयक उपस्थापन नव। भाषा शुद्ध ओ सहज। नाटक मे संघर्षक भाव-सम्पुष्ट..........।'

'नचिकेता'क प्रथम नाट्यकृति थिक 'नायक नाम जीवन' जे जिनगीक महिमा महत्ता के प्रतिपादित करैत नवतम मंच तकनीकक संग एक अभिनव सुखद आश्चर्यक आस्वादन-अवलोकन करवैछ। नचिकेता'क दोसर कृति, जे हमरा विचारेँ हिनक आइधरिक श्रेष्ठ नाट्यकृति थिक से थिक 'एक छल राजा'। विषय वस्तु, नाटकीयता, मंचतकनीक सभ दृष्टिञे सर्वोपरि। घोषक (जकर अभिनय हम स्वयं कएने छी) द्वारा राजा अभिमान कुमारक मृत्यु सम्वाद पर समस्त दर्शक कैँ ठाढ़ भ राजाक आत्माक शान्ति लेल मौन प्रार्थनाक ओ दृश्य बिसरलो केना जा सकैछ। एहि नाटकक सम्बन्ध वरिष्ठ साहित्यकार जीवकान्त कहैत छथि—'एहि नाटकक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत हमरा हर्ष अछि। एकर कथ्य हमरा पसिन्न पड़ल। जमींदारी प्रथाक

उन्मूलनक संग एक प्रकारक सामन्तीक अंत भेल। एकर घोषणा 'एक छल राजा' करैत अछि। तैं हम नाट्यकारक सम्वर्धना करैत छी। ....सार्थक दिशा मे एक सार्थक प्रयासक रूप मे 'एक छल राजा' अविस्मरणीय रहत। मैथिली सहित्यक इतिहास मे एहि पोथीक स्थान अत्यन्त उच्च अछि। ....शिल्पोक विचार सँ 'एक छल राजा' अत्यन्त नव अछि। ....ओ (नचिकेता) आधुनिक नाटककार सभ मे जेना गुणनाथ झा (पाथेय) आ महेन्द्र मलंगिया (जुआयल कनकनी) सँ बहुत आगू छथि।' हिनक तेसर नाट्यकृति थिक 'नाटकक लेल' जे अनिरुद्धक शब्द मे—हमरा अतीत नहि चाही हमरा चाही भविष्य। एकटा सुन्दर भविष्य......। आ निश्चिते ई सुन्दर भविष्य अनिरुद्धक असगरक नहि सम्पूर्ण मानवताक लेल थिक। सरिपहुँ साहित्य सर्जना-साधनाक कल्पना-कामना त एही सुन्दर-सुखद भविष्य मे सन्निहित अछि।

नचिकेताक अन्यान्य नाटक प्रकाशित त अछि परंच मंचित नहि भेल अछि। ओना 'प्रियंवदा' आ 'प्रत्यावर्तन'क अतिरिक्त अन्य नाटिका थीक। नचिकेता नित-नूतन भाव-भूमिक ओ तकनीकक खोज प्रयोग मे रत रहैत छथि तकर उदाहरण हिनक नाटक सभक अध्ययन अनुशीलन सँ स्पष्ट परिलक्षित होइछ। ई नाट्यकारक संगहि नीक कलाकार आ कुशल कवि छथि जकर छाप हिनक कृति सभ मे सहजहि देखल पाओल जा सकैछ।

पहिल पर्यायक अन्य नाट्यकार मे सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, जनार्दन झा, उत्तम लाल मण्डल अभिनेता पहिने आ नाट्यकार पश्चात छथि। ओना वैवाहिक समस्या पर आइधरि जतबा नांटक लिखल गेल अछि ताइ मे चौधरीजीक 'कुहेस' हमरा जनतै सभसँ नीक थिक। जनार्दन जी लिख सँ हटि कैं नाट्यरचना कएलनि आ ओइ मे जासूसी पुट नीक। श्री देवन मण्डल जीक 'महकारी'क पृष्ठभूमि महानगर आबि कंचन-कामिनीक तृष्णा मे भुतिऐल अपन गाम-घर परिवार के बिसरि गेनिहार मित्र छथिन। 'संतो' श्री राजनन्दन लाल दासक नाटिका छनि। श्री शरत्चन्द्र मिश्रक 'समाज चक्र' अन्तर्जातीय विवाहक पक्षधर अछि। एहिठाम ई कहि देब आवश्यक जे पोथीक अनुपलब्धता सभ नाटकक मादे किछु लिखबा मे बाधक रहल अछि। धन्यवाद बन्धु लोकनिकैं जे पढ़बा लेल ल जेता आ घुरओनाइ बिसरि जेता।

दोसर पर्याय अर्थात १९८०क पश्चातक बड़ थोड़ मंच देखबाक सुअवसर हमरा उपलब्ध भ सकल अछि जकर उल्लेख हम अपन 'स्मृतिक धोखरल रंग' मे सेहो केने छी। पोथी सेहो बड़ थोड़ प्रकाशित भेल छैक। एहना स्थिति मे किछु कहब-लिखब भ्रमोत्पादक भ सकैछ, तैं जत सामान्य, किन्तु सत्याश्रित।

हिनक जीक तीन गोट मंचित नाटक मे मात्र 'विवाह एक नाटक' प्रकाशित अछि। ओना जेना कि नाम सँ प्रतिभासित होइछ, तीनू नाटक वैवाहि समस्याधारित अछि। एही श्रेणी मे अशोक जीक 'जिबैत लाश' आनन्द कुमारक प्रथम चारू नाटक अबैत अछि। आनन्दक शेष नाटक राष्ट्र-प्रेमक भावातिरेक अछि। अशोक जीक 'कमाउआ पूत' नव कथा-वस्तुक भाव-भूमिपर रचित भेल अछि। पाश्चात्य सभ्यता संस्कृतिक प्रभाव मे परिवारक परिभाषा परिवर्तित भ गेल छैक जाइ मे माँ-बापक कोनो स्थान नहि। वस्तुतः कमौआ पूत लोकनि कैं अपन सुख-सुविधा, ऐश-आरामक बाट मे बाप-माँ बोझ बुझाइत छनि। ओना मीना सन महीयशी महिलोक अभाव मिथिला मे नहि, यद्यपि नाट्यकार स्वयं ओहि महिलाक महिमा महत्ताक पूर्ण विस्तार-विकास पर विराम लगा देने छथि। अशोक जी नेता छथि अभिनेता छथि आ तत्पश्चाते नाट्यकार छथि जे हिनक शब्द शिल्प, स्वर-स्वरूप निर्धारण नियोजन मे स्पष्टतः परिलक्षित होइछ।

नाट्य रचना मंच के ध्यान मे राखि कएल जाइत अछि अबस्से परंच से होइत अछि भाषा मे। नाटक साहित्यक प्रमुख विधा थिक। हमरा जनैत दोसर पर्यायक नाटककार लोकनि एहि बात के गंभीरता सँ नहि लेने छथि। नकल सृजनात्मक शक्ति-क्षमताक हेतु घातक होइछ। प्रदर्शन मे थपड़ी-पौनाइ एक बात थिक आ साहित्यिक समीक्षाक कसौटी पर सही—शुद्ध उतरव दोसर बात। सृजन-साधना जाग्रत चेतना, सम्पूर्ण-समर्पण, सहज, स्नेह, उदारचित्त आ उदात्त भावना मंगैत अछि। आशा जे कलकत्ताक वर्तमान नाटककार लोकनि एहि बात कैं ध्यान मे रखैत अपन प्रतिष्ठित-प्रशंसित परम्पराक परिवर्धन-अग्रसारन मे सफल होएता।

(२००४)



कलकत्ता मैथिली रंगमंचक महिला कलाकार

मैथिली आन्दोलन मे कलकत्ताक अग्रणी भूमिका रहलैक अछि । बात मैथिलीक मान्यताक हो किंवा साहित्यिक सांस्कृतिक विकासक, कलकत्ता कतौ पाछु नहि । स्वभावत: आचार्य रमानाथ झा एकरा मैथिलक हेतु सिध्दपीठ जकाँ तीर्थस्थान कहैत छथि । यात्रीजी जँ कलकत्ता के मिथिलाक लघुसंस्करण कहै छथि त राजकमल चौधरी क अनुसार ''कलकत्ता मे अपन स्थानीय द्वीप जकाँ एकटा छोट-छीन 'मिथिला' अछि । जकर विराट स्वरुप प्रतिवर्ष विद्यापति जयन्तीक पर्वक अवसर पर देखवाक संयोग भेटैत अछि।'' कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि विद्यापति जयन्ती पर्वक आरंभ मैथिली आन्दोलन-मंचक रुप मे भेल छल, जे आइ पथ भ्रष्ट भ विकृत आ विकारयुक्त अवस्थाकेँ प्राप्त भेल अछि । आ एही आन्दोलनक क्रम मे आरम्भ होइछ कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक ।

१९५३ मे अभिनीत भेल छल पंडित जी, स्थानीय चारुचन्द्र कालेजक एक कक्षा मे। १९५४ मे 'छींक' प्रहसन आ 'उगना' नाट्क मंचित भेल। १९५९ मे 'मिथिला कला केन्द्र' नामे नाटय संस्था बनल ३० दिसम्बर कें जकर आदि स्तंभ छलाह --शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आ लक्ष्मीनारायण मिश्र। आ एतै स गति पकड़ैछ कलकत्ताक मैथिलि रंगमंच जे १९७६ मे जा कें विराम लैछ।

एहि अवधिमे संख्याक हिसावें जे बड़ बेसी नाटक भेल से बात नहि । प्राय: ५१ गोट नाटक मंचित भेल अछि ,जाहि मे किछु एकाधिक बेर मंचित भेल अछि आ किछु कलकत्ताक बाहर-गोंड्डा, धनवाद आदि मे मंचित भेल अछि । वस्तुत: रंगकर्मी लोकनिक प्रयास रहल मैथिली रंगमंच कें समकालीन भारतीय रंगमंचक समकक्ष ठाढ़ करबाक आ एहि मे हुनका लोकनि कें सफलतो भेटलनि। एहि प्रयासक परिणाम थिक जे कलकत्ता सं ओतेक रास मौलिक नाटक प्रकाशित भ सकल। एक नहि दू-दू गोट नाट्य-मंच विषयक पत्रिका प्रकाशित भेल।

कलकत्ता मैथिली रंगमंच के एक स एक कुशल कलाकार उपलब्ध छलैक । एहि मे कतेको पश्चात चलि कें नाट्यकारक रुपमे सेहो सामने अबैत छथि । परंच महिला कलाकारक सभ दिन अभावे रहलैक । महिला कलाकार सं एहिठाम हमर तात्पर्य अछि मैथिली भाषी महिला कलाकारक । स्वभावत: एहि अभावक पूर्ति लेल हमरा लोकनि कें विशेष रूपें बंगला नाट्य-मंच, ओकर कलाकार पर निर्भर रहय पड़ल। ओना त आरम्भिक किछु नाट्य मंचन मे बंगला मंचक पुरुष कलाकार सेहो हमरा लोकनिक सहयोगी सहभागी रहल छथि परंच तकर कारण अभाव नहि कहि सद्भाव कहब बेसी उपयुक्त होएत।

महिला कलाकार मे जे नाम हमरा मोन पड़ैत अछि से थिक-सीता देवी, सत्तो देवी, वीणा सेन, वीणा राय, कृष्णा सरकार, राजकुमारी देवी, चन्द्रकला किरण, बुला सेनगुप्ता, शेफाली गांगुली,दीपाली चौधरी, कुमारी नीलम चौधरी, माया बोस, उमा शर्मा, संगीता, आरती सन्याल आदि । एहि मे वीणा राय, कृष्णा सरकार, चन्द्रकला किरण कें छोड़ि अन्यान्य केयो एक नाटक मे त केयो दू अथवा तीन नाटक मे भाग लेने छथि। ओना प्रारम्भिक नाट्य मंचन मे योगदानक लेल सीता देवी, सत्तो देवी आ वीणा सेन के बिसरल त किन्नहुं नहि जा सकैछ। यद्यपि ई लोकनि एहि जययात्रा मे बेसी दूर धरि संग नहि द सकली । एहि मे अपन विशेष अभिनयक कारणे वीणा सेन बेसी चर्चित प्रशंसित रहली यद्यपि मैथिलीक शुद्ध उच्चारण करए मे ओ सफल नहि भ सकली। ई बात आनो कलाकार लोकनिक संग स्वाभाविके देखल गैल जे लोकनि एक वा दूटा मंचन में भाग लेलनि । एहि मामला मेआरती सन्यालक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि जे एकमात्र नाटक 'सुखायल डारि नव पल्लव' मे अभिनय केने छली, परंच अभिनय विलक्षणता ओ भाषाक शुध्दताक कारणे सतत मन राखल जएती। यात्रादल मे चलि जयबाक कारणे ई हमरा लोकनि कें फेर उपलब्ध नहि भ सकली।

आगा बढ़बा स पहिने हम स्पष्ट क देबए चाहै छी जे हमर लेखनक आधार स्मृति मात्र थिक । कोनो लिखित दस्तावेज एहि मादे उपलब्ध नहि। हम १९६३ क शेष मे कलकत्ता आएल रही । स्वभावत: एकर पूर्वक अभिनयक सम्बन्ध श्रोता मात्र छी। हमर अतिरिक्त हमर अग्रज शुकदेव ठाकुर जे गाम मे छथि, बन्धुवर गुणनाथ झा (नाट्यकार) आ दयानाथ झा (कलाकार) के छोड़ि एहि सम्बन्ध जानकारी रखिनहार केओ छथिहो नहि जनिका स विशेष सूचना संग्रह संभव हो। अस्तु।

कलकत्ता मैथिली रंगमंच क विकाश मे जाहि दू महिला कलाकारक सहयोग सर्वोपरि अछि, से छथि वीणा राय आ चन्द्रकला किरण। अपन अभिनय आ भाषाक शुध्दताक कारणे ई लोकनि बेसी लोकप्रिय छली। कलकत्ता स बाहरोक मंचन मे ई लोकनि भाग लेने छली। मंचक अतिरिक्त ई लोकनि हमरा लोकनिक संग मैथिलीए मे वार्तालाप करैत छली। वीणा राय अभिनयक संगहि 'बेमातर' मे कंठ संगीत आ 'आगन्तुक' मे निर्देशन से हो केने छथि। ओना त ई सभ तरहक चरित्रक अभिनय करैत छली परंच 'विलेन' क भूमिका के आर बेसी जीवंत, प्राणवंत करै में सक्षम छली । 'सुखायल डारि नव पल्लव' आ 'बेमातरक 'माया' आ 'कुहेसक' 'संध्याक' भूमिका मे जे हिनका देखने होएत से कहिओ बिसरि नहि पाओत।

चन्द्रकला किरण सर्व प्रथम १९६६ मे 'सुखायल डारि : नव पल्लव 'कपार्वतीक भूमिका मे अवैत छथि । संयोग कही जे कलकत्ताक मंच पर हमरो पदार्पण एही मंच

स होइत अछि-अरुणक भूमिका मे । एहि नाटकक सफलताक श्रेय निर्विवाद निर्देशक प्रवीर मुखर्जी के जाइत छनि जे हमरा दुनू नव कलाकार के पटु बनओलनि । एकर पश्चातक प्रायः समस्त नाटक मे चन्द्रकला किरणक सहयोगिता देखल जा सकैछ आ सभ मे उपरा-उपरी अभिनय । तथापि 'कुहेस', 'पाथेय', 'प्रेम एक कविता' 'एक छल राजा' 'नाटकक लेल' आदि मे हिनक अभिनय विशेष उल्लेखनीय कहल जा सकैछ । मात्र एकटा मंचनक सहयोगिता रहितो 'नसबंदी' मे बिलक्षण अभिनयक कारणे उमा शर्मा सर्वदा मन राखल जएती।

१९८३ मे मंचित भेल छल साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिला नाटक'। एहि मे मंजु मल्लिक, दीपमालिका सिंह, शारदा चौधरी, रेणुका दास, कान्ता झा आदिक उपस्थिति देखल जाइछ , परंच पश्चातक कोनो मंच पर हिनका लोकनि के नहि देखल गेल। केवल रेणुका दास 'फुटपाथ'क मंचपर देखल गेली । मैथिली भाषी महिला कलाकार मे उपरोक्तक अतिरिक्त गीता चौधरी, अमोला झा, राधा रानी झा, कृष्णा रानी झाक नाम सेहो अबैत अछि। परंच हिनको लोकनिक उपस्थिति प्रायः अस्थायी भेल। एहि संदर्भ मे दू गोट नाम जे विशेष उल्लेखनीय अछि से थिक संगीता झा एवं बन्दना झा। ई लोकनि एकाधिक वेर मंच पर आयल छथि आ अपन अभिनय क्षमता स रंगमंचक इतिहास मे अपन स्थान सुरक्षित करबा मे सफल भेल छथि। एहिठाम लिखनाइ भरिसक आवश्यक जे १९७६ मे जे विराम लागल छल १९८३ मे तकर अवसान भेल आ फेर नियमित रुपे नहि तैयो कहियोकाल नाट्य मंचनक आयोजन होमय लागल आ ई समस्त मैथिलानीक आविर्भाव एही पर्याय मे भेल। बंगला भाषी अभिनेत्री मे अनामिका बनर्जी, जया बनर्जी, रिंकी बनर्जी, अनामिका साहा, श्रीमती करुणा आदिक नाम सेहो एहि ठाम उल्लेखनीय अछि। २००२ मेआयोजित मैथिली नाट्य प्रतियोगिता मे श्रीमती करुणा आ बन्दना झा कें क्रमशः प्रथम आ द्वितीय पुरस्कार देल गेल छल। ओना पुरस्कार बड़ थोड़ प्रश्नातीत होइत अछि, आ ताहि लेल निर्णायकक योग्यताक संगहि ओकर नेत बेसी दायी रहैत आयल अछि। परंच हिनका लोकनिक अभिनय क्षमता पर प्रश्न चिन्ह नहि लगाओल जा सकैछ।

त इएह थिक संक्षेप मे कलकत्ता रंगमंचक महिला कलाकारक कथा। ओना कथा त ई अहिए नहि। ताहि लेल त प्रत्येक कलाकारक विभिन्न भूमिका कें पृथक - पृथक विवेचित विश्लेषित केनाइ आवश्यक । ई त मात्र नामावली थिक। आ ताहू मे ज कोनो नाम छुटि गेल हो त से असंभव नहि। कोनो सहृदय पाठक जं एहि अभावक पूर्ति क सकथि, हमरे नहि मैथिली मंचक सेहो उपकारे होयत।

(२००४)

❖

समकालीन कथाक सौन्दर्य-बोध

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल छैक। किन्तु सत्य त इएह तिक जे पूर्वक भाववादी-साहियिकेँ बृहत्तर मानव समाजसँ कोनो सम्पर्क नहि रहलैक - दर्पणक बात त दूर रहओ। भाववादी साहित्य त अस्तित्वहीन आकाश-पातालक कपोल कल्पित देव दानवक अलौकिक कृया-कलापक आलापन मात्र छल। माटि सँ जं ओकर सम्पर्क छलैको त मंदिर-महल क भितरे धरि। पश्चात् चलिकें राजनीतिक क्षितिज पर मार्क्सवादी दर्शनक अभ्युदय भेलासँ समस्त विश्वमे एगो नब आलोड़न सृष्टि भेल आ प्राचीन राजनैतिक, सामाजिक संरचना चड़मरा उठल, एगो-नबारंभ भेल। एहिमे विज्ञानक प्रगति निर्विवाद अपन अहम् भूमिकाक निर्वाह कएलक। एहि परिवर्तनक प्रभाव साहित्य पर अवश्यमभावी छल। साहित्यमे भौतिक वादक उन्मेष देखल गेल। मार्क्स कहै छथि -"मनुष्यक जीवन ओकर चेतना द्वारा नहि बल्कि ओकर चेतना ओकर-सामाजिक जीवन द्वारा निर्धारित होइत अछि।" आ इएह चेतना साहित्यकेँ वास्तव मे समाजक दर्पण बनओलक। साहित्य मे पहिल बेर युग-युग सं उपेक्षित-अवहेलित धरतीपुत्रक स्थान भेल। ओकर कथा-व्यथा, आशा-आकांक्षा, जय-पराजय साहित्यक कथावस्तु बनय लागल। एहिसँ एक दिस जँ साहित्यक क्षेत्र विस्तार लाभ कएलक त दोसर दिस ओकर कलेवर स्वस्थ-सवल आ आत्मा उदार-महान बनलैक। साहित्यक एही भावधाराक नव्यतम कड़ी थिक समकालीन साहित्य।

समकालीन साहित्य मे कथाक अपन विशेष महत्व छैक। विशेष क मैथिलीमे कविता आ कथा-इएह दूविधा परिमाण आ परिणाम दुनू दृष्यित्रे अन्य विधानसँ आगू अछि आ विश्वक समकालीन कविता - कथाक संगे डेगमे डेग मिला अगुआ रहल अछि।

समकालीन कथा-साहित्यके यथार्थतः Creative reproduction of reality कहल गेल छैक। स्वभावतः समकालीन कथा कल्पनाक कोखि सँ नहि, वास्तविकताक धरातलसँ जन्म ग्रहण करैत अछि। स्वाभाविक छैक जे एकर सौन्दर्य सेहोकाल्पनिक वा अवास्तव नहि। आ जहाँधरि बोधक अछि प्रश्न, से निर्विवाद दृष्टि पर निर्भर करैछ, चेतना-भावनासँ प्रभावित-परिचालित होइछ।

ताजमहलक सौन्दर्य विश्वविख्यात अछि। एकर गणना विश्वक आश्चर्य मे कएल जाइछ। एहि संदर्भ में काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन कथा 'कोन महल नाम रखबै एकर' मे कहैत छथि :—

''कतेक काव्य बनल अछि ताजमहल पर ? कतेक तथाकथित सहृदय कवि-कलाकार ताजमहलकेँ देखय जाइत छथि आ शाहजहाँक प्रेमक प्रशंसाक गीत गबैत छथि ?

परन्तु ताजमहल थीक की ? शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक कि हुनक वैभव प्रभुत्वक प्रतीक ? कोन कृतित्व अछि ताजमहलमे शाहजहाँक ? नक्सा बास्तुकलाविदक! लूरि निर्माणकर्त्ताक! परिश्रम मजूरक! आ धन, जनताक!

जाहि प्रेमकेँ हमसब पवित्र कहै छिऐ से मानवेटाक हृदय-वस्तु थिक! लाखो लोकक खून, शोषण, अपमान, गञ्जन पर जकर महत्ता निर्भर छलै ताहि शाहजहाँ-मुमताजक प्रेमकेँ पवित्र हेबाक अवसर कहाँ भेटलैक ? पाषाण हृदय द्वारा पाषाण हृदयाक स्मारक पाषाणेक त भेलै किने ?

मुमताजक वाह्य सौन्दर्य छल शाहजहाँक प्रेमक आलम्बन आ प्रेमो छल वाह्य सुन्दरे। ताजमहलक विलक्षणताओ अछि वाह्य सुन्दरे। आ आइ जे स्मारक देखलहुँ से ? देखितहिं बुझि जेबै जे स्मारक बनौनिहारक हृदय मानवक थिकै, सुनुरीक शरीरक सुन्दरता नहि, ओकर हृदयक असीम मातृत्व, अपार मानव-कल्याणक भावना छलैक प्रेमक आधार! पवित्र प्रेमक पयोधि अछि स्मारक-निर्माताक हृदयमे।''

उपरोक्त कथन स्पष्टतः समकालीन कथाक दृष्टिकोणके उद्भासित करैत अछि, ओकर प्रेमक सौन्दर्य-बोधकेँ पारिभाषित-व्याख्यायित करैत अछि। चैत-वैसाखक ट्हाटही दुपहरियामे कोसक कोस पाँतर पैरे वा साइकिल सँ पार करैत, घामे-पसेने तर-बतर भेल,हकासल-पियासल कोनो बटोहीकेँ जँ कोनो नवगछुगलीक शीतल छाहरि भेटि जाइ आ ताइठाम एक हाथमे सरबा भरि अंकुड़ी आ दोसर हाथमे लोटा भरि ठंढा पानि लेने स्वागतमे ठाढ़ कोनो युवक, त ओकर आनन्दक कल्पना करू। की ताजमहल ओकरा ई आनन्द द सकैछ ? की तथाकतित स्वर्गक कल्पवृक्ष ओकरा ई आनन्द द सकैत छैक ? अभिशप्त कोशी अंचलक ओ युवक जकर स्त्री असमय विदा भ गेल छलै, प्रेम आ सेवाक साक्षातरूप, जकरा अपना त सन्तान नहि छलैक परञ्च सेवा-सिनेहक कारणे समस्त टोल पड़ोसक लोक माइक आदर-सम्मान देने छलैक, ताहि सुनुरीक सारापर सिनुरिया आमक गाछक ई जीवंत स्मारक - ई थिक समकालीन कथाक सत्य, ओकर सौन्दर्य जे विश्वक कोनो स्मारक, कोनो महाकाव्यसँ महत् आर सुन्दर थिक।

स्पष्ट छैक जे सुन्दर उएह नहि थिक जे देखैमे नीक लागय, आँखिके आकर्षित करय। वस्तुतः सुन्दर त ओ थिक जे सत्य थिक, वास्तव थिक आ लोक-कल्याणकारी

हो। तें वास्तव उएह नहि थिक जे अछि किंवा भ रहलए, वास्तव ओहो थिक जे हेबाक चाही। हेगेल कहै छथि - ''विवेक-संगत थिक उएह वास्तव तिक, आ जे वास्तव तिक उएह विवेक संगत थिक।'' कहबाक प्रयोजन नहि जे समकालीन साहित्यक सत्य, परम सत्य थिक मनुख आ सुन्दर जीवन। जीवन सँ पैघ, जीवन सँ बेसी सुन्दर दोसर नहि। तेँ जीवन-रक्षार्थ कएल गेल समस्त कार्य-प्रयास सुन्दर थिक। एहिठाम हम राजकमल चौधरीक प्रसिद्ध कथा 'दमयन्ती हरण' क चर्च करय चाहब। गामक गणमान्य लोक, समाजक ठेकेदार लोकनिक नजरिमे दमयन्ती वेश्या थिक जे गाम-समाजक कलंक थिक आ तें ओकरा मंदिरक पछुआरमे ककरो संग होएबाक आरोपमे कान-कपार फोड़ि देल जाइछ। परञ्च दमयन्तीक वास्तविकता की थिक ? ''.......हम जखन मन्दिर पैसलहुँ त ओ विहवल स्वरें महादेवक प्रार्थना कऽ रहलि छलीह। संस्कृतक कोनो श्लोक नहि, विद्यापतिक कोनो नचारी नहि, साधारण भाषामे एतबे शब्द - ''हे महादेव, चारि दिनसँ हमरा आङन मे चूल्हा नहि पजरल अछि। आइ हमरा पर, हमरा माइ पर दया करू हे देवता! भूख-पिआस नहि सहल जाइत अछि।''

दमयन्तीक ई दयनीय स्थितिसँ लोक नहि जनैत छल से बात नहि। जयभद्र स्वीकार करैत छथि - ई दमयन्ती त बड़ सुशीला कन्या छलीह। मुदा माय हिनका चौपट क देलथिन। आ, माइयोकेँ की दोष ? ने जमीन-जायदाद, ने गहना-गुरिया आ ने आङनकुलमे केयो पुरुष। गाममे कोनो व्यक्तिक हृदयमे दया-मायाक लेश नहि। तखन उदर पूर्ति कोना कएल जाय ? तखन देह नहि बेचल जाय त आर कोन उपाय ?

दमयन्तीक रूप सौन्दर्य! ''श्यामाँगी पीठधरि झुलैत केश-राशि, पातर देह, हाथमे लाहक तीन-चारिटा चूड़ी। कोनो गहना नहि, किन्तु माटिक दीप सन आभामय रूप ....।''

आ दमयन्तीक सत्य, ओकर आत्म-सौन्दर्य - ''अहाँ सभ पुरुष छी ने! निस्सहाय नारी-जाति पर दया करबामे अहाँसभ बड़ गौरवक अनुभव करैत छी। मुदा, हम स्त्री नहि छी, फूल भैयाक तऽ माटिक फूटलि हाँड़ी छी। हमरा पर दया करबाक कोनो प्रयोजन नहि। अहाँ जाउ ....।''

''बजिते-बजिते दमयन्ती अपना घर मे चलि गेलीह। हिचुकि-हिचुकि कऽ कनबाक हुनकर स्वर बड़ीकाल धरि वज्र बनि कऽ हमरा हृदय पर खसैत रहल।''

ई थिक समकालीन कथाक सौन्दर्य-बोध जे नारीकेँ सुन्दर-मानैत अछि मुदा उपभोग्य-वस्तु नहि। तेँ पाठककेँ पार्वती ओकर चरित्र सुन्दर लगैत छैक, आकर्षित

करैत छैक, ने कि समाजक ठेकेदार लोकनिक चरित्र। दमयन्तीक रूप-सौन्दर्य सँ बेसी ओकर आत्म-सौन्दर्य आकर्षित करैछ जखन कि निर्विवाद ओ रूपवती अछि। ओकर सुन्दरता वाह्य वा आन्तरिक - अकृत्रिम अछि, स्वच्छ आ पवित्र अछि।

जेना कि पहिनहुँ कहि आयल छी, सुन्दर उएह नहि थिक जे देखयमे नीक लागय। महकारी फड़ देखबामे कम सुन्दर नहि, किन्तु तैयो लोक ओकरा सुन्दरमे परिगणित नहि करैछ। वास्तवमे सुन्दर त ओ थिक जे उपयोगी हो। अहितकर नहि कल्याणकर हो। संगहि इहो स्मरण रखबाक थिक - युगक अनुसार सौन्दर्यक परिभाषा सेहो बदलैत रहैछ। पूर्वक अस्पृश्य आजुक सुन्दर थिक।

—तौं पढ़बे ?

मोस्ताककैं बड़ आश्चर्य लगलैक। आँखि निड़ाड़ि बाप दिश तकिते रहल।

—कि पुछलिअउक ?

—ऊँ ....आ सिलेट-पेलसुन.........किताब ?

—सब भऽ जेतउक।

—आ ताडा-घोड़ा ?

—रिक्शा कीनब।

—ऐँ......रिक्शा ? मारि-गारि बिसरि मोस्ताक कूदि उठल आ देहरि लग अबैत मायसँ टकरा गेल।

(रमजानी/ललित)

धीरोदात्त नायकक सृष्टिकर्त्ता भाववादी साहित्यकार लोकनि एहन कल्पनाओ नहिकऽ सकैत छलाह जैं एगो ताडा-चालक कोनो कथाक नायक भ सकैछ। ओकर कथा-व्यथा, आशा-आकांक्षा कोनो कथाक कथावस्तु भ सकैछ। परञ्च समकालीन कथाक ई सत्य थिक।

समकालीन कथा ने मात्र श्रमक महत्ताकेस्वीकृति प्रदान करैछ, अपितु ओकरा प्रतिष्ठित करैछ, ओकर गुणगान करैछ। तैं समकालीन कथाक हेतु गमलाक गुलाब सँ बेसी सुन्दर आ आकर्षक मजूरक गस्सल बाँहि, चाकर छाती ओकर घामक बून्द अछि, कारण ई वास्तव थिक आ तैं सुन्दर।

आ रिक्सा ? यथार्थ थिक। ताडाक समय शेष छैक। रिक्शा प्रतीक थिक प्रगतिक जे सहजे मोस्ताककैं आनन्द दैत छैक, उल्लसित-उत्साहित करैत छैक। ओ बाल स्वभावक विपरीत पढ़बा लेल तैयार होइत अछि आ दौड़ैत अछि अपन संगी-साथीकैं ई सुन्दर सुखद सम्वाद कहबाक लेल। निर्विवाद काल्पनिक पुष्पक विमान ओकरा ई आनन्द नहि द सकैत छलैक। ई भावना चेतना, ई दृष्टि, ई सौन्दर्य-बोध थिक समकालीन कथाक।

ई कहब उचित नहि जे आनन्द काल्पनिक सौन्दर्य दैते नहि अछि। आनन्द ओहो दैत छैक, मुदा ततेक नहि जतेक वास्तव - देखल आ भोगल। काल्पनिक सौन्दर्यक एगो सीमा होइत छैक आ ई लेखककैं जते आनन्द दैछ, आवश्यक नहि तते पाठकोकैं, कारण लेखक आ पाठकक कल्पना शक्ति समान नहि होइछ। वास्तव मे सौन्दर्यक ई विशेषता छैक जे ओहिसँ थोड़-बहुत पाठको परिचित रहैत अछि। आ सबसँ पैघ बात थिक उपयोगिता। इएह कारण थिक जे वास्तव सौन्दर्य अधिकसँ अधिक पाठक लेल सहज सम्भव भ पबैछ। समकालीन कथाक सौन्दर्य इएह वास्तव होएबाक कारण ओ सार्वजनिक होइतत अछि। तैं कहबाक प्रयोजन नहि जेसमकालीन कथा सौन्दर्यक संगहि सौन्दर्य-बोधक आयामकैं विस्तार देलक अछि, ओकरा व्यापक बनओलक अछि। समकालीन कथाक ई सौन्दर्य-बोध ओकर स्वस्थ आ प्रगतिशील जीवन-दृष्टिक परिचायक थिक, उदार-उदान्त भावनाक द्योतक थिक।

(१९९६)



मैथिली लोक साहित्य : उत्पत्ति, उपयोगिता, अनुसंधान

लोक साहित्य दू शब्दक संयोग सँ बनल अछि—लोक आ साहित्य। मैथिली मे लोक शब्द दू अर्थ मे विशेष परिचित-प्रचलित अछि। पहिल थिक जगत आ दोसर मनुष्य। संस्कृत मे लोकक अर्थ होइत छैक जीव जगत। तीन किंवा चौदह लोकक परिकल्पना एही आधार पर कएल गेल अछि। मैथिली मे जगतक अर्थ मे लोकक प्रयोगक कारण संस्कृतक सन्निकटता कहल जा सकैत अछि। लोक-परलोकक व्यवहार एही अर्थ मे बड़ सहजताक संग हमरा लोकनि करैत आयल छी। तहिना जखन हमरा लोकनि अपन लोक किंवा फलां टोल वा गामक लोकक बात करैत छी त ताहि सँ मनुष्यक अर्थ बहराइत अछि। परंच जखन हम लोकसाहित्यक बात करैत छी त एहि लोकक एक विशेष अर्थ ध्वनित होइत अछि, जे थिक सर्वसाधारण लोक। एहीठाम आबि कैं लोक अर्थात् मनुष्यक वर्गीकरण किंवा विभाजन भ जाइछ। एहि विभाजनक अनुसार पहिल श्रेणी मे ओ लोकनि अबैत छथि जे सविधि शिक्षा संस्कार सँ बिनु परिचित-प्रभावित भेने अपन परंपराक प्रवाह मे प्रवाहित भ रहल छथि, आ दोसर श्रेणी मे ओ लोकनि छथि जे एकर विपरीत सविधि शिक्षा संस्कृतिक आलोक मे आलोकित-उद्भासित भ रहल छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे संख्या आइयो पहिल श्रेणीक लोकेक अधिक अछि।

मैथिली मे सर्वसाधारण वा जनसाधारणक अर्थ मे लोकक प्रयोग अंग्रेजीक ''फोक'' शब्दक समानार्थी थिक। ''एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका''क अनुसार आदिम समाजक समस्त सदस्य के लोक कहल जाइत छैक। ओतबे नहि, सभ्य राष्ट्रक जनसमुदाय के सेहो एहि शब्द द्वारा अभिहित कएल जाइछ। परंच जैखन एकरा संग कथा, गीत, संगीत, साहित्य, संस्कृति आदि शब्द संयुक्त भ जाइछ, ई विशेष अर्थक बाहक बनि जाइछ, जकर अर्थ होइछ औपचारिक वा विधिवत शिक्षा, नागरिक संस्कृतिक प्रभाव सँ पृथक निरक्षर वा अखरकटू लोक। एही आधार पर प्राय: किछु तथाकथित विद्वान लोकनि लोक कैं असभ्य, असंस्कृत, रूढ़ परंपरावादी, अंधविश्वासी आदि विशेषण सँ विभूषित करबा मे संकोच-बोध नहि कएने छथि। स्वभावत: डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी कहै छथि जे लोक शब्दक अर्थ ग्राम्य वा जनपदीय नहि अपितु गाम सँ नगरधरि चतरल-पसरल ओ समस्त जनसमुदाय थिक जकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार पोथी-पतरा नहि छैक। ई लोकनि सुशिक्षित सुसंस्कृत नगरीय लोकक अपेक्षा बेसी सहज-सरल आ स्वाभाविक होइत छथि।

डॉ० सत्येन्द्रक अनुसार ''लोक'' मानव समाजक ओ वर्ग थिक जे आभिजात्य संस्कार, शस्त्रीयता तथा पांडित्य चेतना ओ पांडित्यक अहंकार सँ शून्य एक परंपराक प्रवाह मे जिवित रहैछ। वस्तुत: लोकसाहित्य एही वर्ग विशेषक साहित्य थिक जे लोकक द्वारा, लोकक मादे, लोकक लेल सृजित-संरक्षित, पोषित-प्रसारित भेल अछि आ भ रहल अछि। लोक जीवने सन सहज-सरल-स्वाभाविक, निश्छल-निर्मल-निर्विकार एक कंठ सँ दोसर कंठधरि प्रवाहित होइत एक युग सँ दोसर युगक अविकल अविराम यात्रा करैत रहल अछि। स्वभावत: मालिनोवस्की एवं आर०ब्राउन लोक साहित्य के जीवित संस्कृतिक अविछिन्न ओ अति आवश्यक अंगक रूप मे उल्लेख करैत छथि।

लोक-साहित्यक उद्भव किंवा शुभारंभ कहिया भेल तकर निस्तुकी आइधरि नहि भेल अछि आ होयबो प्राय: संभव नहि। परंच ई त निश्चिते जे ई लिखित साहित्य सँ बड़ बेसी प्राचीन अछि। मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ ''वर्णरत्नाकर'' मे लोरिक नाचक चर्च एकर ठोस प्रमाणक रूप मे सहजहिं प्रस्तुत कएल जा सकैछ। स्पष्ट छैक जे लिखित साहित्यक आरंभ लिपिक आविष्कारक पश्चाते भेल होयत, परंच लोकसाहित्य, जे लिपिक मुखापेक्षी नहि, भाषाक आविष्कारक संगहि, किंवा तकर किछु दिनक पश्चात लोक कंठ मे अंकुरित भेल हो। सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान सिजविकक अनुसार ''लोक साहित्यक सृष्टि साहित्यक सृष्टि सँ, एतेधरि कि वर्णमालाक सृष्टि सँ पहिलुक थिक, ई अनुश्रुतिक अंग थिक आ निरक्षर जनताक संपत्ति थिक।'' स्वभावत: जँ कही जे लिखित साहित्यक प्रेरणा-पृष्ठभूमि इएह लोक साहित्य रहल अछि त प्राय: अनर्गल-अत्युक्ति नहि होयत। महान रूसी साहित्यकार गोर्की कहै छथि—''शब्द कलाक आरंभ लोक साहित्य सँ होइछ। एहि सँ केबल इएह नहि बुझबाक थिक जे मौखिक साहित्य लिखित साहित्य सँ पूर्वक थिक आ लिखित साहित्यक भूमिका थिक, अपितु ई लिखित साहित्य के सदा-सर्वदा जीवन-रस दैत अछि। एकर भावक गंभीरता, कल्पनाक वैभव आ कलात्मक विशेषता बहुतो लेखकक ध्यान आकर्षित कएने अछि।'' ओना त एकर व्यवस्थित अनुसंधान, अध्ययन-अनुशीलन सेहो बड़ विलम्ब सँ प्रारम्भ भेल अछि। एकर वैज्ञानिक अध्ययन, ओकर परीक्षा-निरीक्षाक आरंभक श्रेय जेकबग्रीम (१७८५-१८६३) कैं देल जाइत छनि।

अपन माटि-पानिक गंध, हवा-बसातक गति आ गाम-घर तथा ओकर चतुर्दिक चतरल-पसरल परिवेशक रंगक संग युगान्तरक यात्रा करैत एहि लोकसाहित्यक महत्ता-गुणवत्ता आइ सर्वजन विदित अछि। एकह महत्व के प्रतिपादित करैत

पी०सी० राय चौधरी लिखैत छथि जे लोकसाहित्यक अध्ययन बिनु आदिम मानवक सामाजिक-धार्मिक आचार-आचरणक वैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन असंभव थिक। डॉ० रमा चौधरीक अनुसार कोनो देश के, ओकर सभ्यता-संस्कृति के नीक जकाँ जनबाक लेल ओकर लोकसाहित्य के नीक जकाँ जानब आवश्यके नहि अनिवार्य होइत अछि। वर्त्तमान मे लोकसाहित्यक महत्ता-गुणवत्ता, ओकर प्रयोजनीयता के ध्यान मे राखि विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रक साहित्य-संस्कृतानुरागी विद्वान अनुसंधानकर्त्ता लोकनि एकर अनुसंधान-अनुशीलन मे, संकलन-प्रकाशन मे प्रवृत भेल छथि जे निश्चिते शुभ-सुखद संकेत थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे तथाकथित आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसार एवं शहरी सभ्यता-संस्कृतिक विस्तारक संगहि दृश्य-श्रव्य माध्यमक मोहक-मारक अनुप्रवेश के देखैत, जाहि सँ लिखित साहित्य सेहो संकटक सम्मुखीन भेल अछि, एहि अनमोल धरोहरक संरक्षण, संकलन-प्रकाशन आवश्यके नहि अनिवार्य बुझना जाइछ।

लोकसाहित्यक ई विशेषता छैक जे लिखित रूप मे नहि पाओल जाइत अछि। इएह कारण थिक जे एकर रचनाकालहिं सन एकर रचनाकारो अज्ञाते छथि। एकर गहन अध्ययन-अनुशीलन सँ आभासित होइछ जे कोनो एके रचनाक एकाधिक रचनाकार सेहो भ सकैत छथि। लोकगाथाक सम्बन्ध मे ई बात विशेष परिलक्षित होइत अछि। विभिन्न क्षेत्र मे प्रचलित गाथा सभक जँ विमर्श कएल जाय त स्पष्ट होएत जे मूल कथा-भाव समान रहितहुँ ओकर प्रस्तुति-विस्तार मे पार्थक्य रहैत अछि। अलिखित होयबाक कारणे ओहि मे योग-वियोगक जहिना सुविधा रहैत छैक तहिना एहू बात कैँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ जे सुनबा-सिखबाक क्रम मे कोनो अंशक विस्मरण भ जाय। तँ आइ जखन एकर संरक्षणक प्रश्न अछि तखन एहि सम्बन्ध मे आर गहन विचार विवेचनक, सतर्कताक प्रयोजनीयता स्वाभाविके अनुभूत होइछ। स्मरण रखबाक थिक जे लोक साहित्य वाचिक परंपराधारित रहल अछि आ इएह ओकर आकर्षणक, नितनूतनताक केन्द्रो रहलैक अछि। तँ ओकरा लिखित रूप दैतकाल शब्दे नहि, ध्वनि एवं लयक सेहो विशेष ध्यान राखब आवश्यक। प्राय: देखल गेल अछि जे लिखित भेलाक पश्चात् ओकर आवेदन-आकर्षण झूस पड़ि जाइत छैक आ से भेनाइ एहि शाश्वत, चिर नूतन साहित्यक हेतु घातके प्रमाणित होएत।

लोकसाहित्यक जातीय चरित्रक सम्बन्ध विद्वान लोकनि मे मतपार्थक्य देखल जाइछ। डॉ० आशुतोष भट्टाचार्यक अनुसार एकर कोनो विशेष जातीय चरित्र नहि होइछ। लोकनायक भनहिं कोनो देश विशेषक किएक ने हो, ओकर गाथा बंड़

सहजताक संग ओहि देशक सीमाक अतिक्रमण कए आनो देश मे प्रतिष्ठा लाभ क लैछ। उदाहरणार्थ गोपीचन्दक गाथा वा गान के लेल जा सकैछ। एकर उत्पतिस्थल बंगाल होइतहुँ मिथिला मे ई आहिना लोकप्रिय भेल देखल जा सकैछ। एहने सन उदाहरण "लोरिकाइन" सेहो प्रस्तुत करैत अछि। अपन "लोरिक विजय"क भूमिका मे मणिपद्म लिखैत छथि—"ई ओ महान लोक महाकाव्य छैक जे बुन्देलखण्ड सँ लऽ कऽ बंगाल तक, एगारहटा भाषा मे, ओहिना सप्राण भेल चल अबैत छैक जेना रामायण ओ महाभारतक गाथा।" वस्तुत: लोकसाहित्यक प्राण होइछ ओकर मानवीय संवेदना जे ओकरा कालातीतेटा नहि विश्वजनीनो बना दैत अछि। ई बात कथा ओ गाथाक सम्बन्ध मे विशेष रूपेँ देखल-पाओल जाइछ। ई बात भिन्न थिक जे देशान्तरक संगहि ओकर रूपान्तरो भ जाइत छैक आ से ओकर अतिशय नमनीयताक कारणे सहजहिं भ जाइत छैक, जखन कि मूल कथा-भावना अविकल-अपरिवर्तित रहैत छैक। एहिठाम चर्च केनाइ प्राय: विषयान्तर नहि हैत जे हमरा एगो बंगला (!) लोकगीत सुनबाक सौभाग्य भेल अछि। ओहि गीतक पहिल पांती थिक—"छाताधर' हो देवरा, एरम सुन्नर खोपा हम्मर भीज गेलै ना।" हमरा लोकनि जनैत छी जे ई मैथिली लोकगीत थिक, परंच कतेक सहजभावेँ ई पुरुलिया अंचल मे प्रवेश कए ओकरा संग अपना कैँ जोड़ि लेलक।

लिखित साहित्ये जकाँ लोकसाहित्य सेहो विभिन्न विधा मे पाओल जाइछ। ओना एकर वर्गीकरण विभिन्न विद्वान विभिन्न तरहेँ कएने छथि। डॉ० अणिमा सिंह अपन निबन्ध "मैथिली लोकसहित्य" मे एकरा सात वर्ग मे रखने छथि—(१) लोकगीत, (२) लोकगाथा, (३) लोककथा, (४) लोकनाट्य, (५) बुझौअलि, (६) फकरा, (७) वचन। डॉ० रामदेव झा "लोकजीवन ओ लोकसाहित्य" पोथिक भूमिका मे लिखैत छथि—"लोकश्रुति, लोकमंत्र, लोकअनुष्ठान, लोकविश्वास, लोकोक्ति, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगीत, लोककथा आदिये जकाँ लोकगाथा सेहो लोकसाहित्यक महत्त्वपूर्ण विधा थिक।" तात्पर्य ई जे लोकश्रुति, लोकविश्वास किंवा लोकअनुष्ठानो के ओ लोकसाहित्यक विधा मानैत छथि। कर्णामृतक अंक ५७ मे अपन निबन्ध "लोकसाहित्य आओर मिथिला" मे घनचक्रएकरा (१) लोकगीत, (२) लोकगाथा (ई पद्यबद्ध तथा गेय होइछ), (३) लोककथा (एकर अन्तर्गत धर्मकथा, उद्बोधक कथा तथा अन्य अनेक प्रकारक कथा अबैछ), (४) लोकनाट्य (रामलीला, रास, भगत एवं नौटंकी आदि), (५) अन्य प्रकारक साहित्य मे विभाजित करैत छथि। उपरोक्त वर्गीकरणक संगहि मैथिली लोकसाहित्यक विशाल भंडार के ध्यान मे रखैत विषय बोध ओ विमर्शक सौबिध्यक दृष्टिऍ ओकरा एहि तरहें वर्गीकरण

कएल जा सकैत अछि—लोकगाथा, लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य एवं अन्य। कहिबी, फकरा आदि कैँ एहि अन्यक अन्तर्गत राखल जा सकैछ। जहाँधरि मंत्र आ भगतिक प्रश्न अछि से इहो पूर्ण लयबद्ध होइछ आ तैं एकरा गीतक अन्तर्गत रखबा मे कोनो असौकर्य नहि हेबाक चाही। डॉ० अणिमा सिंह उचिते एकरा अपन ''मैथिली लोकगीत'' मे सामिल कएने छथि।

पहिनहिं कहि आयल छी जे मैथिली लोकसाहित्यक भंडार विशाल अछि जकर थाह-पता पाबि जायब सहज-संभव नहि। तथापि जे थोड़-बहुत कार्य एहि क्षेत्र मे भेल अछि, जतबा जे मणि-मुक्ताक संधान-संग्रह हमरा लोकनि क पाओलए ताहि पर कने दृष्टिपात क लेब आवश्यक।

लोकगाथा : लिखित साहित्य मे जे स्थान महाकाव्यक छैक, लोक-साहित्य मे उएह स्थान गाथा किंवा महागाथाक छैक। एहि मे कथातत्व आ गेयधर्मिताक सुन्दर समिश्रण पाओल जाइछ। एकर नायक कोनो धीरोदात्त नायक नहि, लोकनायक होइत छथि जे इतिहास प्रसिद्ध भनहि नहि होथि, परंच हुनक ऐतिहासिक उपस्थिति-अवस्थान संदिग्ध नहि होइछ। कहबाक प्रयोजन नहि जे इएह लोकनायक कालान्तर मे लोकदेवताक रूप मे प्रतिष्ठित-पूजित होइत छथि।

लोकगाथाक चर्च करैत जे नाम सर्वप्रथम स्मरण होइछ ओ थिक चिरस्मरणीय डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा ''मणिपद्म''क। हिनक कृतित्वक अध्ययन-अवलोकनक आधार पर सहजहिं कहल जा सकैछ जे हिनक जीवन लोकगाथा उद्धारक हेतु समर्पित छल। गाम-गाम, गुफा-गह्वर घूमि ई एहि अनमोल रत्नक संधान कएलनि आ ओकरा पूर्ण सावधानी-कुशलताक संग तरासि लोकसाहित्यानुरागीग समक्ष प्रस्तुत कएलनि। अपन ''लोरिक विजय''क अगबारि मे ई लिखैत छथि—''मैथिली कंठसाहित्यक मंथन सँ हमरा सातटा अनमोल रतन भेटल। ओ भेल लोरिकानि, राजा सलहेस, अनंग कुसुमा, दुलरा दयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री आ राय रणपाल सनक गाथाकाव्य। एहि मे अनंग कुसुमा आ दीनाभद्री कैँ छोड़ि समस्त गाथा उपन्यासक रूप मे प्रकाशित अछि। महाकाव्यक रूप मे अनंग कुसुमा सेहो प्रकाशित भ चुकल अछि। एकर अतिरिक्त हिनक ''लवहरि-कुशहरि'' उपन्यास सेहो गाथाधारित अछि। वर्माजीक पश्चात अबैत छथि—राजेश्वर बाबू। हिनक ''लोकगाथा : विवेचन'' फराके महत्त्व रखैछ। एहि मे ''लोरिकाइन'', ''नैका बनिजारा'', ''राजा सलहेस'', ''दीना भदरी'' एवं ''राजा गोपीचन्द''क गाथा नमूनाक क्रम मे प्रस्तुत कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त ''श्यामा-चकेवा'' ओ ''जट-जटिन'' जें लोकनाट्यक श्रेणी मे अबैछ, हिनक कृतित्वक परिचायक थिक। मिथिला दर्शन मे

प्रो० प्रबोध नारायण सिंह द्वारा संकलित ''दीना-भद्री'' सेहो प्रकाशित भेल अछि। डॉ० योगानन्द झा अपन पोथी ''लोक जीवन ओ लोक साहित्य'' द्वारा मिथिलाक विभिन्न जनजातीय जीवनक झांकीक संगहि बारह गोट लोकगाथा सँ परिचय करओलनि अछि, यथा—श्याम सिंह, लालबन बाबा, गरीबन भूइञा, मोतीदाइ, गणिनाथ-गोविन्द, फेकू राम, कारिख, दुलरा दयाल, गाडो देवी, जय सिंह, अमर सिंह एवं केवल महाराज। डॉ० महेन्द्र नारायण रामक ''मैथिली लोक महाकाव्य—कारिख पजियार'' आ ''कारिख लोकगाथा'' मूल पाठ विशेष उल्लेखनीय अछि। अपन दृष्टि आ सृष्टिक कारणेँ डॉ० रामक नाम मैथिली लोकसाहित्य साधकक श्रेणी मे सम्मानक संग स्मरण कएल जायत आ हिनक ई श्रम-साधना आगामी पीढ़ी के एहि क्षेत्रक कार्य लेल प्रेरित-प्रोत्साहित करत से आशा कएल जा सकैछ।

एहि सभक अतिरिक्तो लोकगाथाक क्षेत्र मे बहुत रास छीट-फुट कार्य भेल अछि, विभिन्न पत्र-पत्रिका मे समय-समय पर निबंधादि प्रकाशित भेल अछि, परंच तकरा पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ। वस्तुतः एहि महागाथाक जे विशाल भंडार अछि तकरा समग्रता मे आ अपन मूल रूप मे आंचलिक विशेषताक संग संकलन-प्रकाशनक प्रयास जँ अनति विलम्ब नहि कएल गेल त ओ दिन दूर नहि जे दीप ल तकनहुँ एकर दर्शन दुर्लभ भ जाय।

लोकगीत : लोकसाहित्य के परिभाषित करैत हम कहि आयल छी जे ई लोकक द्वारा, लोकक लेल रचित भेल अछि। एहिठाम साहित्यक स्थान पर लोकगीत के राखि देने ई स्वतः परिभाषित भ जाइछ। मैथिली लोकसाहित्य मे गीतक स्थान हमरा जनैत सर्वोपरि छैक। एकर विशालताक चर्च करैत डॉ० सुकुमार सेन कहैत छथि—पूर्व भारतीय भाषा सभ लोकगीत मे बड़ समृद्ध अछि आ मैथिली ताहि मे प्रायः सर्वोपरि थिक। वस्तुतः मिथिलाक माटि-पानि, गाछ-वृक्ष, माल-जाल, चिड़ै-चुनमुनीक संगहि समस्त जन-जीवन, ओकर आचार-विचार, खान-पान-परिधान, पावनि-तिहार, उत्सव-पूजा-पार्वण-यज्ञादि, सुख-दुख, आशा-आकांक्षा समस्त एहि गीत मे समाहित अछि जकर मानवीय संवेदना ओ आवेदन अप्रतीम अछि।

मैथिली लोकगीतक क्षेत्र मे अपेक्षाकृत अधिक कार्य भेल अछि। सर्वप्रथम आ सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य थिक डॉ० अणिमा सिंहक। ई मिथिलाक गाम-गाम घूमि टेपक माध्यमे ११३७ गीतक संग्रह कय ''मैथिली लोकगीत'' नामे तकर प्रकाशन कएने छथि जे एहि विधाक आधार ग्रंथक रूप मे परिचित-प्रतिष्ठत अछि। पोथी मे ओहि समस्त व्यक्तिक परिचयपात देल गेल अछि जिनका लोकनि सँ गीत सुनल गेल अछि। जेना कि हम पहिनहि कहि आयल छी जे एहि क्षेत्र मे पर्याप्त कार्य

भेल अछि। वस्तुतः लोकसाहित्यक महत्ता-गुणवत्ता-प्रयोजनीयताक उपलब्धि कए एकर अनुसंधान-अन्वेषणक क्षेत्र मे सर्वप्रथम पदार्पन कएने छलाह जार्ज ग्रियर्सन। जँ कही जे हुनकहि पदचिन्ह पर चलि कैं परवर्ती गवेषक लोकनि उल्लेखनीय कार्य कएलनि त प्रायः अतिशयोक्ति नहि होयत। हिनक ''बिहारी फोक सांग्स'', ''मैथिली क्रेस्टोमैथी'', ''नयका बनजारा'', ''टू वर्शन्स ऑफ गोपीचन्द'' आदि अपरिमित महत्त्वक प्रमाणित भेल अछि। तत्पश्चात् रामइकबाल सिंह ''राकेश'' द्वारा ३१३ गीतक संकलन ''मैथिली लोकगीत'' नामे सम्बत् १९९९ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित भेल अछि। अणिमा जीक अनुसार सर्वप्रथम तेजनारायण लाल मैथिली लोकगीतक वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कएने छथि। एकर अतिरिक्त कालि कुमार दास, जीवानन्द ठाकुर, डॉ० जयकान्त मिश्र, बदरी नाथ झा, जगदम्बा देवी, श्रीमती कामेश्वरी देवी, ऋद्धिनाथ झा, भैरवनाथ झा, स्नेहलता, भोला झा, बाबू रघुवर सिंह आदिक अवदान चिरस्मरणीय रहत।

लोककथा : व्युत्पत्ति, विस्तार ओ प्रचार-प्रसारक दृष्टिऍ गीतक पश्चाते कथाक स्थान अछि जे खिस्सा, पिहानी, कथा, कहिनि आदि विभिन्न नामे विभिन्न अंचल मे प्रचलित अछि। परंच खेदक विषय जे एहि क्षेत्र मे अपेक्षित अध्ययन-अनुशीलन-अन्वेषण-अनुसंधान संकलन-प्रकाशनक कार्य नहि भेल अछि। गीतहि सन मैथिली लोककथाक आयामे नहि आकारो विस्तृत आ बहुरंगी अछि। कोनो कथा छोट अछि त कोनो पहरभरि समयो मे प्रायः शेष नहि होमयवला। कथा सँ कथा ताहि सँ कथा एवम प्रकारे एकर विस्तार-विलक्षणता कथासरित सागरक स्मरण करबैत अछि। एकदिस एकर व्यावहारिक पक्ष त दोसर दिस कल्पनाक अद्‌भुत उड़ान श्रोता के मंत्रमुग्ध करबा मे अप्रतीम उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

लोककथा विभिन्न पत्र-पत्रिका मे यदा-कदा प्रकाशित होइत रहैत अछि। १९७६ मे कलकत्ताक ''शिखा'' पत्रिका लोककथा विशेषांक बहार केने छल जाइ मे कुल बारह गोट कथा अछि। १९७९ मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता द्वारा ''अष्टदल'' नामे आठ गोट कथाक संग्रह प्रकाशित भेल अछि जकर संकलनर्त्ता छथि डॉ० अमरनाथ झा। १९८२ मे पी०सी० राय चौधरी द्वारा संकलित ७८ गोट लोककथा ''फोक टेल्स ऑफ बिहार'' नामे अंग्रेजी मे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित अछि। एहि पोथी मे किछु मैथिलीक कथा अबस्से अछि परंच से अनभोआर-अनचिन्हार सन लगैत अछि। ओना संकलनकर्त्ताक भावना, प्रयास निश्चिते प्रशंसनीय। १९८३ (१३९०) मे ''मैथिली लोककथा'' नामे अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता द्वारा १८ गोट लोककथाक संग्रह प्रकाशित भेल अछि जकर लेखन-संकलन-सम्पादनकर्त्ता

छथि रामलोचन ठाकुर। भ सकैछ एकर अतिरिक्तो थोड़-बहुत कार्य भेल हो जकर सूचना-संवाद हमरा लग उपलब्ध नहि अछि। परंच से भेनहुँ कि एकरा पर्याप्त कहल जा सकैछ! पहिनहि कहि आयल छी जे लोकसाहित्यक विशाल भंडार मे गीतक पश्चाते कथाक स्थान थिक, परंच गीतक तुलना मे कथाक क्षेत्र मे कृतकार्य कतेक झुझुआन लगैछ से विचारणीय। स्मरण रखबाक थिक जे कथा मुख्यतः महिला कंठाश्रित विधा थिक आ एकर श्रोतावर्ग मे नेना-भुटकाक बाहुल्य रहैत आयल अछि। परंच आइ ने त मैञा-बाबी के कथा कहबाक पलखति छनि आ ने नेना-भुटका के सुनबाक इच्छा किंवा अवकाश। महिला शिक्षाक प्रचार-प्रसारक संगहि शहरोन्मुखता एकर विलुप्तिक बिगुल बजा चुकल अछि।

लोकनाट्य : मैथिली लोकनाट्य जेहने व्यापक तेहने बहुरंगी आ दीर्घ परंपरा पोषित। लोकनाट्य पर लिखैत डॉ० अणिमा सिंह कहैत छथि—''मनुष्य स्वभावतः अनुकरणशील होइत अछि। तैँ आदिम युगहि सँ कोनो ने कोनो रूप मे समाज मे नाट्यक प्रचलन रहल हेतैक। वाणीक सौन्दर्य गीत द्वारा, अंग-भंगिमाक सौन्दर्य नृत्य द्वारा तथा क्रिया-कलाप वा अवस्था विशेषक सौन्दर्य नाट्य वा अभिनय द्वारा प्रकट कैल जाइत हेतैक।'' डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह ''मौन''क अनुसार ''वैदिक काल मे धार्मिक अनुष्ठानक संग किछु लोकरंजनक राग-रंग, खेल-कूद, नाच-गान आदिक आयोजन सेहो होइत छलैक, जे कालांतर मे लोकनाट्यक रूप मे व्यवस्थित भेल।'' एकर विशेषता के रेखांकित करैत ओ आगाँ कहैत छथि—भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि सँ जँ समस्त लोकनाट्य सभक अध्ययन कयल जाय तँ ओहि मे कतहु समानता वा एकरूपता नहि देखना जाइछ, किएक तँ प्रत्येक अंचल वा जनपद विशेषक लोकनाट्यक अपन निजत्त्व होइछ। मैथिली लोकनाट्यक क्षेत्र मे मौनजी, महेन्द्र मलंगिया एवं कुणाल कार्यरत छथि। ओना मौनजीक अवदान निश्चिते सर्वाधिक अछि आ ई ने मात्र लोकनाट्यक क्षेत्र मे अपितु समस्त लोकसाहित्येक क्षेत्र मे अपन कृतकार्य के प्रतिष्ठित-प्रतिष्ठापित क चुकल छथि। ''भाखा'' नवम्बर ८८क अंक मे प्रकाशित अपन ''विदापत'' निबन्ध मे ओ किछु लोकनाट्यक विशेषता एना वर्णित करैत छथि—''सती बिहुलाक पतिभक्ति, साहसिकता एवं राष्ट्रप्रेम, गोपीचन्दक वीरता ओ वैराग्य, ढोला कुँवरक शौर्य ओ श्रृंगार, रमखेलियाक रामकथा, विदापतक श्रृंगारिकता एवं भक्तिभावना आदिक महत्त्व शाश्वत अछि जकरा कनेक चटख रंग मे प्रस्तुत क ओहि सँ लोकानुरंजनक संगेसंग मानव मूल्य कैं प्रतिष्ठापित कएल जा सकैछ।'' वस्तुतः इएह थिक मैथिली लोक नाट्यक विशेषता जे एकर जीवन रस थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे नाटक मात्र मनोरंजन लेल नहि ओकर

उद्देश्य लोकशिक्षा सेहो होइत अछि। मौनजीक उपरोक्त कथनक आधार पर लोकनाट्यक तत्व विशेषक विवेचन-विश्लेषण सहजहिं कएल जा सकैछ।

नाटक एक समन्वित कला होयबाक संगहि प्रदर्शनकारी कला सेहो थिक जाहि मे कथा सुनबाक संग-संग दृश्यावलोकनक सुविधा सेहो रहैत छैक। मैथिली लोकनाट्य मे गीतक बाहुल्य सेहो देखल जा सकैत अछि। अभिनय द्वारा कथा वस्तु आ नृत्य द्वारा गीतक भाव विस्तार कएल जाइछ तथा बोधगम्य बनाओल जाइछ। स्वभावत: मोहक, मनोरंजक आ सहज बोधगम्य होयबाक कारणे ई विधा अपेक्षाकृत बेसी लोकप्रिय होइत अछि। एहिठाम उल्लेखनीय जे मैथिली लोकसाहित्यक अधिकांश महागाथा नाटकक रूप मे सेहो प्रस्तुत कएल जाइत अछि। जे से हो, मैथिली मे लोकनाट्यक सेहो प्राचुर्य अछि। अद्यावधि उपलब्ध लोकनाट्य मे लीलाक अतिरिक्त रमखेलिया, हरिलता, सुरमा सलहेस, लोरिक, जट-जटिन, सामा-चकेबा, विदापत, डोमकछ, नारदीनाच, झिझिया, रेसमा-चूहर, ढोला कुँवर, कतिका कुँवर, आल्हा-उदल आदि विशेष चर्चित-परिचित अछि। एमहर कुणाल द्वारा विदापत आ कुसुमा सलहेस, सोमदेव द्वारा सीतायन आ कुमार शैलेन्द्र द्वारा लोरिकायनक रचना एहि लोकनाट्य के नव धरातल पर उपस्थित-उपस्थापित करबाक अभिनव प्रयास भेल अछि।

मैथिली लोकनाट्यक एक आर विशेषता अछि जे ई कोनो विशेष वर्गक कलाकारे लोकनि द्वारा प्रस्तुत कएल जाइत अछि। उदाहरण लेल सामा-चकेबा वा जट-जटिन के लेल जा सकैछ जे केवल महिला लोकनि द्वारा प्रस्तुत कएल जाइछ। विशेष कैं जट-जटिन त पुरुष वर्ग के देखबो मना अछि। तहिना अन्यान्य नाटक केवल पुरुष वर्ग प्रस्तुत करैत छथि। एहि सभ सँ पृथक मैथिली मे किछु आर प्रदर्शनारी कला अछि जकरा लोकनाट्य त नहि परंच गीति-नाचक श्रेणी मे राखल जा सकैछ। जे हेतु एकर संख्या, हमर जानकारीक अनुसार, बड़ बेसी नहि तैं एकरा पृथक विवेचित नहि कएल गेल, किन्तु उल्लेख त आवश्यके। उदाहरणार्थ मुहर्रमक अवसर पर प्रस्तुत ''झड़नी गीत'' के देखल जा सकैछ। ओना त मुहर्रम मुसलमान लोकनिक धार्मिक अनुष्ठान थिक परंच एहि झड़नी नृत्यगीत मे बहुतो हिन्दू धर्मावलम्बी के भाग लैत हम देखल अछि जे मिथिलाक पारंपरिक धार्मिक सहिष्णुताक परिचायक थिक। संगहि रुझान भनहि जे हो, ओहि मे साम्प्रदायिकताक गंध नहि रहैत अछि।

अन्य : कहबी, फकरा आदि के एहि अन्यक अन्तर्गत विवेचित-विश्लेषित कएल जा सकैत अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली मे एकरो भंडार छोट नहि। औखन गाम-घर मे, घूरतर, गप-शपक क्रम मे लोक बात-बात पर कोनो कहबी वा

फकराक प्रयोग करैत देखल जाइत छथि। वस्तुत: ई फकरा सभ ततेक मनोहारी-मनोरंजक होइत अछि, सतसैया के दोहरे सन सठीक आ प्रभावोत्पादक होइत अछि जकर वर्णन सहजे नहि कएल जा सकैछ। ई मिथिलाक माटि-पानिक विशेषते कहल जा सकैछ जे एहि कहबी-फकरा सभ मे सेहो एक अद्भुत आन्तरिक लय होइत छैक, गंभीर अर्थ होइत छैक। उदाहरण लेल कनही गाइक भिन्न बथान, कनहा कुकूर मारे तिरपित, सभ सखी झुम्मरि खेलाय, कनही कहय हमहूँ, सबधन बाइस पसेरी आदि। दुखक विषय जे ई विधा सर्वाधिक उपेक्षित अछि आ हमर जानकारीक अनुसार कोनो तेहन उल्लेखनीय कार्य एहि क्षेत्र मे नहि भेल अछि।

निष्कर्षत: व्युत्पत्ति, व्यापकता, विलक्षणता ओ प्रभावोत्पादकताक दृष्टिऐं मैथिलीक लोकसाहित्य भारते किएक विश्वक कोनो अंचल/भाषाक लोकसाहित्य सँ श्रेष्ठ नहि त समान आसनक अधिकारी अबस्से अछि। खेदक विषय जे एहि क्षेत्र मे अपेक्षित अनुसंधान-अन्वेषण नहि भ सकल अछि। तथापि राजकीय उपेक्षादि प्रतिकूल परिस्थितियहुँ मे जतबा भेल अछि आ भ रहल अछि से भविष्यक प्रति आशान्वित त करिते अछि। (२००५)

सूचना-संदर्भ :

१) लोक-साहित्य विज्ञान / डॉ० सत्येन्द्र
२) रूशी साहित्य (बनारस, १९५१)
३) फोक टेल्स ऑफ बिहार / पी०सी० रायचौधरी
४) गोपी चन्देर गान / डॉ० आशुतोष भट्टाचार्य
५) लोरिक विजय / डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा ''मणिपद्म''
६) मैथिली लोकगीत / डॉ० अणिमा सिंह
७) लोकजीवन ओ लोकसाहित्य / डॉ० योगानन्द झा
८) कर्णामृत, अंक-५७ / सं० राजनन्दन लाल दास
९) लोकगाथा : विवेचन / राजेश्वर झा
१०) कारिख पजियार / डॉ० महेन्द्र नारायण राम
११) शिखा, नवम्बर, ७६ / सं० कुणाल-अग्निपुष्प
१२) अष्टदल / डॉ० अमरनाथ झा
१३) मैथिली लोककथा / रामलोचन ठाकुर
१४) मैथिली साहित्यक रूप-रेखा / सं० डॉ० बासुकीनाथ झा
१५) भाखा, नवम्बर, ८८ / सं० डॉ० श्री जयकान्त मिश्र



नाट्य-मंचक विकास मे पत्रिकाक योगदान

नाटक शब्दक कोशगत अर्थ होइत अछि स्वांग, रूपक, नटकर्म, दृश्यकाव्य, अभिनय, अभिनयोपयोगी ग्रंथ आदि। बोलचालक भाषा मे नाटक कहने जे भाव सर्वप्रथम मोन मे जगैत अछि से भेल नाट्याभिनय वा नाट्यमंचनक। कतौ नाटक होइत छैक—अर्थात नाट्यमंचन होइत छैक। हम नाटक देखय जाइत छी—अर्थात् नाट्यमंचन देखय जाइत छी। ओ नाटक खेलाइ छथि—अर्थात् नाटक मे अभिनय करैत छथि। कखनोकाल एहनो बात सुनल जाइत अछि जे फलाँ नाटक करैत अछि। एकर दोहरा अर्थ होइत अछि। पहिल त ई जे ओ नाटक मे अभिनय करैत छथि आ दोसर ई जे ओ जे करैत छथि से सत्य वा वास्तव नहि, स्वांग किंवा नकल मात्र थिक। नाट्यशास्त्रक प्रणेता भरत मुनि सेहो नाटक वा अभिनय के क्रीड़ाक संज्ञा दैत एकरा लोक स्वभाव आ लोकक क्रिया कलापक अनुकरण कहने छथि, जाहि सँ एकर उद्देश्य स्वत उद्भासित होइत अछि। क्रीड़ा वा खेल आनंदक लेल होइत अछि ओ कमोवेश आइयो ई बात नाट्याभिनयक मादे कहल जा सकैत अछि। जहाँधरि अनुकरणक प्रश्न अछि से नाटकक उद्देश्य भेल लोकशिक्षा आ तँ देवी-देवता वा आदर्श पुरुषक चरिताभिनय द्वारा लोक कैं आदर्श पथानुगमनक हेतु प्रेरित प्रोत्साहित करबे एकर कारण छल। स्वयं रामकृष्ण परमहंस अपन प्रिय शिष्य गिरीश घोषकैं प्रोत्साहित करैत कहने छथिन जे नाटक करब नीक बात थिक। एहि सँ लोक शिक्षा होइत छैक। स्पष्ट अछि जे नाटकक उद्देश्य एक दिस जँ मनोरंजन थिक त दोसर दिस लोकशिक्षा सेहो। ओना आदर्श आ शिक्षाक रूप विधान पर मतपार्थक्य भइए सकैत अछि, परंच ताहि सँ नाटकक उपयोगिता-उपादेयता पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैत अछि।

कहल जाइछ जे देवगणक अनुरोध पर ब्रह्मा ऋगवेद सँ 'पाठ्य' सामवेद सँ 'गीत' यजुर्वेद सँ 'अभिनय' आ अथर्ववेद सँ 'रस' ल कैं नाटकक रचना कएलनि। उपरोक्त कथनक आधारपर जँ नाटक कैं परिभाषित करी त पाठ्य, गीत, अभिनय आ रसक समाहार भेल नाटक। एहि सँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे नाटक अपन बीजरूप मे एहि वेद सभमे अवस्थित छल आ एकर प्रथम रचनाकार स्वयं ब्रह्मा छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे नाटक कैं पंचम वेद कहल गेल अछि। स्वभावतः प्रश्न उठैत अछि जे चारि गोट वेदक रहितहुँ पाँचम वेदक की प्रयोजन छल ? अपन आलेख ''नाटके कियैक'' मे डॉ० अणिमा सिंह लिखैत छथि—''चारि-चारिटा

वेदक वर्तमान रहितहुँ एहि पंचम वेदक प्रयोजन की छल ? एहि प्रश्नक उत्तर खोजैत हम सब बूझि जाइ छी कि हमरा सभक मनीषी पूर्वज लोकनिक तीक्ष्ण दृष्टि कतबादूर धरि गेल छल। विद्वान, बुद्धिमान तथा गुणी ज्ञानी सभक पठन-पाठनक लेल, विचार-विमर्शक लेल चारिटा वेदक अस्तित्व तऽ छलहे, किन्तु जे अर्द्धशिक्षित छथि, अशिक्षित छथि, अक्षरज्ञान विहीन छथि, से सभ व्यक्ति की सभ प्रकारक ज्ञान सँ सभ रस सँ पूर्ण वंचित रहि जैथिन ? ओहि ज्ञान-बृद्ध व्यक्ति सभक रहैत ई कोना भऽ सकैत छल ? तँ सृष्टि भेल पंचम वेदक जे चक्षु कैं आनन्द प्रदान करबाक संगे ह्रदयो कैं आनन्द-विह्वल कऽ दैत छैक और मस्तिष्क कैं किछु सोचबाक लेल, विचारबाक लेल विवश क' दैत छैक।''

वेद कैं श्रुति सेहो कहल जाइछ। अर्थात् पूर्व मे वेद लिखित रूप मे नहि छल। शिष्य अपन गुरू सँ सूनि कंठस्थ क लैत छलाह आ फेर कालान्तर मे ओ अपन शिष्य कैं कंठस्थ करा दैत छलथिन। एवम् प्रकारैं एक कंठ सँ दोसर कंठ होइत ओ एक युग सँ दोसर युगक यात्रा करैत रहल। हमरा जनैत नाटक, जकरा पंचम वेद कहल गेलैए तकरो जय यात्राक कथा-गाथा प्रायः तद्रूपे। आइयो बहुत रास लोक-नाटक लिखित रूप मे उपलब्ध नहि, परंच ओकर मंचन क्षेत्र विशेष मे यदा-कदा देखल-पाओल जाइत अछि।

साहित्यक अन्यान्ये विधा जकाँ नाटकोक लिखित रूप सर्वप्रथम संस्कृत भाषा मे उपलब्ध होइत अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे समस्त आर्यावर्तक साहित्यिक भाषाक सम्माननीय सिंहासन पर एक समय एही भाषाक एकाधिकार छलैक। परंच तेरहम-चौदहम शताब्दी मे एक वैप्लविक परिवर्त्तन भेल। देवभाषा संस्कृतक वर्चस्व कैं लोकभाषा मैथिली द्वारा सफल आ सार्थक चुनौती देल गेलैक आ जेना कि बंगलाक इतिहासकार दीनेश चन्द्र सेन महाशय लिखैत छथि—साहित्यिक भाषाक सम्माननीय पद पर संस्कृतक स्थान पर मैथिली प्रतिष्ठित भेल। समग्र आर्यावर्त मे नहिञो त उत्तर-पूर्वांचल मे। आ एकर श्रेय कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ कविपति विद्यापति कैं जाइत छनि। ''मैथिली नाटक ओ मंच'' पर लिखैत आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि—''ई कथा आब निर्बिवाद अछि जे समस्त उत्तर भारत मे आधुनिक भाषा मे नाटक सबसँ पहिने मैथिली मे लिखल गेल ओ तकरा विद्यापति प्रतिष्ठित कएल।'' एहिठाम उल्लेखनीय जे रमानाथ बाबू कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वरक ''धूर्त्त समागम'' कैं अश्लील आख्या दैत ओकरा पढ़बाक लेल नहि, अभिनयक लेल रचित मानैत छथि। एहिठाम स्मरणीय थिक जे नाटकक सृष्टिये

अभिनयक लेल भेल अछि ने कि पढ़बाक लेल। पढ़बाक लेल आ मात्र पढ़बाक लेल साहित्यक अन्य विधा अछि, नाटक नहि।

आब ई विषय प्रायः निर्णीत अछि जे मैथिली नाटकक आरंभ 'कीर्तनियाँ' नाटक सँ होइत अछि। अभाव-अभियोगक बात स्वाभाविक छैक। नाटके किएक साहित्यक जे कोनो विधा हो, ओकर विकसित अवस्था सँ प्रारंभिक अवस्थाक तुलना कथमपि समीचीन नहि। आ जे हेतु नाटक मंचक वस्तु थिक, मंच सँ पृथक क कैं ओहिपर विचारक बात त फराक रहओ ओकर अस्तित्वोक कल्पना असंभव। तैं मैथिली रंगमंचक इतिहासो प्रायः ततबे प्राचीन।

मैथिली नाटक ओ रंगमंचक यात्रा अपन उद्भव काल सँ अद्यपर्यन्त अव्याहत अछि आ जेना कि बंगला नाट्य-मंचक प्रवाद पुरुष शंभु मित्र लिखै छथि—जतय सन्यासी जकाँ संसारी ओ सीताक समान नारी भेल छथि, जाहिठामक नाट्य परम्परा कोनो समय उत्तर भारतीय भाषा सभहिक नाटक के आलोकित केने छल से देश अपन ओहि नाट्य परम्परा कैं बिसरि चुकल अछि, ई कोना विश्वास कैल जा सकैछ ? भ' सकैछ जे ओतय लाख-लाख टाका खर्च कए आधुनिक मंचक निर्माण नहि भेल हो, आ ईहो भ' सकैछ जे यूरोपक चमक-दमक वाला नाट्य पद्धतिक नकल नहि कैल गेल हो, परञ्च कोनो देश, कोनो समाज अपन लोकनाट्य कैं हेराय देत से कल्पना कैल जा सकैछ ?'' शम्भु मित्र मिथिलाक जाहि नाट्यपरम्पराक बात करैत छथि से निर्विबाद कीर्त्तनियाँ नाटक सँ आरम्भ भय नेपालक यात्रा नाटक, असमयक अंकिया नाटक होइत आधुनिक ''ओकरा आंगनक बारहमासा'' सँ आगू एकैसम शती मे प्रवेश क चुकल अछि। मैथिली रंगमंच कते विकसित छल तकर प्रमाणस्वरूप नेपालक उपत्यका मे ओकर भग्नावशेष आइयो विद्यमान अछि आ जकर विस्तृत जानकारी डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क शोधपूर्ण विभिन्न ग्रंथ, लेखादि सँ प्राप्त कएल जा कैछ।

आधुनिक नाटकक आरंभ पं० जीवन झाक 'सुन्दर संयोग' सँ मानल जाइत अछि। हिनक रचित आर दू गोट नाटक 'नर्मदा सागर सट्टक' (१९०६) आ 'सामवती पुनर्जन्म (१९०८)' उपलब्ध अछि, परंच एहि नाटक सबहिक अभिनयक कोनो सूचना नहि। सर्वप्रथम साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास रचित ''मिथिला नाटक' (१९२०) प्रसिद्ध उमाकान्त नाटक कंपनी द्वारा मंचित होएबाक सूचना अछि। एहिठाम उल्लेखनीय जे उमाकान्तक नाटक कंपनी एहि सँ पूर्व पारसी थियेटर

परम्पराक हिन्दी नाटक मात्र करैत छल। एहि तरहँ आधुनिक नाट्यमंचक शुभारंभ जँ 'मिथिला नाटक' सँ कहल जाय त अनर्गल नहि होएत।

विषय वस्तु कैं ध्यान मे रखैत आब कने पत्र-पत्रिका पर दृष्टिपात कएल जाय। मैथिलीक पहिल पत्रिका ''मैथिल हित साजन'' १९०५ मे बहार भेल। एकरा विडम्बना नहि त आर की कहल जाय जे मैथिलीक प्रथम पत्रिका मुख्य भूमि सँ नहि बहार भ सुदूर जयपुर सँ बहार भेल, विधावाचस्पति मधुसूदनझा ओ पं० रामभद्र झाक प्रयासैं। कनेकालक लेल कविशेषराचार्यक 'धूर्त समागम' विद्यापतिक 'गरक्ष विजय' किंवा उमापतिक 'पारिजात हरण', जाहि मे मैथिली गीतेटक प्रयोग भेल अछि, निर्देशन वा कथोपकथनक नहि, तकरा जँ मैथिली नाटकक सूची सँ कात क देल जाय, जेना कि कतिपय विद्वानक मत छनि, त मैथिलीक प्रथम नाटक होएबाक प्रतिष्ठा त्रिभुवन मल्लक ''काशी विजय' कैं प्राप्त होएतैक जकर रचना आ मंचन सेहो मिथिला सँ बाहर नेपालक उपत्यका मे भेल। एहि दृष्टिऐ विचार कएने नाट्यमंच आ पत्रिकाक शुभारंभ मे एक अद्भुत आ अभूतपूर्व साम्य देखल पाओल जा सकैत अछि। तहिना एकरो एकटा सुखद संयोगे कहल जा सकैत अछि जे १९०४ मे 'सुन्दर संयोग'क रचना भेल आ १९०५ मे 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशन।

नाटक आ मंचक विकास मे पत्रिकाक योगदान-अबदान पर विचार करबा सँ पूर्व संक्षेप मे पत्र-पत्रिकाक स्थिति पर विचार क लेब भरिसक अनर्गल नहि होएत। ओना त मैथिली पत्र-पत्रिका अपन यात्रारंभक शतवर्ष पूरा कय चुकल अछि आ संख्याक आधार पर सेहो बड़ थोड़ नहि कहल जा सकैत अछि, परंच एकर इतिहास सुखद के कहय संतोषप्रदो नहि अछि। तथापि जे अछि, विचार त ताही पर होएत। सुविधाक हेतु एहिठाम हम पत्रिका कैं दू श्रेणी मे राखय चाहैत छी। पहिल श्रेणी मे ओहन पत्रिका अबैत अछि जे पूर्णतः नाट्य-मंच कैं समर्पित अछि आ दोसर श्रेणी मे अन्य सकल पत्रिका। जेना पहिनहि कहि आयल छी जे पत्र-पत्रिकाक इतिहास संतोषप्रद नहि रहल अछि आ प्रायः पत्रिका अपेक्षित ग्राहक-पाठकक अभाव मे अल्पजीवी होइत आयल अछि, तेहना स्थिति मे कोनो विशेष विधाकैं समर्पित पत्रिकाक स्थिति-अवस्थाक अनुमान सहजहि कएल जा सकैत अछि, तथापि मैथिलीयो मे एहि तरहक प्रयास भेल अछि आ सेहो प्रवासे सँ भेल अछि। कलकत्ता सँ प्रकाशित मैथिलीक नाट्य ओ मंच विषयक पत्रिका ''लोकमंच'' गुणनाथ झाक संपादन मे एक अभिनव प्रयास कहल जा सकैत अछि। एकर प्रथम अंक सितम्बर-अक्टूबर, १९६९ मे आ दोसर अंक फरबरी, १९७४ मे प्रकाशित भेल छल जे शेष

अंक प्रमाणित भेल। दोसर प्रयास कलकत्ताक नाट्य-संस्था 'मैथिली रंगमंच'क छल। रामलोचन ठाकुरक संपादन मे ''रंगमंच'' नामे अप्रैल १९७४ मे ई पत्रिका प्रकाशित भेल छल, जे प्रथम आ शेष अंक भ क रहि गेल। स्वभावत: विचार-विमर्शक आधार त दोसरे श्रेणीक पत्रिका भ सकैत अछि।

नाटक आ रंगमंचक विकास मे पत्रिकाक भूमिका दू तरहक देखल पाओल जा सकैत अछि। प्रथम मूल नाटक—मौलिक किंवा-अनूदित, प्रकाशनक माध्यमे आ दोसर विविध लेखादि, मंच-समीक्षा आदिक माध्यमे। मैथिलीक प्रथम पत्रिका ''मैथिल हित साधन''क प्रकाशन १९०५ सँ आरंभ होइत अछि, जेना कि डॉ० दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' अपन इतिहास मे लिखैत छथि—''पं० जीवन झा 'मैथिली सट्टक' नामक नाटक सेहो लिखब आरंभ कएने छलाह जकर किछु अंश 'मैथिल हित साधन' नामक मैथिलीक प्रथम पत्रक किछु अंक मे प्रकाशित भेल छल'' एहि बातक प्रमाण अछि जे मैथिली पत्रिकाँ अपन आरंभ कालहि सँ नाट्यमंचक विकास मे सहयोगी रहल अछि। स्पष्ट छैक जे हमर आधुनिक युगक साहित्यकार लोकनि अपन नाटक आ रंगमंचक दीर्घ आ समृद्ध परंपरा सँ मात्र परिचिते नहि, प्रेरित-प्रोत्साहितो छलाह ओ ओकर उपयोगिता-उपादेयताक प्रति पूर्ण आस्थाशील छलाह। एहि आस्था-विश्वासक प्रमाण पश्चात् प्रकाशित होइवला पत्रिका सभ मे सहजहिं देखल-पाओल जा सकैत अछि।

मैथिली मे प्रकाशनक जे समस्या छैक से ककरो सँ नुकाएल नहि अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे एही समस्याक कारणे ने मात्र मैथिली पोथीक संख्या सीमित अछि, साहित्यकारोक संख्या सीमित अछि आ जेहो छथि हुनक प्रतिभा-क्षमताक समुचित उपयोग संभव पर नहि भ सकल अछि। ललित, धूमकेतु सन कालजयी कथाकारक मात्र एक-एक कथा-संग्रह प्रकाशित भ सकल अछि। ई बात मात्र कथे विधाक संग नहि, अन्यान्यो विधाक संग देखल जा सकैछ, जे मैथिली साहित्यक समुचित विकास मे बाधक रहल अछि। स्वभावत: साहित्यक अन्ये विधा जकाँ नाट्यो विधा बहुलांशत: पत्र-पत्रिका पर निर्भर रहल अछि।

आब पहिने नाट्य विधाक पत्रिका पर आलोकपात कएल जाय। ''लोकमंच''क पहिल अंक मे आचार्य रमानाथ झा, मन्मथ राय, डॉ० लेखनाथ मिश्र, शम्भु मित्र, बीरू मुखोपाध्याय, प्रवीर मुखोपाध्याय आ विश्वम्भर ठाकुरक आलेखक संग गुणनाथ झाक ''मधुयामिनी'' प्रकाशित भेल अछि। दोसर अंक मे डॉ० परमेश्वर मिश्र डॉ० अशर्फी झा, विश्वम्भर ठाकुरक आलेखक संग गुणनाथ झा रचित नाटक ''सातम

चरित्र'' एवं किछु नाट्यकर्मी लोकनिक साक्षातकार प्रकाशित भेल अछि। दोसर नाट्य-मंच विषयक पत्रिका 'रंगमंच' मे डॉ० दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह ''मौन'', नरेन्द्र झा, रामलोचन ठाकुर, श्रीमती पन्ना झा, नचिकेता, गंगेश गुंजन, डॉ० प्रबोध नारायण सिंह आ डॉ० अणिमा सिंहक आलेखक संग मंच परिवारक सदस्य लोकनिक परिचय-पात देल गेल अछि। एहिठाम कहनाइ आवश्यक नहि जे नाटक आ मंचक विकास मे एहन पत्रिकाक की प्रयोजन, परंच दुर्भाग्य जे एहि अध्याय पर एते शीघ्र यवनिकापात भ गेल।

मैथिलीक दोसर श्रेणीक पत्रिका सभ मे 'मिथिला मिहिर', 'वैदेही' आ 'मिथिला दर्शन' सभ सँ बेसी दिनधरि चलल अछि। स्वभावत: नाटक आ रंगमंचक विकास मे मिथिला मिहिरक भूमिका सर्वाधिक उल्लेखनीय आ प्रशंसनीय रहल अछि। १९६० सँ १९८४ धरि मिथिला मिहिर मे कुल एगारह गोट मौलिक आ दू गोट अनूदित नाटक धारावाहिक किंवा एक अंक मे प्रकाशित भेल अछि जकर सूची नीचा देल जा रहल अछि—

	नाटक	लेखक
१)	राज्याभिषेक	प्रो० राधाकृष्ण चौधरी
२)	एकटा अनचिन्हार	योगिराज
३)	खोज	प्रो० मनमोहन झा
४)	स्वर्ग-मर्त्य	प्रो० गणेश बिहारी शर्मा
५)	लोक नटकिया	गंगेश गुंजन
६)	एकटा राम	अनिल चन्द्र ठाकुर
७)	चौबटिया	गंगेश गुंजन
८)	ओकरा आङनक बारहमासा	महेन्द्र मलंगिया
९)	नवका सिलेबस	गंगेश गुंजन
१०)	कमला कातक राम, लक्ष्मण आ सीता	महेन्द्र मलंगिया
११)	आइ भोर	गंगेश गुंजन
१२)	कंजूस	मूल-मोलियर, अनु० प्रो० दामोदर झा
१३)	शक्तिशालिनी के	मूल-स्ट्रीडवर्ग, अनु० प्रो० दामोदर झा

एहि अबधि मे मिथिला मिहिर मे कुल संतानवे गोट एकांकी सेहो प्रकाशित भेल अछि जाहि मे सर्वाधिक एकांकी महेन्द्र मलंगियाक थिक। ई एकांकी सभ थिक—टूटल तागक एकटा ओर, नसबन्दी, एकटा बतही आयलि छलैक, फोनक

करामात, ओ घैला फोड़ै छै, प्रेत चाहय अशौच, लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत, एक टुकड़ा पाप, मालिक चल गेलाह, बिरजू, बिल्टू आ बाबू, भाषणक दोकान, ई जनम हम व्यर्थ गमाओल.... आदि। दोसर नम्बर पर छथि डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'। हिनक कुल नओ गोट एकांकी प्रकाशित अछि जे एना अछि—भोरुका स्वप्न, हुनकर भरदुतिया, शस्त्र आ शास्त्र, शाहबन्दी, प्रगति, अनमिल आखर, हुनकर पुत्रवधू, भाय-बहिन आ बस कंडक्टर। किछु अन्य एकांकी मे अछि—आरसी प्रसाद सिंहक—हमर स्वप्न सार्थक भेल, पं० गोविन्द झाक—मनुष्यक मोल, वरदेखी आ मोछ संहार, जीवकान्तक—कालखण्ड, पीड़ा, प्रदीप बिहारीक—साँझक साँझ, निघेंस, सुकान्त सोमक सिलसला, सोमदेवक-महाकवि मैथिली माधव आ समस्या, विभूति आनन्दक—ई महाभारत कोन पर्व कहौते, रमाकान्त राय रमाक—विद्यापतिक चित्रशाला, गौरीकान्त चौधरी कान्तक—नागयज्ञ आदि।

मिथिला मिहिरक पश्चात 'वैदेही' आ 'मिथिला दर्शन'क नाम अबैत अछि। वैदेहीक फरबरी, १९९४ अंक मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क नाटक 'एकटा आओर वसन्त' प्रकाशित भेल अछि। एहि पत्रिका मे सेहो समय-समय पर एकांकीक प्रकाशन भेल अछि आ हमरा लग उपलब्ध तथ्यक आधार पर डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क एकांकी सर्वाधिक अछि। हुनक सात गोट एकांकी एना अछि—चित्र ओ गीत, उगनाक गृह आगमन, हरही, मिथिलाक बेटी, दिल्लीक इनार, मिथिलाक तरुआरि आ मुनरीक मोल। वैदेहीक सितम्बर, ९५ अंक मे लिली रेक बुद्धिमान आ ९८ अंक मे चन्द्रेशक 'सुनगा दी आगि' सेहो प्रकाशित भेल अछि।

'मिथिला दर्शन' मे उपलब्ध सूचनाक आधार पर नाटक त नहिञे, एकांकी सेहो बड़ थोड़ प्रकाशित भेल अछि। डॉ० प्रेमशंकर सिंहक अनुसार एहि पत्रिका मे 'मणिपद्म'क छौ गोट एकांकी प्रकाशित भेल अछि, परंच हमरा मात्र चारि गोटक नाम उपलब्ध भ सकल जे एना अछि—विद्यापति एलाह, सझौती राजा, हंसक यात्रा (छन्दबद्ध वार्ता) आ मिथिलाक कण-कण मे।

एकर अतिरिक्त 'देसिल बयना'क शारदीय, १९८२ अंक मे श्यामलतनु दास गुप्त लिखित ओ रामलोचन ठाकुर द्वारा अनूदित 'जादूगर' नाटक प्रकाशित भेल अछि। 'आरंभ'क प्रवेशांक मे महेन्द्र मलांगियाक एकांकी 'मुँहक काट', लिली रेक 'गान्धारी' आ 'द्वन्द्व' क्रमशः पन्द्रहम आ पच्चीसम अंक मे प्रकाशित अछि। 'मैथिली अकादेमी पत्रिका'क अगस्त-सितम्बर, ८३ अंक मे आरसी प्रसाद सिंहक संगीत रूपक 'पुण्य पर्व' आ योगानन्द झाक रेडियो नाटक 'अमृतक बँटवारा' प्रकाशित भेल

अछि। 'कर्णामृत'क अंक-६४ मे रमानन्द रेणुक 'हौआ' आ शारदीय, ९२ मे 'मनुखदेवा' प्रकाशित भेल अछि। 'भाखा'क प्रवेशांक मे विभूति आनन्दक कथा आ ज्योत्सना चन्द्रम्क संवादक संग 'एसगर-एसगर' प्रकाशित भेल अछि त 'भारती मंडन'क चारिम अंक मे अशोक कुमार ठाकुरक 'माम' आ पाँचम अंक मे राजकमल चौधरीक रेडियो नाटक 'बसात' लेखनक ४३ वर्ष पश्चात् प्रकाशित भेल अछि।

उपलब्ध सूचना सामग्रीक आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य होइतहुँ सम्पूर्ण होएबाक दावा करब सर्वथा अनुचित। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आ वितरण-व्यवस्थाक दैन्य दशाक बोध जनिका होएतनि से सहजहिं एहि काजक दुरुहताक अनुमान क सकैत छथि। तथापि उपरोक्त विवरणक आधार पर नाटक एवं रंगमंचक प्रति पत्र-पत्रिकाक दृष्टिकोण, ओकर विकास मे योगदान-अवदानक एक स्पष्ट चित्र त अबस्से देखल-पाओल जा सकैत अछि। समकालीन नाट्य-मंचक इतिहास मे हमरा जनैत सर्वाधिक चर्चित-प्रशंसित महेन्द्र मलंगियाक 'ओकरा आङनक बारहमासा' आ 'कमला कातक राम लक्ष्मण आ सीता', 'नसबन्दी', 'ओ घैला फोड़ै छै', 'लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत' पत्रिकेक माध्यमे प्रकाश मे आयल अछि। वर्ष २००० मे प्रकाशित 'अनमिल आखर' नामे डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क एकैस गोट एकांकीक संग्रहक आधार निर्विवाद इएह पत्रिकाक सभ अछि। नाटक त कमोवेश, परंच एकांकीक लेखन-प्रकाशन त प्रायः पत्रिके पर निर्भर रहल अछि। वास्तविकता त इएह अछि जे एकांकीए किएक बहुतो नाटक आइ पर्यन्त पुस्तकाकार प्रकाशित होएबाक सौभाग्य सँ वंचित पत्रिकाक पन्ना मे हेरायल-भुतिआयल पड़ल अछि।

नाटक आ रंगमंच विषयक निबन्ध तथा नाट्य-प्रस्तुतिक समीक्षाक माध्यम सँ सेहो पत्र-पत्रिकाक योगदान नाटक आ रंगमंचक विकास मे देखल-पाओल जा सकैत अछि। जहाँधरि समीक्षाक प्रश्न अछि, पत्रिकाक भूमिका प्रायः नगण्य रहल अछि। कारण जे रहल हो, परंच सत्य के स्वीकार त करहि पड़त। जहाँधरि हमरा ज्ञात अछि, एहि तरहक प्रयास सर्वप्रथम कुणाल-अग्निपुष्प संपादित आ कलकत्ता सँ प्रकाशित ''शिखा'' द्वारा भेल अछि। 'शिखा'क जून, ७५ अंक मे कुमार अनिलक 'रंगमंच : तीनटा नाट्य प्रस्तुति' मे 'मैथिली रंगमंच'क 'ड्राइंग-रूम शो' जाहि मे गंगेश गंजनक 'आइ भोर' तथा महेन्द्र मलंगियाक 'लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत' आ 'नसबन्दी'क प्रस्तुतिक समीक्षा प्रस्तुत कएल गेल अछि। स्मरणीय जे मैथिलीक ई प्रथम 'ड्राइंग रूप शो' किंवा 'चेम्बर ड्रामा' थिक जे मैथिली नाटक ओ रंगमंच कैं विस्तृत आयाम दैत अछि, ओकर विकास कैं एक नव दिशा दैत अछि।

तत्पश्चात् रामलोचन ठाकुर संपादित 'अग्निपत्र' (अंक-८) एहि परंमरा कैं आगू बढ़बैत पुन: अ०भा० मिथिला संघ आ मैथिली रंगमंच द्वारा प्रायोजित चारिगोट नाट्य-मंचनक समीक्षा कुणाल द्वारा प्रस्तुत कएलक अछि।

वर्तमानक विमर्श आ भविष्यक परिकल्पना लेल इतिहासक ज्ञान आवश्यके नहि, अनिवार्य होइत छैक। अपन इतिहास सँ अपरिचित-असम्पृक्त वर्तमान स्वयं मे विकलांग आ भविष्यक दिशा निरुपण मे सदा-सर्वदा अक्षम प्रमाणित भेल अछि। कहियो काल त ओ अपन उद्देश्यक विपरीत परिणाम प्राप्तिक लेल वाध्य रहैत अछि आ प्रकारान्तर सँ अपन देश-काल परिवेशक पराभवक कारण बनि इतिहासक अभिशप्त अध्यायक रूप मे चिन्हित भ जाइत अछि। आ एहन अवस्था जँ साहित्य-कलाक हो त कथे की! स्वभावत: एहि स्थिति सँ उबरबाक लेल लेखक प्रयोजन होइत छैक। लेख जे ने मात्र इतिहासक जानकारी दैत अछि, अपितु इतिहासक आधार पर वर्तमान कैं व्याख्यायित करैत अछि आ भविष्यक इंगित वा संकेत दैत पाठक कैं दृष्टिसम्पंन्न आ बुद्धिदीप्त बनबैत अछि।

मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास बड़ पैघ। जेहने दीर्घ तेहने समृद्ध। जेहने विस्तृत आयाम, तेहने नयनाभिराम। परंच तकर ज्ञानक आधार की थिक ? ने त हमरा लोकनि ओ मंचन देखने छी आ ने सभ नाटकक पुस्तके देखबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। स्वाभाविक छैक जे एहि जानकारीक आधार थिक इतिहास-ग्रंथ आ विद्वान शोधकर्त्ता लोकनिक नाना-विध लेखादि। अतीतक बात त कात जाओ, वर्त्तमानो मे जतबा जे पोथी रचित प्रकाशित होइत अछि, नाटक मंचित होइत अछि, ताहि मे बड़ थोड़ पोथी पढ़बाक आ मंचन देखबाक अवसर उपलब्ध भ पबैछ। तथापि जँ ओकर जानकारी रहैत अछि त निर्विवाद तकर माध्यम लेखादिए रहैत अछि, जकर प्रमाण मैथिली पत्र-पत्रिकाक अवलोकन सँ सहजहि पाओल जा सकैत अछि। एहिठाम हमरा मोन पड़ैत छथि डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'। नेपालक प्राचीने नहि समकालीनो मैथिली नाटक आ रंगमंच पर हिनक विद्वतापूर्ण शोधपरक लेख समय-समय पर विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहैत अछि। 'भाखा'क नवम्बर, ८८ आ जनवरी, ८९ अंक मे प्रकाशित 'विदापत', 'कर्णामृत' शारदीय, ९२ मे प्रकाशित 'नेपालक आधुनिक मैथिली नाटक आ 'रंगमंच' मे प्रकाशित 'नेपालक मैथिली नाटकक विशेषता' विशेष उल्लेखनीय अछि। 'मौन'जीक अतिरिक्त डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ० रामदेव झा, डॉ० अणिमा सिंह, श्रीमती पन्ना झा, रामलोचन ठाकुर, नचिकेता, डॉ० प्रेमशंकर सिंह, कुणाल आदिक नाम एहि क्षेत्र मे विशेष उल्लेखनीय अछि।

मैथिली नाटक आ रंगमंचक विकास मे पत्रिकाक भूमिका पर विचार, हमरा जनैत, नाट्यसंस्था सभ द्वारा प्रकाशित पत्रिकाक अध्ययन-अवलोकन बिनु पूर्ण नहि भ सकैत अछि। ई भिन्न कथा जे किछु लोक एकरा पत्रिका मानबा-कहबा मे असौकर्य बोध करैत छथि। एहि सन्दर्भ मे हम 'अरिपन' आ 'भंगिमा'क चर्च करय चाहब। अपन रचना सभक आधार पर ई पत्रिका सभ ने मात्र पठनीय अछि, अपितु संग्रहणीय सेहो। उदाहरण लेल 'भंगिमा'क बीसम अंक जे 'श्रीकान्त मण्डल समृतिक-अंक'क रूप मे आयल अछि।

वस्तुत: 'भंगिमा' जे भंगिमा नाट्यसंस्थाक मुख्खपत्र थिक, एकर अवदान एहि क्षेत्र मे वेश उत्साहवर्द्धक कहल जा सकैछ। हमर जानकारीक अनुसार एकर विभिन्न अंक मे प्रकाशित मौलिक ओ अनुदित नाटक निम्न अछि :—

क्र०सं०	नाटक	लेखक
१)	प्रायश्चित	छत्रानन्द सिंह झा
२)	पृथ्वी पुत्र	अशोक
३)	समय संकेत	विभूति आनन्द
४)	सीताहरण	छत्रानन्द सिंह झा
५)	एसगर-एसगर	ज्योंत्सना चन्द्रम
६)	काठक लोक	महेन्द्र मलंगिया
८)	अरराइत गाछ	मनोज कुमार पाठक
९)	भामती	सुशील
१०)	गोनू झा	कुणाल
११)	मुद्रायज्ञ	कुमार शैलेन्द्र
१२)	एक दिन	मूल : प्रताप नारायण मिश्र, अनु० विनोद कुमार मिश्र
१३)	जाव भेकेन्सी	मूल : समुदाय, कर्नाटक, अनु० विभूति आनन्द
१४)	गाछ	मूल : लाभ शंकर ठक्कर, अनु० छत्रानन्द सिंह झा
१५)	रामलीला	मूल : राकेश, अनु० छत्रानन्द सिंह झा
१६)	ले बलैया	मूल : अनिल कुमार मुखर्जी, अनु० किशोर केशव
१७)	गाछ लगाउ	नागार्जुनक कविताक नाट्यरूप—कुणाल
१८)	फाँस	मूल : शैलेश गुह नियोगी, अनु० रामलोचन ठाकुर

'भंगिमा'क विभिन्न अंक मे नाटक आ मंच विषयक रचनाक विलक्षण संभार देखल जा सकैछ। 'अंतिका' मे नाट्यमंच हेतु नियमित स्तंभ 'रंगायन' राखल गेल

अछि। एकर अप्रैल, २००३—मार्च, २००४ अंक मे प्रदीप बिहारीक 'प्रेम न हाट बिकाय' आ अप्रैल, २००४—मार्च, २००५ अंक मे वागीश कुमार झाक 'बिजुलिया भौजी' प्रकाशित भेल अछि। 'मैथिली दर्शन'क अप्रील-जुन, २००४ अंक मे कलकत्ता नाट्यमंचक संक्षिप्त इतिहास 'समकालीन मैथिली रंगमंच आ कलकत्ता' प्रकाशित भेलअछि त एकर जुलाइ-दिसम्बर, २००४ अंक मे कुणालक 'प्रेम प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवाबतीक जेय' तथा जनवरी-मार्च, २००५ अंक मे, 'विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह' प्रकाशित भेल अछि। 'जखन-तखन' अंक-२ मे विभूति आनन्दक 'हाली-हाली बरिसू' नाटक प्रकाशित भेल अछि। १९७६ मे मंचित रामलोचन ठाकुर द्वारा अनुदित शैलेश गुह-नियोगीक 'रिहर्सल' कोकिल मंचक स्मारिका-२००४ मे प्रकाशित अछि।

एहि तरहेँ अभाव अभियोग आ अपेक्षाक बात भनहि जे जेना हो, नाटक आ रंगमंचक विकास मे पत्रिकाक भूमिका सुखद आ संतोषप्रद त कहले जा सकैत अछि।

(२००५)

सन्दर्भ :—

१) रंगमंच — सम्पा० रामलोचन ठाकुर
२) लोकमंच — सम्पा० गुणनाथ झा
३) बंगभाषा ओ साहित्य — दीनेश चन्द्र सेन
४) मैथिली साहित्यक इतिहास — डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'
५) मैथिली साहित्यक विकास मे मिथिला मिहिरक योगदान (शोध-प्रबन्ध) — डॉ० सत्यनारायण मेहता
६) वैदेही (विभिन्न अंक) — सम्पा० प्रो० कृष्णकान्त मिश्र
७) मिथिला दर्शन (विभिन्न अंक) — सम्पा० प्रो० प्रबोध नारायण सिंह
सम्पा० डॉ० अणिमा सिंह
सम्पा० डॉ० इलारानी सिंह
सम्पा० बाबू साहेब चौधरी
सम्पा० डॉ० प्रेमशंकर सिंह
८) अनमिल आखर — सम्पा० जनार्दन झा
९) देसिल बयना — सम्पा० राजमोहन झा
१०) आरंभ (विभिन्न अंक)
११) मैथिली अकादेमी पत्रिका (अंक अगस्त-सितम्बर ८३) — सम्पा० योगानन्द झा

१२) भाखा (विभिन्न अंक) — सम्पा० विभूति आनन्द
प्रधान सम्पा० डॉ० जयकान्त मिश्र
१३) कर्णामृत (विभिन्न अंक) — प्रधान सम्पा० अर्जुन लाल करण
सम्पा० राजनन्दन लाल दास
१४) भारती-मंडन (अंक ४ आ ५) — सम्पा० केदार कानन
१५) शिखा — सम्पा० कुणाल अग्निपुष्प
१६) अग्निपत्र — सम्पा० रामलोचन ठाकुर
१७) भंगिमा (विभिन्न अंक) — सम्पा० छत्रानन्द सिंह झा एवं अन्य
१८) अंतिका — सम्पा० अनल.कान्त
१९) मैथिली दर्शन — प्रधान सम्पा० रामलोचन ठाकुर
सम्पा० नवीन चौधरी
२०) जखन-तखन-२ — सम्पा० विभूति आनन्द



भतरस लेल भाषा

पिरथी कें नचौनिहार मैथिलीक उकट्ठी कवि जीवकान्तक तेजी कोनो रचनाकारक हेतु ईर्ष्याक विषय थिक। ओ जे किछु लिखै छथि पाठक कें आकर्षित करै छइ। सोचबा लेल वाध्य करै छइ। चिन्ताक खोराक जोगबै छइ।

एमहर हुनक एक आलेख अनुवार्त्ता क जनवरी-फरवरी १९९५ अंक में छपल अछि-बतरस लेल भाषा। ओ कहै छथि-भाषाक उद्देश्य एखनो यैह अछि (बतरस लेल, गप शप करब) आ सैह भाषाकें जिया कए राखत। भाषाक आविष्कार भावक आदान-प्रदान लेल भेल छल एहि मे कोनो दू मत नहि। किन्तु भाषा एतबे धरि सीमित अछि आ इएह ओकरा जिया क राखत, ई नहि मानल जा सकैछ। एहि मे आंशिक सत्यता अवश्ये छैक, किन्तु ई सम्पूर्ण सत्य नहि थिक। जँ ई सम्पूर्ण सत्य रहैत त एक सए वर्ष मे एक हजार भाषाकें अंग्रेजी केना आ किए चाटि जाइत ?

मनुक्खक विकासक संगहि भाषाक महत्ता, ओकर उपयोगिताक क्षेत्र बढ़लैए। बुधियार लोक एहि बात कें नीक जकां बुझलक। इएह कारण छलैक जे पराजित देश पर गुलाम देश पर शासक देश अपन भाषा थोपलक। भाषाक माध्यमे ओ अपन सभ्यता-साहित्य-संस्कृति कें गुलाम देश में प्रचार-प्रसार केलक। एकरे प्रत्यक्ष प्रमाण थिक जे अंग्रेज सं मुक्त होइतहुं भारतीय जन-मानस अंग्रेजी भाषा-संस्कृति सं मुक्त नहि भेल।

जहांधरि हिन्दी कें अंग्रेजीक स्थान लेबए बला बात छैक, ई स्वाभाविकें थिक जे प्रतिवर्ष करोड़ो टाका एहि पर सरकार बहबैए आ हिन्दी पचास वर्ष पूर्व जहां छल, आइयो तंही अछि। स्मरण रखबाक थिक जे हिन्दी आ उर्दू कृत्रिम भाषा तिक। ई एहि देशक भाषा अबस्से थिक मुदा एहि देशक माटिक नहि, मनुक्ख नहि।

अंग्रेजी विदेशी भाषा हमरा लोकनिक हेतु रहितहुं, कोनो ठामक माटिक भाषा छल। ओकरा बढ़ैबामे राज्यक बल आ धर्मक छल, दुनू समान रूपें कार्यरत रहलै। आ राज्यक वर्तमान मे नहि रहितो धर्मक छल सक्रिय छैक। तेसर, किन्तु प्रमुख कारण छलैक आ छैक भतरस। अंग्रेजी पढ़ने नीक नोकरी भेटबा मे सुविधा।

हिन्दी के सेहो राजसत्ता आ धर्मसत्ताक संग जोड़बाक प्रयास या षडयंत्र भइये रहल अछि। जनितो जे भारतीय संविधान मे राष्ट्रभाषाक पद हिन्दी कें नहि देल गेल छैक - एहन कोनो प्रावधाने नहि छैक, एकरा राष्ट्रभाषा कहि प्रचारित कएल जाइछ आ हिन्दी-प्रेम कें राष्ट्र प्रेमक नामे ढ़ोल पीटल जाइछ। वास्तव मे हिन्दी के सम्पर्क

भाषा, सरकारी काम काजक भाषा बनेबाक प्रावधान छैक। सत्य त ई अछि जे भारतीय संविधानक आठम अनुच्छेदक अन्तर्भुक्त समस्त भाषा राष्ट्रक भाषा थिक। हिन्दी के धर्मक संग जोड़बा लेल हिन्दी, हिन्दू-हिन्दुस्तानक नारा देल गेल। ई नारा हिन्दू कें त प्रभावित नहि क सकल - देश विभाजन में सहयोगी अबस्से भेल। हिन्दीक उन्मादी विद्वान धीरेन्द्र वर्मा लिखै छथि - खड़ी बोली हिन्दी का घर संयुक्त प्रान्त, बिहार, राजस्थान मध्य भारत और हिन्दुस्तानी मध्य प्रान्त के हिन्दुओं का यह साहित्यिक भाषा है। इन प्रान्तों के मुसलमानों और पंजाब तथा दिल्ली के हिन्दू और मुसलमान दोनों की साहित्यिक भाषा खड़ी बोली हिन्दी की बहिन उर्दू है जो संस्कृत गर्वित न होकर फारसी, अरबी मिश्रित है। (विचारधारा/५८)

उपरोक्त कथन जे कतेक मूर्खतापूर्ण थिक से कहबाक प्रयोजन नहि। विश्वक समस्त भाषा वैज्ञानिक एहि बात कें मानैत छथि जे भाषा कोनो जाति वा धर्मक नहि भूमिक होइ छइ। एकरा एकटा संयोगे कहल जाएत जे अंग्रेजी एक विशेष धर्मक संग जुड़ल अछि। परञ्च हिन्दी कें धर्मक संगे जोड़बाक पूर्ण प्रयास भेल आ तकरे परिणाम थिक जे सरकारी आंकड़ाक अनुसार ओही क्षेत्रक मुसलमानक मातृभाषा उर्दू छैक जकरा हिन्दी भाषी क्षेत्र कहल जाइए।

आइ हिन्दी-हिन्दी कहि के सभ चिचिआइए ? उएह लोक सभ जे अंग्रेजी शासनकाल मे अंग्रेजी आ मुसलमानी शासनकालमे उर्दूक ढ़ोल पीटैत छल। एहि मोसैहैब दलक एक मात्र लक्ष्य - उद्देश्य छैक सत्ताक झालि बजा अपन पेट पोसब। एकरा देश जन सं कहियो कोनो सम्पर्क नहि छलैक वा ने छैक।

हिन्दीक विस्तारवादी नीतिक कारणे आइयो दक्षिण भारत मे एकरा सँ लोक कें घृणा छैक आ तें हिन्दीक होलिका दाह कएल जाइछ। परञ्च लक्ष्य करबाक विषय थिक से सरकारी दफ्तर मे हिन्दी पदाधिकारीक पद पर अपेक्षाकृत बेसी दक्षिण भारतीय छथि। स्पष्ट अछि, हिन्दी भतरस लेल, चाकरी लेल लोक सिखैए।

मैथिलीक महाकवि यात्री मैथिली छोड़ि देलनि। ओ नागार्जुन बनि गेलाह। तीन कट्ठा जथा सँ अपन परिवारक भरण-पोषण असंभव। मैथिली लेखककें पाइ नहि दैछ। हिन्दी देलकनि। तीन कट्ठा जथा स तीन बिघा नहि भेलनि, परिवार त चललनि। हिन्दी अकादमी पुरस्कार नहि देलकनि तें की ? लालू यादव डेढ़ लाख त देलकनि। भातक समक्ष भाव पराजित भेल। भाषा-भूमि झुस भेल। तें मैथिली आइ धरि भतरसक भाषा नहि बनि सकल। ई हमरा लोकनिक भाषा चेतनाक प्रमाण थिक। भाषा-चेतनाक प्रथम पुरुष विद्यापतिक वंशधरक इएह स्थिति थिक। बंगलाक

बंकिम बाबू अपन पैत्रिक जथा बेचि पत्रिका बहार केलनि। महाकवि गिरीश घोष ठेला पर सामान लादि तकरा खीचि गामे-गाम जा नाटक केलनि । किशोर कवि सूकान्त यक्ष्मा सँ पीड़ित, बिनु दवाइ, बिनु पथ-पानिक मरि गेला। महाश्वेता देवीक उपन्यासक हिन्दी अनुवाद हुलासे हिंदी प्रकाशक सभ छपैए आसे नागार्जुनक कोनो उपन्यास सँ थोड़ नहि बिकाइ छइ। नागार्जुनकसमकालीन सुभाष मुखोपाध्याय कें ज्ञानपीठ पुरस्कार सँ सम्मानित कएल गेल। बंगला भाषाक आन्दोलन मे हिनका जुलूसक आगा-आगा चलैत हम देखने छी। मैथिली पर केहनो कुठारागात हो बाबा नागार्जुन मुह नहि खोलता। समस्त साहित्यकारक मुह मे जाबी लागि जाएत। भोला बाबू, किरण जी, राघवाचार्य, प्रदीप मैथिली पुत्र आदि अपवाद छथि।

मैथिली कें सभ सँ पहिने संविधानक मान्यता चाही। से भेने बहुतो अबोध मैथिली भाषी हीन भाव सँ मुक्त होएता। मैथिलीक शत्रु आ खास कें हिन्दीक कौरा पर पालित जंतु सभ एकरा बोली कहबाक धृष्टता नहि करत। भारतक अन्यान्य भाषा-भाषी मैथिली सँ परिचित होएत। एकर अपन क्षेत्र अपने आप निर्धारित भ जएतैक।

बिहार लोक सेवा आयोग मे मैथिलीक मान्यता भेने कतेको मैथिली भाषी कें चाकरी पेबा मे सुविधा भेलै – ई ककरो सँ नुकाएल नहि अछि। संविधानक स्वीकृति सँ मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोग में प्रवेश पाबि सकैत अछि। वर्तमान मे मैथिली ढेलमरा बना देल गेल अछि। जखन जकरा मोन होइ छइ ढेपिया दैछ। कखनो बि० लो० सेवा आयोग सँ त कखनो स्कूलक पाठ्यक्रम सँ मैथिली के हटा देल जाइछ। संविधानक मान्यता रहने एहन दुस्साहस नहि कियो क पाओत। मिथिलांचल मे शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली बनेबा मे सहज होएत। आकाशवाणी दूरदर्शन मे मैथिलीकें उचित स्थान आ सम्मान भेटतैक आ ई सभ भेटने मिथिलाक साहित्य संस्कृति-नृत्य संगीतादिक विकास संभव होएत। मैथिली मात्र बतरसक नहि भतरसक भाषा बनि पाओत। आ एक खेप जं से बनि गेल त पुनः केओ एकर पएर नहि पकड़ि पाओत। एना ई काज राजनेता लोकनिक थिक मुदा अपना ओतय तकर नितान्त अभाव। मात्र पमरियाक तेसर, चमचा, झलिबज्जा सभ। तें इहो काज साहित्यकारे कें करय पड़त। भाषा चेतनाके जगाएब, ओकर विकास-निश्चिते साहित्यकारक काज थिक। भाषा चेतनाक अभाव एगो आत्मघाती रोग थिक आ तें एकर निदान अनति विलम्ब आवश्यक अछि।

(१९९५)

मिथिला नाटक आ मुन्शी रघुनन्दन दास

कोनो रचना मूल्यांकन करबाक हेतु ओकर काल परिवेश कें ध्यान मे राखब महत्वपूर्ण नहि, अवश्यको अइ। मात्र मूल्यांकने किएक, ओकर पूर्ण रसास्वादनक हेतुओ ई बात आवश्यक अइ। 'मिथिला नाटक' जे आइ सँ प्रायः साठि वर्ष पहिने प्रकाशित भेल ताइपर किछु लिखबाक हेतु तत्कालीन मिथिलाक स्थिति सँ अवगत होएब आवश्यक, जे हम नहि छी आँ जँ थोड़ बहुत छीहो त पोथी-पत्रक आधार पर। तें हमर विवेचनक आधार इएह थिक।

अपन वक्तव्य कें स्पष्ट करबाक हेतु हम एहि पोथीक दृश्य ओ पात्र, वार्त्तालाप भाषा एवं उद्देश्य पर फराक-फराक बात करब समीचीन बुझैत छी।

दृश्य ओ पात्र :- नाटक ६ दृश्य मे अइ जे तत्कालीन मैथिली वा अन्यान्यो भाषा मे लिखित नाटकक अनुरूपहि अइ। आइ जेना खर्च कमेबाक, दृश्यके जीवंत करबाक आ अन्यान्य व्यवस्थादिक सुविधाक हेतु कम दृश्य अथवा एकहि दृश्य मे नाटक समाप्त करबाक प्रयास-प्रचलन देखल जाइछ, पहिने तेना नहि छल आ से स्वभाविके कहक चाही। आइ नाटक आ मंच बड़ विकसित भ गेलए परञ्च साठि वर्ष पहिने ई प्रारंभिके अवस्था मे छल। यद्यपि संस्कृत नाटक विकासक चरम अवस्था के प्राप्त होतहुँ बीसम शताब्दी मे आबि पोथीए धरि सीमित भ गेल छल। ओनहुना, जहाँ धरि दृश्यक प्रश्न छई, संस्कृतो नाटक मे एकर बहुलता देखबा मे अबैछ। कहबाक प्रयोजन नहि जे पहिने नाटक पर्दा टाङि मंच कयल जाइत छल, आइ-कालि जकाँ सेटक व्यवस्था छलैक नहि आ तें दृश्य बेसी भेनहुँ कोनो असुविधा नहि होइत छलैक। राजदरबारक पर्दा उठा आम्रवाटिकाक पर्दा खसा देनहि परिवर्तन भ जाइत छलैक, जाइ मे ने त बेसी समय अथवा श्रमक प्रयोजन पड़ैत छलैक। गाम-घर मे आइयो-कालि प्रायः एहिना नाटक मंचस्थ कएल जाइए।

जहाँ धरि पात्रक प्रश्न अइ – बात एक रङ्गाहे अइ। संस्कृत नाटक त भाषा-नाटकक आदर्श छलैक। भास बिरचित 'प्रतिमानाटक' मे एगारह गोट स्त्री आ पन्द्रह गोट पुरुष पात्र अइ। पात्रक बहुलता त आइ कालि नीक सँ नीक अत्याधुनिक नाटको मे देखल जाइछ।

वार्तालाप :- मिथिला नाटक मे कतौ-कतौ वार्ता बड़ दीर्घ अइ जे आजुक परिवेश मे अनसोहांत लगैछ। किन्तु जँ प्राचीन नाटकक अवलोकन करी त स्पष्ट भ जायत जे इहो कोनो नव बात नहि। 'मुद्राराक्षस्' नाटकक प्रथमे अंक मे चाणक्यक

वार्ता पूरा दू पेज मे अइ। तहिना गीतक बहुलता सेहो परम्पराक अनुरूपहिं कहल जा सकैछ।

भाषा :- एहि नाटकक भाषा संस्कृतनिष्ठ अइ। कोनो जीवंत भाषा नदीक जल जकाँ अविरल गतिशील रहैछ जे विकासक प्रक्रिया कहबैछ, आ एहि विकासक क्रम मे शब्दक स्वरूप परिवर्तित भेनाइ स्वभाविके। तें पूर्वक दिवा-रात्रि आइ दिन-राति भ गेलएं, आम्रवाटिका आमक गाछी भ गेलए। ई भिन्न बात भेल जे केओ-केओ एखनहुँ एहन शब्दक प्रयोग करैत छथि। परञ्च जन-साधारण मे एहन प्रयोग नहि छैक। तत्कालीन भाषा पर संस्कृतक पूर्ण प्रभाव छलैक - विशेष कें गद्य पर। तें जँ एहि पोथीक भाषा संस्कृतनिष्ठ अइ त से दोषावह नहि अपितु स्वाभाविके कहल जायत। जहांधरि संस्कृतक गीतक प्रयोगक प्रश्न अइ से जाइ उद्देश्य सँ ई नाटक लिखल गेलए, तकर अनुरूपहि थिक, आवश्यक अइ। स्वभावत: इहो बात गौण पड़ि जाइछ जे ओ ककरा मुँह सँ बहार भेलए।

संस्कृतक अतिरिक्त एहि पोथी मे बंगला आ हिन्दी भाषाक प्रयोग सेहो भेलए। बंगाली पंडितक मुंहे बंगला भाषाक प्रयोग पात्र के जीवंतता प्रदान करैछ आ कल्पनाक स्थान पर वास्तविकता कें प्रखर करैछ। जहां धरि हिन्दीक प्रश्न अइ - जे बनारसी पंडिते धरि सीमित रहैत त ठीके छल परञ्च जखन बंगाली पंडितक मुंहे ओ मैथिल द्वयक मुंहे ओकर प्रयोग होइछ तैखन बितर्कक विषय बनि जाइछ। सरिपहुँ कि एकर प्रयोजन छलैक ? बंगाली पंडितक प्रश्न - 'तुमि के' मैथिल (कुम्हार) नहि बुझि पओलक आ उएह जखन हिन्दी मे पुछैत छैक - 'आप को होता है' त 'हम को होता है, आदमी होता है' कहि दैत छैक। बंगला आ मैथिलीक शब्दावली मे एखनहुँ धरि बड़ बेसी अन्तर नहि भेलैए आ साठि वर्ष पहिनेक कथाये की। उच्चारण मे अन्तर होइतहुँ कम सँ कम 'तुमि के' बुझब बड़ कठिन नहि हेबाक चाही। दोसर ताइ समय मे हिन्दीक प्रचार-प्रसार कतेक छलैक सेहो संदिग्ध। कम सँ कम सरकार कोटिक कोटि टाका एहि पर नहिञे बुकैत छल होएत आ ने बलजोरी लदैत छल होएतैक जेना वर्तमान सरकार क रहलए। ओना त बंगाली पंडित शुद्ध हिन्दी नहि बजैछ परञ्च जहुना बजैछ तहुना कलकत्ता सन शहर के छोड़ि आनठामक (पल्ली गामक) बंगाली नहि बाजि सकैछ। मैथिल द्वय द्वारा ओहन हिन्दी बजनाइ सेहो स्वाभाविक नहि बुझना जाइछ।

थोड़ेक कालक हेतु जँ मानि लेल जाय जे संस्कृत वार्ता सर्वसाधारण दर्शक के बोधगम्य नहि होएतैक तें बनारसी पंडितक संगहि मैथिल द्वयक संस्कृत वार्ता मे पटु

होइतहुँ हिन्दी के प्रमुखता देल गेलए त की एहि सँ नीक नहि होइत जे मैथिलीएक प्रयोग बनारसी पंडितो द्वारा कराओल जाइत। काशी-बनारस मे ताहू दिन मैथिल पंडितक भरमार छलैक आ तकर संसर्ग बनारसी पंडितक मैथिली ज्ञानक आधार भइए सकैत छल।

सभ सँ विवादस्पद विषय थिक बंगाली पंडितक ई कहब - 'ता हले देशी भाषा बला उचित।' देशी भाषाक रूप मे हिन्दी एखनहुँ नहि परिचित भ सकलए। मिथिला मे एखनों 'काहे-कुहे' भाषाक रूप मे ई जानल जाइछ। पोथीक तथ्य कें जँ सत्य मानि ली त कहय पड़त जे मैथिलगण बीसम शताब्दीक आरंभहि सँ अपन मातृभाषाक प्रति उदासीन आ हिन्दीक प्रति आसक्त छलाह आ स्वयं नाटककार सेहो एहि संदर्भ मे पूर्ण सचेत नहि छलाह। मिथिलाक पुनर्जागरण वा विकासक निमित्त मैथिलीक प्रयोजनीयता सँ ओहो प्राय: अनिभिज्ञ छलाह - तें एकर कोनो प्रतिकार नहि कएल - मैथिली मे पोथी लिखबाक अतिरिक्त।

उद्देश्य :- नाटके किएक, साहित्यक अन्यान्यो विधाक सभ सँ प्रधान वस्तु थिक ओकर कथ्य - शिल्पक स्थान एकर पश्चाते अबैछ आ एहि कथ्य मे सन्निहित रहैछ रचनाकारक उद्देश्य। मिथिला नाटक लिखबाक उद्देश्य स्पष्ट अइ मिथिलाक पुनर्जागरण ओकर प्राचीन गौरव गरिमा के पुन: प्रतिष्ठापित केनाइ। भारतीय षडदर्शन मे पांचटा दर्शनक उद्‌गम ओ विकास मिथिले मध्य भेल अइ। प्राचीन काल मे मिथिला संस्कृत शिक्षाक केन्द्र छल। वर्तमान मे तकर ह्रास देखि लेखक व्यथित आ चिन्तित छथि आ तें एहि नाटक द्वारा ओ मैथिलगण के एहि दिस उन्मुख करबाक प्रयास कएलए। एहि लेल आवश्यक जे लोक कें ओकर बिसरल इतिहासक बोध कराओल जाइ तें मैथिलद्वय द्वारा मिथिलाक गुणगान ओ संस्कृत गीत गायन। तें साधारण मैथिलद्वय सँ बंगाली आ बनारसी पंडित परास्त होइत छथि तथा मिथिलाक गुणगान करैत आपस जाइत छथि। मैथिल समाज मे गौरव बोध, आत्मबल जगेबाक सरिपहुँ सुन्दर प्रयास थिक ई।

कोनो देशक उन्नति-विकासक निमित्त विद्या-बुद्धि, पौरुष, अध्यबसाय, आ आपसी सिनेह सहयोगक जे प्रयोजन छैक से कहबाक प्रयोजन नहि। एहि सभ विषय कें बड़ नीक ढंग सँ उपस्थित कएल गेलए। सूतल मैथिलगण उपरोक्त सभ विषय सँ विमुख रहबाक प्रतीक छथि जे हुनका लोकनिक अवनतिक कारण थिक। त हुनका लोकनिक जागव पुन: एहि दिस उन्मुख होएबाक प्रतीक थिक, मिथिलाक पुनर्जागरणक प्रतीक थिक।

मुन्शी रघुनन्दन दास :– मिथिला नाटकक रचनाकार छथि – मैथिल करण कायस्थ मुन्शी रघुनन्दन दास। अपन नामक पहिने मैथिल शब्द जोड़नाइए प्रमाणित करैछ जे ओ मातृभूमि मिथिलाक अनन्य उपासक छलाह आ मैथिल होएबाक कारणें गौरवान्वित छलाह। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहन व्यक्तित्वक अभाव मे एहन रचनाक कल्पनाओ नहि कएल जा सकैछ। जहांधरि 'करण कायस्थ'क प्रश्न अइ – सेहो हुनक संकुचित वर्णवादी दृष्टिक परिचायक कथमपि नहि – कम सँ कम नाटक मे एहन कोनो बात नहि अइ। ओना ओइ समयक पंडितक लेल वर्ण व्यवस्थाक समर्थन अस्वाभाविक नहि छलै, किन्तु अपन नामक अतिरिक्त आनठाम ई तकर चर्चो ने केलनिहें। वर्णक आधार पर छोट-पैघक बात दूर रहओ। कुम्हारक चर्च विशेष उद्देश्य सँ कएल गेलए – धन्यास्ति मिथिला यत्र कुम्भकारोऽपि पण्डितः। एहि नाटकक प्रधान पात्र मैथिल द्वय सम्पूर्ण मैथिलक प्रतिनिधित्व करैत छथि – कोनो वर्ण विशेषक नहि। हरिसिंहदेवी प्रथाक प्रति व्यंग हिनक प्रगतिशील दृष्टिक परिचायक थिक।

एहि नाटक मे मैथिलीक अतिरिक्त बंगला, संस्कृत आ हिन्दीक प्रयोग भेलए। एहि सभ भाषा पर जे हुनक पूर्ण अधिकार छलनि तकर प्रमाण मे ई पोथीए पर्याप्त अइ। संगहि पोथी सँ इहो स्पष्ट भ जाइछ जे मुन्शी रघुनन्दन दास नाटककारे नहि, सुकवियो छलाह।

(१९८३)



दोषीक दोष

एकटा एहन लोक जे केहनो कष्टप्रद स्थिति मे रहओ, ठोर पर मुस्की रहबे करतैक। हास्य-व्यंग्यक फुलझड़ी अविरल मुह सँ झड़िते रहतैक। भीड़ मे हेराएल मुदा कोनो उटपटांग गप सुनिते तेना के बिन्हता जे तिलमिला देता। आर के? दोषी। देखबा मे मुहदुब्बर मुदा मुहामुहफट्ट। वयस मे अपना सँ छोटो के— भाई गोर लगै छी, कहैत करद्वय सिर संयोगातक मुद्रा बना विंहुसैत। एहन लोक त दोषीए हेताह।

साठिक दशक सँ अविराम कविता लिखैत समस्त ख्यात अख्यात पत्र-पत्रिका मे छपैत, आलोचित प्रशंसित होइत परंच पोथी एकोटा नहि। आइधरि कते कविता लिखलनि, कहिआ कोन पत्रिका मे छपलनि तकर कोनो हिसाब एहि किरानी कवि लग नहि। अपना लग प्रकाशित कविता के कहओ हस्तलिखितो प्रति नहि। तें जखन पोथी छपेबाक मोन भेलनि त बन्धु-बान्धवक भरोस—भाइ हमर कविता सब कत' कत' छपल छैक, कने समेटि दितौ। एगो पोथी छपेबाक मोन होइए। आश्चर्य की जे एहन लोक अपन सौजनियाँ के पोथी पठाबथि आ ताइ मे पूरा फर्मे (16पेज) निपत्ता रहैक। जानि ने अपन उपाधिक सार्थकता सिद्ध करबाक व्यग्रता, ओकर औचित्य के प्रमाणित-प्रचारित करबाक आकुलता व्याकुलता हिनका मे एतेक प्रबल किएक अछि। मुदा दोषीए जखन.......

प्रकाशित-अप्रकाशित रचना सँ जे व्यक्ति एते उदासीन रहि सकैछ, से व्यक्ति अपन भाषा-भूमिक प्रति, अपन देश-काल-परिवेशक प्रति एते साकांक्ष रहत जे छोट सँ छोट घटनाओ ओकरा आँखि के फाँकी नहि द पाओत, ओकरा हृदय के बिनु स्पन्दित केने नहि रहि सकत। कहबाक प्रयोजन नहि जे दोषीक एही बिड़ल व्यक्तित्वक सफल चित्रांकन हिनक कविता सब थिक जे भीड़ मे रहितो भीड़ स फराक अपन विशेष परिचिति प्रस्तुत करैछ।

'यंत्रणाक क्षण मे' उपेन्द्र दोषीक पहिल कविता पोथी थिक। (ओना एहि सँ पहिने सझिया सङोर 'धूरी' अबस्से प्रकाशित भेल अछि'।) पोथी पढ़ला सँ स्पष्ट भ जाइछ जे जतबाधरि रचनाक सङोर ओ क पओलनि-कोनहुना पोथी छापि लेलनि। मैथिलीक सजग पाठक जनैत अछि जे उपेन्द्र दोषीक रचना-संसार एते छोट नहि। ओकर आयामक विस्तार, ओकर शिल्पक चमत्कार, ओकर भाषाक सहजता, ओकर भावक उदात्तता, ओकर व्यंग्यक तीक्ष्णता........ओना कुल मिला कँ ई पोथी एगो बानगी धरि अबस्से प्रस्तुत करैत अछि। अपन 'आत्म-कथ्य मे ओ लिखैत छथि-

''जाहिर अछि जे/भारतीय बाङ्मयक विरिंचिलोकनि/शाही महलक मोखलग नतमस्तक भऽ/धुरखुड़ मे थुथून रगड़ि/सुविधा भोगी भऽ गेल छथि। आ, वैदिक

ऋचाक स्थान/हुनक कोंकिआयब ग्रहण कयलक अछि/तैं अहींक सप्पत भाइ हमर स्वान-प्रेम/तीव्र-तीव्रतर-तीव्रतम भऽ गेल अछि/हमर कविकर्म बिला गेल अछि।''
नहि, ई आत्म-कथ्य दोषीक किन्नहुँ नहि भ सकैछ, आने हुनक कविकर्म बिलायल अछि अन्यथा ओ दोषी नहि रहितथि। मुदा दोषी ओ छथि, दोषी हुनका रहबाक छनि अन्यथा एहन-एहन श्वान-स्वभाव कविनामधारी जीवक भंडाफोड़ के करत ?

भारत स्वाधीन भेल। एहि स्वाधीनताक लेल कएल गेल त्याग बलिदानक जँ ठीक ठीक लेखा जोखा कएल जाय त निश्चिते से विश्वक अप्रतीम घटना होएत। किन्तु एतबा होइतहुँ कि वास्तव मे देश स्वाधीन भेल ? सत्ता अंग्रेजक हाथ सँ किछु भारतीयक हाथ मे आबि गेल बस। तें आइ देशक ई स्थिति—

जतय ईमानदारी अभिशाप, / कर्त्तव्य-निष्ठा पाप/परोपकार पश्चाताप होइछ/ जतय संविधानक मखौल/कानूनक संग चौल/जन-जनके मंत्री बनबाक लौल होइत छैक-/सएह देश हमर थिक। (हमर देश)

हास्य-व्यंग्य मैथिलक जातीय गुण थिक, परंच दोषीक व्यंग्य अपन फराके महत्व रखैत अछि।

एकटा बानगी—

जखन जखन देशक कोखि सँ संवैधानिक / गोसाई जनमैत अछि / हमर मोन आतंक सँ / कुहरि उठैत अछि........./ई गहनमरू, गर्भान्ध पीतवर्ण शिशु/फेर नपुंसके रहि जायत/ कोनो फल नहि उपजाओत।

...........अपन सिंहासन सुरक्षित रखबाक हेतु/राजा बलि कि नहुष के करत पदच्युत/कि कर्ण, राजा शिवि कि हरिश्चन्द्र/वा दधीचि सँ माँगि लेत सर्वस्व/हड्डीधरि।
(ने रहत बांस ने.........)

क्षणिका वा लघु कविता मे दोषीक दोष आर देखार आर धरगर बुझना जाइछ—

साढ़े तीन हाथक अप्रामाणिक खेत/जाहि मे बिनु खादोक उपजाओल जा सकय/अवैधानिक सन्तान/जेना-मंत्री, गर्ल-फ्रेन्ड, विधानसभा/गामक खोपड़ी आ शहरक ऊँच मकान।

हास्य-व्यंग्य दोषीक कविताक अविभाज्य अंग वा उपादान थिक जे एकरा अत्यधिक आकर्षक, सम्प्रेषणीय आ प्रभाबोत्पादक बनवैछ। हिनका द्वारा प्रयुक्त उपमा, प्रतीकादि पर सेहो एकर स्पष्ट प्रभाव देखल जा सकैछ।

राजनीति आइ लोकक दैनन्दिन जीवनक अंग बनि गेल छैक आ सर्वसाधारणक यंत्रणाक प्रधान कारण सेहो। स्वभावत: दोषी सन सजग-सचेत कवि एहि सँ अपना के फराक केना राखि सकैत छथि। एकटा बानगी—

पाँच बरख पर आबय बाढ़ि, कहियो बिचहि दैछ बहाड़ि-
बुरिबक जनता धनि सरकार, खोलू धरिया उतरू पार।

दोषीक प्रतिभा बहुआयामी अछि। ओ विशुद्ध कविताक संगहि गीत, गजल, दोहा, कुंडलिया सेहो लिखैत छथि आ से नीके लिखैत छथि। परंच एतौ ओ अपन परिचिति धूमिल नहि होमय दैत छथि—

हमरा नहि हेरू।
लोकक एहि महाबन मे, आकुल छी, औनायल,
चौंकि चौंकि जाइछ मोन, थाकल छी, भोतिआयल,
मिथ्या अपनत्त्वकेर माला नहि फेरू
हमरा नहि हेरू। (गीत)

मुक्त खोंता मे चिड़ैयक मोन अछि आदंक मे,
रक्षकक घातक नियति, दिन राति हम देखैत छी
मन अकानय नहि अकानय ई विवेकक बात थिक
अहींक मोनक दुष्टकेर नाङ्ट कथा लिखैत छी
(गजल)

एहन स्पष्टवादिता, रक्षकक घातक नियति पर सतत नजरि रखनिहार आ दुष्टक नाङ्ट कथा कहनिहार वर्तमान मे दोषी नहि त आर की (के) भ सकैत छथि।

भोजक समय तुलायल केरा धुकै छी हम,
अभरल ने कोनो चोर अछाहे भुकै छी हम।
(गजल)

मैथिल चरित्रक केहन विलक्षण चित्र एहिठाम प्रस्तुत कएल गेल अछि।

आइ मैथिलीक बहुतो कवि/लेखक एहन छथि जे मैथिली मे लिखि मात्र अपना कैं कृत-कृत्य बुझैत छथि। मैथिलीक अधिकारक हनन, ओकर लांक्षना अवमानना हिनका लोकनिक लेल कोनो महत्व नहि रखैत अछि। मैथिलीक संवैधानिक मान्यता हिनका लोकनिक लेल कोनो समस्या नहि। कवि उपेन्द्र दोषी एहि सँ फराक अपन मातृभाषा मैथिलीक उपेक्षा सँ व्यथित छथि, ओकर अस्मिताक रक्षार्थ उद्विग्न छथि। अपन भाषा-भूमिक प्रति अगाध प्रेम, अपन गौरवशाली अतीतक स्मृति परिप्रेक्ष्य मे वर्तमान मिथिला-मैथिलीक दयनीय दशा हुनका मर्माहत करैछ ओ लिखैत छथि—

वरू रहओ पुष्पराजा गुलाब / पंकज रहलै पाँके तें की ? / बुझलनि भारत केर शान्तिदूत / मैथिल की थिक ? मिथिला की थिक ? / भऽ गेल लीन ओ काल/ कालकेर काया मे/कहबै ककरा, पतिआओत के ? नहि ओ नगरी, नहि ठाम आइ।/

नहि विद्यापति जे बेधि सकथि/दिल्ली पति केर पाथर-हिय कें, गीतक सर सँ/आ नहि भारत-ऋतुराज/जाहि मे मिथिला केर कोकिल कूजय।

(बस एक बेरि.........)

माओ-त्से-तुंग एक ठाम कहैत छथि जे उएह व्यक्ति महान क्रान्तिकारी होइत अछि जे अपन लोक, अपन समाज सँ बड़ बेसी प्रेम करैत अछि। माओक ई महान क्रान्तिकारी केबल मात्र बन्दूकधारी नहि, कलमधारी सेहो थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे भाषा-भूमिक प्रति प्रेमक इएह प्रगाढता दोषी सन कवि सँ क्रान्तिगीत लिखबा लैत अछि—

वाणीकेर कल्याण हेतु वीणापाणिक कर फड़कए।
मिथिला-पूतक अंग-अंग सँ क्रान्तिक ज्वाला भड़कए।।
क्यो छै लऽ तरुआरि हाथ, छै क्यो कलमे लऽ राजी।
हंस वाहिनी श्वेत पुष्प दइ, चंडी रक्तक साजी।।
रसना आब न रहती शापित, भाग-भाग दुर्वासा।
आइ अयाचीक भूमि मंगैये, अपन माटिकेर भाषा।।

(आइ अयाचीक भूमि.........)

आजुक कविता वा समकालीन कविताक प्रौढ़ प्रतिष्ठित कवि उपेन्द्र दोषीक पोथी एते विलम्ब सँ आएब निर्विवाद हमरा लोकनिक दयनीय दशाक व्यथा-कथा कहैत अछि। मैथिली-प्रकाशन, ओकर वितरण-विक्रीक स्थिति ककरो सँ नुकाएल नहि। कवि-लेखक अपन पेट काटि पोथी छपै छथि आ मंगनी मे बिलहि दैत छथि। एहना स्थिति मे एक-दू-तीन धरि जाइत-जाइत सब थस ल लैत छथि। जे एकाध संस्था पोथी छपितो अछि से पोथीक विषय-वस्तु, ओकर स्तर नहि देखि लेखकक पदमर्यादा, ओकर जाति-गोत्र के प्रधानता दैछ, परिणामत: पोथीक नामपर अलै-बलै छापि ढेरि लगओने जाइछ। एहितरहक प्रकाशन सँ ने मात्र पाठक हड़कैछ, मैथिली-साहित्य सेहो अमर्यादित होइछ। एहन स्थिति मे विलम्बे सही दोषीक ई पोथी मैथिली प्रेमी साहित्यानुरागी लोकनिक लेल एक अनुपम उपहार अछि। कागज, छपाइ, गेटअप, बाइन्डिग सब तरहे विलक्षण। आशा अछि मैथिली प्रेमी लोकनि पोथी कीनि समादृत करताह आ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि मे सहभागी होएताह।

(१९९८)

